TO THE READER

KINDLY use this book very carefully. If the book is disfigured, marked or written on while in your possession the book will have to be replaced by a new copy or paid for. In case the book be a volume of a set of which single volume is not available the price of the whole set will be realised.

Sri Pratap College

SRINAGAR
LIBRARY

Class No 991.433.

Book No. R S

सुहाग के फूल

20182
Library Sri Pratap College,
Srinagar.

रामलाल खामोश

एवर-ग्रीन प्रकाशन, नई दिल्ली-18

प्रकाशक :
एवर-ग्रीन प्रकाशन,
11/29-ए, तिलक नगर,
नई दिल्ली-18

...ary Sri Pratap College
Srinagar
25162
...ion Number..........
Class No..........
891·433
R S

मूल्य : पाँच रुपये

मुद्रक :
श्री कम्पोजिंग केन्द्र द्वारा राजकमल प्रेस, दिल्ली-6 में मुद्रित।

— युग युग से नारी-सौन्दर्य आकर्षण का स्रोत है। उसने सत्परिणामों की अपेक्षा दुःखद घटनाओं को अधिक जन्म दिया है-इसका कारण मानव स्वभाव की आसुरी वृत्तियां हैं जिनसे सौन्दर्य वरदान न होकर अभिशाप में बदल जाता है। नारी सौन्दर्य स्तुत्य न हो कर पुरुष की वासनापूर्ति का साधन मात्र रह जाता है अत्याचारों की भट्टी में जलाकर उसकी कंचन सी काया को कंकाल में बदल दिया जाता है। आसुरी व्यक्तियों के अलावा कभी ये अत्याचार सामाजिक प्रतिष्ठा, कर्म और आचार के नाम पर होते हैं।

इस लघु-उपन्यास में नारी जीवन के इसी निरीह पक्ष को चित्रित किया गया है। घटनाओं के आरोह-अवरोह के साथ-साथ कहीं नारी के त्याग, मर्यादा, उत्साह और शौर्य के दर्शन होते हैं तो कहीं मानवीय कुत्साओं और निन्दनीय कार्यों को चित्रित किया गया है।

रामलाल खामोश द्वारा लिखित उपन्यास

१. दूर के राही
२. मंजिल कहाँ ?
३. कजरे की धार
४. अर्थी आने तक
५. सुहाग के फूल

A very Intresting book. You must
read it patiently.

Ks

मैं कानून और इन्साफ की मजबूरियों को अच्छी तरह समझती हूँ—दुनिया की किसी भी अदालत में कोई ऐसा कानून नहीं है जो किसी मासूम लड़की के पवित्र दामन पर नापाक दाग लगाने वाले को मौत की सजा दे सके—

सारी अदालत में घोर सन्नाटा छा गया हर कोई अपनी दिल की धड़कनें सुन रहा था और कटहरे में युवा बाला जज की ओर देखते हुए बोलती रही—

वह इसलिए कि असमत औरत की लुटती है और कानून बनाने वाले मर्द होते हैं, अगर कानून बनाने वाली औरतें होती तो आज कानून कुछ और होता—असमत के कातिलों के लिए किसी औरत को कानून बनाने दीजिए और वह समय दूर नहीं जब निकट भविष्य में ऐसे कानून औरतें ही बनायेंगी तब देखिए कि ऐसे अपराधियों के लिए वे कैसे कानून बनाती हैं—

दम भर के लिए रुक उसने श्रोताओं में आसासिंह और अलीसाबरी को देखना चाहा लेकिन वह सफल न हो सकी—

उसे चुप देख कर सरकारी वकील बोल पड़ा—

"लेकिन मुलजिमा को कानून को हाथ में लेने की जरूरत नहीं थी। यह सरासर जुर्म है।"

इस पर अदालत में सब लोग जोर से हंस पड़े स्वयं जज के होठों पर भी मुस्कराहट खेल गयी। और ज्यूरी के सदस्य भी अपनी मुस्कुराहट न छिपा सके। क्योंकि सरकारी वकील का प्रश्न निरर्थक था जब मुलजिमा स्वीकार कर रही थी कि उसने कत्ल किया है तो

ऐसा प्रश्न पूछना बिल्कुल निराधार था। लेकिन सरकारी वकील का भी क्या कसूर था वह मुलजिमा का पहला बयान सुनकर ही चित्रलिखित सा उसे देखता रह गया। अभी तक लोगों का हँसना बन्द नहीं हुआ था इस पर जज ने कई बार मेज ठोका।

आर्डर—आर्डर।

शोर एकदम थम गया।

मुलजिमा ने कटहरे को जोर से झकझोड़ डाला और सरकारी वकील पर सरसरी दृष्टि फिसला कर ज्यूरी के सदस्यों को सम्बोधित किया।

जैन्टिलमैन आफ दी ज्यूरी—

क्या आप बता सकते हैं कि कानून और इन्साफ के पास कोई ऐसा कानून भी है जो ऐसे अपराधियों को बीच बाजार में मौत की सजा दे सके ताकि भविष्य में मासूम लड़कियों की पवित्रता की धज्जियाँ इस प्रकार उड़ानी बन्द हो सकें। लेकिन अफसोस है कि आपका न्याय ऐसे अपराधियों को मौत की सजा नहीं देता बल्कि कुछ दिनों के लिए उसे जेल के अन्दर बन्द कर देता है और यह सजा इतने बड़े संगीन जुर्म के लिए कुछ भी नहीं—नहीं के बराबर है।

और यह मुझे भी अच्छी तरह से मालूम था यदि मैं भी यह मुकदमा किसी भी बड़ी-से-बड़ी अदालत में पेश करती और अपराधी का अपराध मानते हुए भी उसे ज्यादा से ज्यादा चन्द दिनों की सजा दी जाती और बस—मेरी नजरों में ऐसे अपराधी के लिए यह सजा कोई महत्व नहीं रखती—

बोलते समय भी उसकी निगाहें आसासिंह और अलीमुहम्मद साबरी को ढूंढ़ रही थीं और जब उसकी नजर आसासिंह पर पड़ी,

जिसके गालों के नीचे गर्दन तक घनी काली दाढ़ी उगी हुई थी वह भी उस युवा बाला के बयान को सुन रहा था और उसकी छोटी-छोटी आँखों से आँसू बह-बह कर उसकी दाढ़ी में समा रहे थे। अनायास ही जब दोनों की नजरें टकराईं और आसासिंह के कोमल दाँत उसकी घनी दाढ़ी में चमक उठे।

मुलजिमा तड़प कर बोली—सरकारी वकील की ओर देख कर। 'कन्या के पवित्र आंचल पर लगे दाग की कीमत जिन्दगी से कम नहीं फिर उसकी इतनी मामूली सजा क्यों—किस लिए ?

और फिर वह जरा सी मुस्कुराई।

वह इसलिए कि कानून बनाने वाले सब मर्द होते हैं।

वह चमक कर बोली—

होना तो यह चाहिए कि ऐसे अपराधी के नंगे शरीर पर खुले आम जनता के सामने हन्टरों की वर्षा उस समय तक की जानी चाहिए जब तक वह तड़प-तड़प कर और चीख-चीख कर दम न तोड़ दे और फिर उसकी चकनाचूर हड्डियों को किसी बड़े चौराहे पर गढ़वा दिया जाए।

वह तड़प कर बोली—

इसलिए मैंने उसकी हत्या की है। मैं जानती थी कि कानून उसको यह सजा, जो मैंने दी है, नहीं दे सकता था।

अदालत उसके बयान को ध्यानपूर्वक सुन रही थी। जज वकील, श्रोतागण और विशेष कर ज्यूरी के सदस्य उसे बड़े गौर से सुन और देख रहे थे। उनको अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई मुलजिमा ऐसा ब्यान भी दे सकती है।

युवा बाला के माथे पर पसीने की नन्ही-नन्ही बून्दें उभरने लगीं और उसके हाथ में पड़ी हथकड़ियां झनझना उठीं। उसकी

पतली नाक और जोर-जोर से फड़कने लगी। क्षण भर के लिए उसकी दृष्टि एक पुरुष के ऐनक के साफ सुथरे शीशों पर पड़ी जहाँ मान मर्यादा धुंधले आंसुओं के रूप में कांप रही थी वह अधिक देर तक उससे नजर न मिला सकी और वह जोर से चिल्ला पड़ी जैसे लावा उबल पड़ा हो—

मैं फिर यह कहना चाहती हूँ कि मैंने उसे जो सजा दी है वह उसके अपराध को देखते हुए बहुत कम है उसके अपराधों के लिए उसे मौत की सजा ही काफी नहीं थी। लेकिन वक्त बहुत थोड़ा था इसलिए मुझे ऐसा करना पड़ा। और फिर मैंने किया ही क्या है। बस सिर्फ उसे जान से ही तो मारा है, उसे कोई कष्ट नहीं दिया।

जज की आवाज न्यालय में गूंजी।

"आपको अपनी सफाई में जो कुछ कहना है बस केवल वही कहिए।"

जज के इस प्रश्न पर उसकी कजरारी आँखों में रोष और होटों पर विषैली मुस्कान तैर गयी। उसने सिर को एक हल्का सा झटका दिया।

"मैंने यह सब कुछ अपनी सफाई के लिए नहीं कहा जज साहिब बल्कि अन्धे कानून को सही रास्ता दिखाने की कोशिश की है।"

वह घृणा से मुंह बना कर बोली।

मुझे फैसला सुनने की भी आवश्यकता नहीं है— फैसला क्या होगा यह मुझे अच्छी तरह से मालूम है।

उसकी बिलोरी आँखों से एक गरम आँसू ढुलक कर उसके नरम गोल गुलाबी गालों पर अंगड़ाई लेने लगा और अनायास ही

उसके प्राकृतिक लाल होंठ तितली के पंखों की भांति खुल गए।

मैं आपके हर फैसले का स्वागत करती हूँ।

मैं आपके हर फैसले का स्वागत करती हूँ।

सुमन ने दृढ़ शब्दों में कहा और अपने पति इन्दर को कन-खियों से देखने लगी। लेडी डाक्टर प्रमिला ने दोनों को तीक्ष्ण दृष्टि से देखा और फिर सुमन को अन्दर कमरे में ले गयी।

"यदि मैं गलती पर नहीं हूँ तुम शायद सेठ बिहारी लाल की सुपुत्री हो?"

"जी हाँ, बिल्कुल ठीक है। आप तो मेरे पिताजी को भी पहचानते हैं।"

"जी हाँ, और मेरी आपसे लगभग पाँच साल पहले मुलाकात हो चुकी है। जब तुम्हारा एक्सीडेन्ट हुआ था उस समय मैंने तुम्हारा इलाज किया था।

लेडी डाक्टर प्रमिला कुछ ही मिनटों के बाद कमरे से बाहर निकल आई और गंभीरतापूर्वक इन्दर की ओर देखा और बोलीं—

"तुम्हारे भाग्य में तो सन्तान सुख है क्योंकि तुम में कोई नुक्स नहीं है किन्तु इस देवी की गोद सदा खाली रहेगी।" कह कर लेडी डाक्टर ने सुमन की ओर देखा।

"यह कैसे हो सकता है"—इन्दर झुंझला गया। "हम दोनों तो एक हैं।" इन्दर ने सुमन की ओर देखा जो खड़ी थी।

"लेकिन भाग्य दोनों का अलग-अलग है। सोचने को इन्सान लाख चाहता है लेकिन होता वही है जो भगवान चाहता है।

विधाता किसी का भाग्य आंसुओं में डूबी पत्थर की कलम से लिख देता है जो अमिट होता है। उसको कोई नहीं मिटा सकता है। और ठीक यही हाल सुमन का भी है। आप लोग चाहे जितने भी बड़े-बड़े डाक्टरों के पास जायें लेकिन सुमन के औलाद नहीं हो सकती है। और तुम्हारा शरीर स्वस्थ है और तुम्हारे रक्त के कीटाणुओं में सन्तान पैदा करने की क्षमता है।"

सुमन और इन्दर दोनों वहाँ से चुपचाप उठ खड़े हुए। दोनों अपने-अपने विचारों में डूबे डाक्टर के कहे हुए शब्द अपने मन में दोहरा रहे थे। और इन्दर सोचने लगा कि उसके भाग्य में सन्तान है। उसके रक्त में औलाद पैदा करने के कीटाणु हैं लेकिन सुमन की गोद सदा खाली रहेगी।

इन्दर ने देखा कि सुमन बहुत उदास है। शायद वह डाक्टर की बात सुन कर आश्चर्य में डूबी जा रही थी। इन्दर विवश हो गया। आखिर मौन तोड़ते हुए इन्दर बोला—"प्रमिला डाक्टर की बात तुम सत्य मान गयीं ?

"जी, इसमें न मानने की क्या बात है ?"

"तुम भी बस भोली हो"—इन्दर ने उसके कन्धे पर हाथ रख दिया—"भला यह कैसे हो सकता है।"

"यह हो सकता है"—सुमन ने मुस्करा कर कहा—लेकिन फीकी मुस्कान, "क्यों नहीं हो सकता है। दुनिया में अनहोनी बातें भी तो होती हैं। आज के बाद मैं आप से प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे किसी और डाक्टर के पास न ले जायें।"

लेकिन लगभग पांचवां साल विवाह को होने वाला है। इन्दर मुस्करा पड़ा। "प्रायः ऐसा भी देखा गया है कि लोगों को कई-कई सालों तक सन्तान नहीं होती लेकिन आखिर हो ही जाती

है । डाक्टरों की दवाई खाकर, हकीमों के नुस्खे चाट कर, और फिर देवी-देवताओं की मनोतियाँ मान कर ईश्वर सब की कामना पूरी करता है और मुझे पूर्ण आशा कि ऊपर वाला हमारी बात भी सुनेगा। उसके घर में देर भले हो लेकिन अन्धेर नहीं। वह अवश्य हमारी मनोकामना पूरी करेगा ।"

"तो जनाब के मन में अभी से मनोकामना बल खाने लगी है भला मैं भी तो जानूं कि वह कौन सी मनोकामना है ?" जमीन पर दृष्टि गाढ़ सुमन ने कहा ।

"बस यही सन्तान की मनोकामना है कि कोई नन्हा सा, लल्ला या लल्ली हमारे आंगन में भी खेलेगी ?"

"आप सन्तान के लिए दूसरा विवाह कर सकते हैं" काँपते स्वर में सुमन ने कहा ।

"सुमन !" इन्दर ने उसका हाथ पकड़ लिया—"कैसी बातें करती हो सुमी ··तुम्हारे होते हुए मैं यह पाप क्यों करने लगा ?"

"अपने कुल का दीपक रोशन करने के लिए आप सब कुछ कर सकते हैं और उसके लिए सबसे पहले तुम्हारा विवाह आता है आप बड़ी खुशी से दूसरा विवाह कर सकते हैं मैं आपको आज्ञा देती हूँ · और मुझे विश्वास है कि तुम्हें ऐसा करना पड़ेगा अपने कुल का दीपक रोशन करने के लिए ।"

"तुम्हारी कुवांरी तमन्नाओं के दीप बुझा कर मैं अपने कुल का दीप जलाऊँ · सुमन यह कभी नहीं हो सकता ।" और फिर इन्दर ने सुमन की कोमल उंगलियों को अपने हाथ में दबा लिया··· "मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि तुम्हारे होते हुए मैं दूसरा विवाह कभी नहीं करूंगा ।"

"और मेरी मौत के बाद ।"

"सुमन।" इन्दर ऊँचे स्वर में चिल्लाया। "यह क्या कह रही हो ? ऐसे बचपने की बातें पहले तुम ने कभी नहीं कीं।"

सुमन चुप रही और नीर भरे नेत्रों को छिपाने के लिए वह दूसरी ओर देखने लगी।

"सुमन !" चलते-चलते इन्दर वहीं रुक गया…थरथराते स्वर में इन्दर बोला—उसके माथे पर पसीने की बूंदे फूट पड़ीं। वह कांपते और टूटे शब्दों में फिर कहने लगा—"यह असम्भव है। यह नहीं—बिल्कुल नहीं हो सकता है, और न होगा।"

सुमन ने इन्दर की ओर देखा तो उसने पाया कि उसके पति के मुख पर गम्भीर निश्चय झलक रहा था उन चट्टानों की भाँति जो तूफानों के लाख थपेड़े खाने पर स्थिर रहती है। इसी गम्भीर निश्चय से प्रभावित होकर सुमन ने पूछा।

"लेकिन आप कब तक आजीवन सन्तान का मुख देखने के लिये मरुस्थल के राही की भाँति भटकते फिरते रहेंगे ?"

"वाद-विवाद करने से कोई लाभ नहीं" कह कर इन्दर चुप हो गया और उसने सड़क पर गुजरती हुई टैक्सी की ओर सकेत किया। वैसे तो वह घूमने के मूड में था लेकिन सुमन की उदासी देख कर उसका जी भी मटमैला हो गया और वह जल्दी ही घर जाना चाहता था।

घर पहुँचते ही सुमन ने मेज पर दवा की जो इक्की-दुक्की शीशियाँ थीं, सजा कर रख दीं और प्रकृति के इस अनोखे खेल पर मुस्कराने लगी। दुनिया की किसी भी चीज का तो अभाव नहीं था उसके लिये। उसके पिता की हजारों रुपये मासिक आमदनी थी और विवाह के वक्त भी अच्छा खासा दहेज और नकदी मिली थी। उसके पति की सैकड़ों रुपयों की मासिक आय थी। लेकिन हाँ, एक चीज जो

भगवान उसे नहीं देना चाहता था वह थी सन्तान। संतान का ध्यान आते ही उसकी आखें भर आईं। और फिर उसको लेडी डाक्टर की बात याद आ गई कि उसके जिन्दगी भर संतान नहीं हो सकती—और अनजाने में ही उसको याद आ गया कि कपिल उसका बाल सखा था उसके पिता लाला बिहारी लाल, कपिल के पिता जी को कह रहे थे, "कि चाहे तुम मुझे दोस्त समझो या दुश्मन मैं किसी भी हालत में सुमन का विवाह कपिल से नहीं कर सकता।"

और फिर सुमन सोचने लगी कि मेरे पिता जी को मालूम था कि यदि सुमन का विवाह कपिल से कर दिया गया और सुमन को संतान नहीं होगी तो सौदा बहुत मंहगा पड़ेगा और सुमन को भी तकलीफ उठानी पड़ेगी और हो सकता है कि कपिल सुमन को छोड़ भी देता।

सुमन ने अंगड़ाई ली—कि अब बात समझ में आई कि मेरे पिता जी क्यों कपिल के पिता को कह रहे थे कि सुमन का विवाह कपिल से नहीं हो सकता।

यदि कपिल से विवाह भी न हो सका और अब जिन्दगी भर संतान भी नहीं होगी तो यह जिन्दगी बेकार है—पलंग से उठ कर उसने एक शीशी को जोर से जमीन पर पटक दिया। बोतल टूटने की आवाज आई और फिर शान्ति छा गई।

साथ के कमरे में इन्दर और कपिल ने जब यह आवाज सुनी तो वे भागे-भागे आ गए। इन्दर ने गौर से फर्श पर कांच के बिखरे हुये टुकड़ों को देखा। यह वही दवाई की बोतल थी जो इन्दर एक हकीम से कुछ ही दिन हुए, लाया था। उसने अनुभव किया यह टुकड़े नहीं—यह तो कुछ और चीज है जो उसके दाम्पत्य जीवन का

मुँह चिड़ा रहे हैं। सुमन पलंग पर औंधी लेटी हुई थी। इन्दर बाहर चला गया लेकिन कपिल सुमन के पास पलंग पर बैठ गया और उसे पुकारने लगा "सुमन।"

"जी।"

"यह क्या ? क्या तुम्हारी जिन्दगी ऐसे ही कटेगी इससे तो अच्छा है कि······।"

"कि आत्म हत्या कर लूं।"

"नहीं मेरा यह मतलब नहीं।" कपिल ने दृढता से कहा "सुमन मैं तुम्हारी जिन्दगी चाहता हूँ मौत नहीं और उपाय मेरी समझ में आया है, यदि बुरा न मानो तो कह दूँ ?"

सुमन और कपिल का लड़कपन एक ही बगीचे में खेलते-खेलते जवानी में बदला था। एक ही बगीचे में वह सुमन के मिट्टी के घरौंदे उजाड़ दिया करता था और उसकी चोटी पकड़ कर खींच लिया करता था दोनों में झगड़ा होता फिर दूसरे दिन ही मेल हो जाता। लेकिन जब यौवन ने अंगड़ाई ली तब दोनों अलग-अलग पथ के राही थे।

"तुम को यह कैसे डर हो गया कि मैं तुम्हारी बात का बुरा मान सकती हूँ ?"

"बात ही कुछ टेढ़ी सी है ?"

"कोई बात नहीं कह डालो।"

"या तो दो चार साल और प्रतीक्षा कर लो शायद कोई बच्चा हो जाये।"

"मुझे संतान नहीं हो सकती कपिल—कोई दूसरा उपाय बताइएगा ?"

"मेरी पत्नी को जो पहला बच्चा होगा उससे मैं तेरी गोद हरी

कर दूँगा—मैं वायदा करता हूँ तुम से।" कपिल ने दृढ़ता से कहा।

"मुझे तुम पर केवल तुम पर पूरा विश्वास है कि तुम मेरे लिये बड़ी से बड़ी कुरबानी भी कर सकते हो लेकिन यह तो सोचो कि जो बच्चा तुम्हारी पत्नी का होगा उसके ऊपर अकेले तुम्हारा अधिकार नहीं है, उस पर तुम्हारी पत्नी का भी अधिकार होगा और मैं यह खूब अच्छी तरह से समझती हूँ, जानती हूँ कि तुम्हारी पत्नी इतना बड़ा बलिदान कभी नहीं कर सकती—और मुझे उससे कोई शिकवा शिकायत भी नहीं है कि वह मेरे लिये ऐसा क्यों नहीं कर सकती।"

"मेरी पत्नी ऐसा करेगी और अवश्य करेगी—मेरे कहने पर करेगी—मेरी खुशी के लिये करेगी—कपिल दृढ़ता से कहता गया—अगर वह ऐसा नहीं करेगी तो मेरे लिये उससे बुरा कोई नहीं होगा—" कह कर कपिल उठ गया और कहने लगा कि अभी दो चार घण्टे बाद मैं तुम्हें बता दूँगा कि वह ऐसा कर सकती है कि नहीं ?

"सुमन ने उसको हाथ से पकड़ लिया—तुम मेरी खातिर अपने दाम्पत्य जीवन में क्यों दरार डालना चाहते हो। कोई और उपाय सोच लो अगर तुम्हारी बुद्धि काम करे तो ?"

"अपनी पत्नी से पूछ कर ही कोई और नया और ठोस उपाय बताऊँगा—यह मुझसे देखा नहीं जाता कि तुम इस प्रकार जीवन भर रोती रहो—कपिल कहता गया हम तुम्हारे लिए सब कुछ करेंगे जो कुछ भी हम से बन सका।" कह कर कपिल बाहर चला गया और दो-चार मिनट इन्दर के पास बैठ कर घर चला गया।

"मंजू तुम अभी तक तैयार नहीं हुई—खड़े-खड़े ही कपिल ने अपनी पत्नी को कहा जो पलंग पर लेटी थी।

"मां जी ने मना कर दिया है ?"

"क्यों ? क्या बात है ?"

"कहती हैं ऐसी हालत में ज्यादा घूमना फिरना ठीक नहीं।" विनम्र किन्तु लज्जा भरे शब्दों में मंजू ने कहा।

"ऐसी हालत से तुम्हारा क्या अभिप्राय है ?"

"कैसे समझाऊँ—अनाड़ी बालमा को।" मंजू पलंग से उठ खड़ी हुई और कपिल को गल बहियाँ डाल कर कहने लगी "जैसे तुम्हें कुछ पता ही नहीं।"

"खैर वह तो ठीक है लेकिन अभी तो ढाई महीने ही मुश्किल से हुए होंगे और तुमने घूमना-फिरना बन्द कर दिया।"

इतने में कपिल के मां की खांसने की आवाज सुनाई दी और मंजू ने कपिल के गले से बाहें हटा लीं। मां ने कहा –"मैंने ठीक ही मना किया है बहू को घूमने फिरने से—यह अवस्था तो इतनी नाजुक होती है यदि कहीं गलती से भी पांव फिसल जाए तो बहुत कुछ नुकसान हो सकता है।"

"अच्छा माँ जी आज तो जाने दो फिर कभी नहीं जायेगी।" कह कर कपिल ने मजू की ओर देखा।

कपिल की माँ ने स्वीकृति में सिर हिला दिया और मंजू मुस्करा कर तैयार होने लगी। जब वे दोनों घर से निकले तो मंजू

ने देखा कि आज उसके पतिदेव कुछ खोये-खोये से हैं। मंजू कई प्रकार की बातों से उनका मनोरंजन करना चाहती थी लेकिन कपिल हर बात का उत्तर "हूँ"—"हां" में ही देता गया। रास्ते में एक बाग आ गया और मंजू ने वहाँ सुस्ताने की इच्छा प्रकट की। और ज्योंही वे दोनों हरी-हरी घास पर बैठे तो मंजू ने कपिल का हाथ अपने हाथ में लिया और पूछा "आज क्या बात है खोये-खोये से दीख रहे हो ?"

"हां मैं तो भूल ही गया था—अच्छा हुआ कि तुम ने याद दिला दिया—बात दरअसल यूं है कि इस खोये-खोयेपन को केवल तुम ही दूर कर सकती हो ?

"आज्ञा कीजिएगा।"

"सुमन को तो तुम जानती ही हो।"

मंजू ने बात बीच में काट कर कहा--"हाँ-हाँ क्या हुआ उसे ?"

"पहले बात सुन लो पूरी तरह से फिर उत्तर देना।" कपिल ने कहना शुरू किया—"आज उसको डाक्टर ने जवाब दे दिया है कि उसके जिन्दगी भर बच्चा नहीं हो सकता"—कपिल कहता ही गया और मंजू के मुख पर बदलती रेखाओं को भी पढ़ता रहा—"तो मैंने उनको कह दिया है कि मंजू को जो भी बच्चा होगा उससे तुम्हारी गोद हरी कर दूंगा।"

मंजू ने कपिल के मुंह पर हाथ रख दिया—"बस—बस कीजिएगा। इससे आगे कुछ न बोलो—तुम्हें पता नहीं कि मुझे जो बच्चा होगा वह मेरा नहीं बल्कि मां का है—जानते हो वह कितनी प्रसन्न हुई थीं बल्कि यों कहिएगा कि खुशी से कुप्पा हो गई थी जब उसको पता लगा कि मुझे गर्भ ठहर गया है—"

"तो इसका मतलब है कि तुम्हारा साफ इन्कार है।"

"आप इसको इन्कार क्यों कहते हैं मां जी से पूछ लो जैसे वह कहेंगी मुझे कोई आपत्ति नहीं—क्योंकि आपकी खुशी के लिए मैं सब कुछ कर सकती हूँ।"

काम न बनता देखकर कपिल को बहुत निराशा हुई क्योंकि उसे पता था कि यदि वह इस कार्य के लिए मां से कुछ कहेगा तो उत्तर में उलटा-सीधा सुनने के सिवाये कुछ हाथ नहीं लगने का। उसने दोनों हथेलियों को आपस में रगड़ा और सोचने लगा कि क्यों न सुमन को कह दे कि वह इन्दर को दूसरा विवाह करने दे और उसी लड़की से जिसको इन्दर प्रातःकाल देखा करता है बस स्टैण्ड पर।

"क्या सोचा जा रहा है"—मंजू ने कपिल के दोनों हाथों को खोल कर अपना हाथ उसके हाथ में दिया।

"कुछ भी तो नहीं"—धीमे स्वर में कपिल ने कहा और कपिल ने मंजू को उठने के लिए कहा। आपस में कई और बातें होती रहीं और जब वे दोनों घर पहुँचे तो कपिल फिर घर से सुमन के घर के लिए चल पड़ा। जब वह वहां पहुँचा तो इन्दर घर पर नहीं था लेकिन सुमन उसी पलंग पर लेटी हुई एक पत्रिका देख रही थी। अन्दर जा कर कपिल उस के पास बैठ गया और सुमन समझ गई कि मंजू ने इंकार कर दिया। कपिल को मुरझाया देखकर सुमन ने कहा—"तुम इतना क्यों फिक्र करते हो मेरी—आज के बाद तुम मेरे लिए परेशान न हो मैं स्वयं ही कोई न कोई उपाय ढूंढ लूंगी ?"

"एक उपाय तो मेरे दिमाग में भी कई दिनों से टकरा रहा है यदि आज्ञा हो तो कह डालूं ?"

"फिर वही डर वाली बात ?" कहकर सुमन मुस्करा पड़ी—"मिस्टर कपिल तुम जो चाहो कह सकते हो। तुम्हारी किसी भी बात का बुरा नहीं माना जाएगा। हां, तो कहो वह कौन सा ऐसा उपाय है जो कई दिनों से तुम्हारे दिमाग में टकरा रहा है ?"

"इन्दर को दूसरा विवाह करने की आज्ञा दे दो"—कह कर कपिल सुमन के मुख पर बदलती रेखाओं को देखता रहा कि उस पर क्या असर पड़ा लेकिन सुमन पर इस बात को कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। उसी शांत स्वर में सुमन ने कहा—"मैं भी कई दिनों से यही सोच रही थी लेकिन समस्या लड़की की है कोई ऐसी सुशील लड़की हो जो इन्दर को भी प्रसन्न रख सके और उसकी सन्तान पर मेरा भी पूरा अधिकार हो।"

"इसका इन्तजाम मैंने कर लिया है"—सुमन की बात सुन कर कपिल का उत्साह बढ़ गया था—"लेकिन आगे बात चलाना तुम्हारा काम है।"

"कौन है वह सौभाग्यशालिनी ?"

फिर कपिल ने सुमन को बतलाना शुरू किया कि एक दिन वह अचानक राजोरी गार्डन में किसी के यहाँ सवेरे-सवेरे मिलने आया कि इन्दर देव जी बस स्टैण्ड पर खड़े किसी एक लडकी को बड़ी तल्लीनता से देख रहे थे। मैं ने अन्दाजा लगा लिया कि इंदर उस लड़की को अवश्य चाहता होगा। और अगर तुम भी यह तमाशा यानी कि उस भाग्यशालिनी को देखना चाहती हो तो कल सवेरे बस स्टैण्ड पर आ जाना।

"तभी तो मैं भी कई दिनों से सोच रही थी कि इन्दर सवेरे की चाय पीने के बाद फौरन कहां चला जाता है ?" सुमन मुस्करा

पड़ी और फिर वे दोनों आपस में बैठे कल सवेरे का प्रोग्राम बनाने लगे।

रात भर स्थिर रहने के बाद हवा की गति में तीव्रता उत्पन्न हो गई थी। पूर्व में काले बादलों को चीरती हुई सूर्य की किरणें अपने पंख पसार रही थीं। ऐसा प्रतीत होने लगा-मानो सारा सुभाष नगर सोना बरसाती किरणों में स्नान कर रहा हो।

ऐसे सुरम्य वातावरण में इन्दर चहलकदमी करता हुआ सड़क के किनारे-किनारे बढ़ रहा था उसके चेहरे पर ऐसी ताजगी फैली हुई थी मानो ओस में नहाया हुआ फूल हो।

चलते-चलते उसने एक नजर कलाई पर बंधी घड़ी पर फेंकी सात बजने वाले थे इसलिए उसकी चाल में तीव्रता आना स्वभाविक था। ज्योंही वह बस स्टैंड पर पहुँचा एक युवती बस की प्रतीक्षा में खड़ी थी। इन्दु हायर सेकण्डरी की स्टूडेंट।

इन्दु की अंग-अंग में चंचलता के साथ-साथ यौवन का उभार था। गौर वर्ण, उन्नत वक्ष, पतली कमर, लम्बी ग्रीवा, काले और लम्बे केश, जो अनायास ही प्रत्येक युवक को निहारने का निमंत्रण दे बैठते थे।

इन्दर ने एक टेढ़ी दृष्टि से इन्दु की ओर देखा तो फिर देखता ही रह गया। इन्दु ने बाल इस स्टाइल से बना रखे थे कि उसमें मांग का नाम तक भी नहीं था लेकिन एक हल्की लट उसके माथे पर प्रातः समीर में लहरा रही थी।

अभी इन्दर की दृष्टि वहां से हट भी नहीं पाई थी कि एक मोटर साइकल झटके के साथ आकर रुक गया। और वह था कपिल देव—न केवल इन्दर का मित्र बल्कि सुमन का भी बाल सखा।

"क्या निहारा जा रहा है इन्दर देव जी ?"

"ओह – आप।" इन्दर की चोरी पकड़ी गयी।

"कोई बात नहीं घबरा क्यों गए। सवेरे-सवेरे किस की कदम बोसी करने के लिए आ जाया करते हो ?"

इन्दर ने इन्दु की ओर आंखों ही आंखों में संकेत किया और बोल पड़ा :—

'नयनों में तेरी तस्वीर बसी, होंठों पर तेरे अफसाने,
हम दीप शिखा ले आ पहुँचे, तुम बन जाओ परवाने ॥

"अब समझा, साहब दीदार करने के लिए आते हैं। कहो तो इसी से तुम्हारी शादी करवा दूं ?"

"कैसी नीच बातें करते हो। भला मेरी सुमन किसी से कम है ?"

"ओह मैं तो भूल ही गया था कि तुम शादी शुद्धा हो।" कपिल मुस्कराया।

"फूल तो अच्छा है।" कपिल ने इन्दू की ओर संकेत किया।

"अजी तुम अच्छे की बात करते हो मेरा ख्याल है कि हाथ लगने से ही मैला हो जाएगा।"

"और गाल जैसे दूध का भरा हुआ कटोरा।"

"गलत कह दिया न कपिल तुम ने, कपोल ऐसे हैं जैसे दूध के भरे हुए कटोरे में केसर डाल दिया गया हो।

बस स्टेण्ड पर और भी कई सवारियां खड़ी थीं जिनमें एक औरत बुरका ओढ़े खड़ी थी।

कपिल ने जानबुझ कर उस बुरके वाली औरत की तरफ इशारा करके इन्दर से कहा "माल इस बुरके में अच्छा दिखाई देता है ?"

"फिर वहीं पर आ गए न। हम तो केवल एक नजर···" इन्दर ने इन्दु की ओर देखा लेकिन वह तो बेखबर खड़ी सहेलियां से बातें कर रही थी—"बस सिर्फ एक नजर इसको देखने के लिए यहां आते हैं।"

"यह तपस्या कब से शुरू की है ?"

"बस अचानक एक दिन चाय पीने के बाद इधर घूमने के लिए आया कि इस कमसिन पर नजर पड़ गई और तभी से लगभग प्रतिदिन यहां आ जाया करता हूँ।

"मैं पूछता हूँ कब से ?"

"पीछले बीस दिनों से।"

"चलो अब चलना है कि नहीं अब तो जी भर गया होगा ?" कपिल ने मोटर साइकल स्टार्ट की।

इन्दर ने एक बार फिर इन्दु की ओर देखा—"कितना खुशकिस्मत होगा वह इन्सान जिसकी यह बीबी बनेगी।" इन्दर ने यह शब्द कपिल के कानों में कहे लेकिन उस बुरके वाली औरत ने भी सुन ही लिए।

इन्दर कपिल के पीछे मोटरसाइकिल पर बैठ गया और कहता गया "जरा दीदार हो जाता है तो दिन अच्छा गुजर जाता है···" इतने में ही इन्दर की निगाह कृष्ण कुमार आर्य पर पड़ी जो बस स्टैंड पर बस की प्रतीक्षा में खड़ा था। इन्दर ने कपिल को रुकने के लिए कहा लेकिन मोटर साइकिल काफी दूर जा चुका था तो इन्दर उतरा और कृष्ण कुमार के पास आ गया और हाथ

मिलाने के बाद इन्दर ने पूछा··· कहो मित्र क्या हाल है ? कई दिनों के बाद दर्शन हुए हैं ? कोई नई ताजी ?

दो चार इधर-उधर की बातें करने के बाद इन्दर को राजेश की याद आ गई। क्योंकि राजेश ने कई लोगों को इन्दर की दुकान पर घड़ी खरीदने के लिए भेजा था। अक्सर यह हुआ करता था कि राजेश के दफ्तर में जिस किसी ने घड़ी लेनी होती तो राजेश उसको अपने सहपाठी मित्र इन्दर की दुकान पर भेज दिया करता था। परसों ही एक आदमी, जिसको राजेश ने इन्दर की दुकान पर भेजा था उससे पता चला था कि राजेश को चोट लगी है और वह छुट्टी पर है। चूंकि कृष्ण कुमार भी इन्दर का सहपाठी था और राजेश से मिलता जुलता रहता था तो इन्दर ने राजेश के विषय में पूछा— "क्यों भाई राजेश को चोट कैसे लगी ?"

"उसकी क्या बात पूछते हो ?" कृष्ण कुमार ने मुस्करा कर कहा। "उसकी एक आँख में बहुत जबरदस्त चोट लगी थी और अब शायद उस आँख से दीखता भी कम है।" बात को जारी रखते हुए कृष्ण कुमार ने कहा—"सुबह का भूला अगर शाम को घर वापिस आ जाये तो उसको भूला नहीं समझना चाहिए—सारी उम्र मेरा मतलब है कि जवानी तो उसने लड़कियों के चक्कर में गुजार दी। परसों ही मुझे बतला रहा था कि उसका दिल किसी लड़की पर आ गया और उसी से उसका बहुत जल्द विवाह होने वाला है।"

"अच्छा यह तो बहुत अच्छी बात है।" इन्दर ने कहा— "लेकिन उसकी आँख में चोट जो लगी थी उसका किसी लड़की विशेष से झगड़ा हुआ था या किसी लड़के से ?"

"राजेश कहाँ सच बोलने वाला है ?" कृष्ण कुमार कहता गया—"लेकिन वह बतला रहा था कि एक रात को वह कुछ दोस्तों

के साथ किसी लड़की को घेरे हुए था कि कुछ राहगीरों ने उसको पीट डाला। कई दिनों तक तो वह अस्पताल में रहा।" बात का रुख बदलते हुए कृष्ण कुमार ने कहा—"बहुत बुरी लत पड़ी है—लड़कियों के पीछे घूमना, दादा गीरी करना, उधार के सिग्रेट पीना बस यही काम रह गए है। क्या कभी तुम्हें नहीं मिलता वह ?"

"मेरे घर पर वह कभी आया नहीं—लेकिन दुकान पर उस के भेजे हुए आदमी आते रहते हैं और पिछले पाँच साल में जब से मेरा विवाह हुआ है दो चार बार ही आया होगा।"

"पाँच साल के विवाह में कितने बच्चे किए ?" कृष्ण कुमार ने पूछा ?

"परिवार नियोजन चल रहा है अभी तो ?" इन्दर ने मुस्करा कर कहा।

"परिवार नियोजन तो दो तीन बच्चे पैदा करने के बाद ही होता है।"

"बच्चे पैदा करने के बाद तो सब परिवार नियोजन करते हैं लेकिन हम तो काम उलटा करते हैं इसलिए अभी तक कोई उत्पादन नहीं हुआ। बताओ तुम ने कितना उत्पादन कर लिया है ?"

"दो साल में एक लड़की ?"

"न अपने विवाह पर बुलाया और न ही अपनी लड़की के जन्म दिन पर ?"

"बस अब लड़का होने वाला है तो तुम्हें अवश्य बुलायेंगे।" कृष्ण कुमार ने मुस्करा कर कहा।

"अपने घर का पता मत बतला देना क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि मैं पहले ही पहुँच जाऊँ ?"

"मेरे नाम को सारी सुभाष नगरी वाले जानते हैं बस तुम

बेरियों वाले बाग के पास पहुँच जाना और वहाँ कृष्ण कुमार आर्य का मकान पूछ लेना—सुभाष नगर का तो बच्चा-बच्चा वाकिफ है अपने नाम से ?"

"जरूर तुम ने भी कोई ऐसा काम किया होगा जिससे सुभाष नगर का बच्चा-बच्चा तुम को जानता है ?

"कभी हमारे सुभाष नगर में आ कर पूछ लो कि मैंने कौन सा ऐसा काम किया है।"

कृष्ण कुमार की बात सुनते-सुनते इन्दर ने कपिल की ओर देखा जो उसकी प्रतीक्षा में ही खड़ा था। कृष्ण कुमार से हाथ मिला कर इन्दर ने कहा—"कभी उस कमबख्त राजेश को मेरे यहाँ भेजना—अब अगर मिले तो कहना कि तुझे इन्दर याद कर रहा था।"

"लेकिन वह दो तीन महीने की छुट्टी लेकर गया है अपने गाँव। वहाँ से विवाह करके ही आयेगा।"

"जब कभी भी मिले तो उसको जरूर कहना कि इन्दर तुझे याद कर रहा था।" कह कर इन्दर ने कृष्ण कुमार से रुखसत ली और कपिल के पीछे जाकर फिर से बैठ गया।

इन्दर को अपने मकान के पास छोड़कर कपिल आगे बढ़ गया और इन्दर अन्दर आकर मालिश करने लगा। उसका स्वस्थ शरीर चमक रहा था। उस छोटे से बागीचे में, जिसके पेड़ सुमन ने अपने हाथों से लगाये थे, सूर्य की किरणों से अटखेलियाँ कर रहे थे कि इतने में सुमन ने प्रवेश किया। इन्दर सुमन को बुरका उतारते देखकर कांप गया। उसको यह पहचानने में देर न लगी कि बस स्टैंड पर बुरका ओढ़े जो औरत खड़ी थी वह सुमन ही थी और उसने कपिल और उसकी सारी बातें सुन ली होंगी।

सुमन चुपचाप इन्दर के करीब आ गयी और उसके चेहरे का निरीक्षण करने लगी। मौन को तोड़ते हुए सुमन ने कहा—"क्यों कैसी लगी तुम्हें अपनी माशूका ?"

इन्दर तिलमिला गया "क्या बस स्टैण्ड पर तुम्हीं खड़ी थीं ?"

"उस समय नहीं अब तो पहचान लिया होगा ?"

"क्या कपिल ने तुम्हें यह बताया था कि मैं हर रोज वहां जाया करता हूँ ?"

"नहीं।" दृढ़ स्वर में सुमन ने उत्तर दिया। "लेकिन अब मैं तुम्हें दुनिया में सब से खुशकिस्मत इन्सान बनाना चाहती हूँ। तुम्हारी शादी उस लड़की से कराना चाहती हूँ।"

"इतनी छोटी सी भूल के लिए इतनी बड़ी सजा तो न दो सुमी—नहीं तो मैं बेमौत मर जाऊँगा।" इन्दर ने सुमन को अंक में भर लिया। "सुमी—मैं····· मैं तेरे बिना एक क्षण भी नहीं जी सकता। ऐसा करने से तो अच्छा है कि तुम मुझे अंगारों पर लिटा दो सुमी—मैं उफ तक नहीं करूँगा।"

इन्दर कहता जा रहा था और सुमन इन्दर के वक्ष में अपना सिर टिकाये हुई थी। इन्दर की ठोड़ी सुमन के केशों पर टिकी हुई थी।

इन्दर ने सुमन का चेहरा हथेलियों में थाम लिया और नेत्रों में नीर भर कर कहने लगा—"क्या मेरी इतनी छोटी सी भूल को क्षमा नहीं कर सकती और फिर मैं किसी और से तो बातें नहीं कर रहा था कपिल तुम्हारा बालसखा ही तो था तेरी मेरी कोई भी बात तो उससे छिपी नहीं है······"

"नहीं यह बात नहीं है। मुझे तुम पर कोई शक नहीं—तुम्हारी मुहब्बत पर कोई शंका नहीं तुम मेरी रग रग में समाये

हुए हो और मैं ही हर सांस में निवास करती हूँ। लेकिन मैं तुम्हारे कुल का दीपक रौशन करने के लिए बड़ी से बड़ी कुरबानी करने के लिए तैयार हूँ और जब से मैं प्रमिला डाक्टर के पास से वापस आयी हूँ यही सोचा करती हूँ कि कोई सुशील लड़की मिल जाए—इतनी सुन्दर हो कि उस पर तुम्हारा भी अधिकार और मेरा भी ······उसके बच्चों को मैं अपने बच्चे समझ सकूं। मेरे देवता मैं ऐसी सुशील लड़की की तलाश में थी। अच्छा हुआ कि आपको यह लड़की पसन्द है।

"सुमी—" भावावेश में आकर इन्दर पागलों की तरह सुमन से लिपट गया "नहीं······नहीं······मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

चाय पीने के बाद, इन्दु की माता शोभा ने सुमन से पूछा "मैंने आपको पहचाना नहीं ?"

"मैं अपना परिचय और जानपहचान कराने के लिए आई हूँ।" सुमन मुस्करायी। "मुझे आप से कुछ जरूरी बातें करनी हैं।"

"कहिए ?" शोभा को उत्सुकता हुई।

"मैं आपकी लड़की का रिश्ता मांगने आई हूँ।"

"किस के लिए ?"

"अपने पति के लिए···।"

यह सुनकर शोभा का मुँह खुले का खुला रह गया।

"इसमें चकित होने की बात नहीं है। वास्तव में बात यह है कि मेरे संतान नहीं हो सकती।"

शोभा ने बोझिल चेहरा उठा कर सुमन की ओर देखा। "लेकिन आपको पता होना चाहिए कि मेरी बेटी अभी पढ़ रही है और फिर मैं ऐसा क्योंकर करूँ कि मेरी बेटी किसी की सौत बने।"

"देखिए शोभा जी। जहाँ तक सौत बनने का प्रश्न है वह तो रहेगा नहीं, मैं तो अपने पिता के घर रहूँगी और आपकी बेटी ही वहाँ रहेगी।"

शोभा ने एक तीखी दृष्टि से सुमन की ओर देखा जो रूप लावण्य में किसी से कम नहीं थी। देखते देखते शोभा की दृष्टि पथरा गयी और दीर्घ मौन को तोड़ते हुई बोली।

"इसके लिए मुझे अपनी बेटी से पूछना पड़ेगा और साथ में मुझे सबसे पहले लड़का देखना पड़ेगा। वैसे काम क्या करते हैं ?"

यह सुनकर सुमन ने अपने पर्स से कार्ड निकाल कर शोभा की ओर बढ़ा दिया जिस पर इन्दर और उसकी दुकान का पता लिखा हुआ था।

"ओह !" तो यह श्रीमान जी आपके पति हैं ?

"जी। क्या आप इन्हें पहचानती हैं ?"

"क्यों नहीं। मैंने अभी थोड़े ही दिन हुए हैं वहाँ से दो घड़ियाँ ली थीं।" और उसने टेबल पर रखी टेबलवाच की ओर संकेत किया "यह घड़ी वहीं की है।"

"चलो अच्छा ही हुआ मेरा आधा काम तो समाप्त हो गया।" सुमन मुस्करायी। "क्या लड़का आपको पसन्द है ?"

"मेरी पसन्द, न पसन्द का तो कोई महत्व नहीं। मुझे सब बातें इन्दु से साफ साफ कहनी पड़ेंगी और इससे पहले आप से भी कुछ बातें करनी हैं।"

"अवश्य। बातें तो होंगी ही।" सुमन ने मुस्करा कर पूछा,

"आप कहीं सर्विस करती हैं क्या ?"

"जी ! मैं स्कूल में अध्यापिका हूँ।"

"तो यूं कहो न, हम एक ही डाल के पंछी हैं।"

सुमन की यह बात सुनकर शोभा के चेहरे की झुरियां मुस्करा पड़ीं।

सुमन ने फिर कहा "शायद पहले आप लाजपत नगर में रहती थीं। मैं तो सब पता लगाकर ही यहाँ आई हूँ।"

"जी हाँ हम पहले वहीं लाजपत नगर में रहते थे लेकिन कुछ घटना ऐसी घटी कि हमें सुभाष नगर में आना पड़ा।"

"इन्दु के पिता जी को कितने वर्ष हो गए स्वर्गवास हुए ?" धीरे से सुमन ने पूछा।

"यह तो बहुत पुरानी कहानी है। वैसे तो उनका स्वर्गवास पिछले साल ही हुआ है। दस साल से वह बीमार थे उनका एक अंग सुन्न हो चुका था वह स्कूल में अध्यापक थे इसलिए वह नौकरी के काबिल न रहे और मुझे ही शिक्षा विभाग ने अध्यापिका की नौकरी दे दी।"

"आपके कोई अपने रिश्तेदार वगैरह भी यहाँ रहते हैं ?" सुमन ने पहलू बदलकर पूछा।

"जी नहीं। हमारे तो मेरा मतलब है कि सुमन के अंकल पहले तो यहीं दिल्ली में थे लेकिन उनका दफ्तर कलकत्ते चला गया और उन्होंने मुझे भी साथ चलने को कहा लेकिन मैं गयी नहीं।"

"इन्दु कहीं बाहर गयी है क्या ?"

"जी हाँ। अभी आपके आने से कुछ देर पहले ही बाहर चली गई है, अभी आती ही होगी।"

थोड़ी सी देर के लिए मौन सा छा गया शोभा लगातार सुमन के चेहरे पर देख रही थी। और जब उससे खामोश न रहा गया तो शोभा ने पूछा।

"आपके विवाह को कितना समय हो गया है ?"

"पाँच साल हो गए हैं।"

"लेकिन तुम्हें यह कैसे पता है कि तुम्हारी औलाद नहीं हो सकती। हो सकता है इन्दर में ही कुछ नुक्स हो।"

"नहीं आप इस बात से निश्चिन्त रहें। वे बिल्कुल ठीक हैं।"

"लेकिन इन्दर के कोई भाई बन्धु भी साथ रहते है ?"

"जी नहीं यहाँ तो वह अकेले ही रहते हैं। हाँ मेरी शादी से पहले इन्दर के बड़े भाई और मेरे डैडी की आपस में मित्रता थी। लेकिन इन्दर के बड़े भाई बम्बई व्यापार के सिलसिले में चले गये थे, फिर वह वहीं जम गए। इन्दर ने यहाँ पर घड़ियों की दुकान खोल ली तो भाई ने अपने जायदाद में से राजोरी गार्डन में प्लाट भी खरीद लिया था और मकान बनवा दिया और घड़ियों की दुकान में भी उनकी सहायता की।

इतने में इन्दु अन्दर आ गयी और उसने सुमन को हाथ जोड़ कर नमस्ते की।

उत्तर में सुमन ने आगे बढ़कर उसको प्यार से अंक में भर लिया और कुर्सी छोड़कर उसके साथ पलंग पर बैठ गयी।

इसके पश्चात् इधर उधर की बातें होती रहीं सुमन भी प्यार से इन्दु से पढ़ाई के विषय में पूछती रही और फिर जाते समय शोभा ने सुमन को कहा इन्दु की परीक्षा के बाद।

"तो परीक्षा तो होली के बाद होगी ?"

"जी हाँ होली के बाद।"

"होली है भई होली है। होली है भई होली है।" पंजाबी भंगड़े का ढोल बज रहा था और ढोल बजाने वाले के सधे हाथ ऐसे चल रहे थे जैसे वह यह सिद्ध कर देना चाहता था कि उस जैसा ढोल बजाने वाला इस धरती पर कोई नहीं है। उस ढोल की आवाज में इतना जादू था जैसे वह दंगल खेलने वाले पहलवानों के लिए बज रहा हो और उस ढोल के चारों ओर बच्चे बूढ़े, इधर से उधर, उलटे सीधे, टेढ़े तिरछे, उछलते कूदते गिरते पड़ते पाँव रख रहे थे।

बाजारों, गली-कूचों और घरों की छतों पर हर कोई एक दूसरे को रंगने की तैयारी कर रहा था। टोलियाँ की टोलियाँ एक ओर से आतीं और गुलाल के बादल छोड़ती हुई दूसरी ओर को चली जातीं।

गुलाल लगे गालों में हरेक के मुँह की बतीसी ऐसे चमक रही थी जैसे घनघोर घटा के बीच बिजली चमक रही हो।

इस दिन इन्दु को भी न छोड़ा गया। उसकी सहेलियों ने उसे कमरे में ही दबोच लिया और उसे सिर में पाँव तक रंग दिया। सहेलियाँ उसे खींचकर होली खेलने के लिए अपने साथ ले गयीं।

इन्दु भी सहेलियों के साथ काले, पीले, लाल, गुलाबी, नीले सब रंगों से लथपथ, आढ़े-तिरछे कदम रख कर चल रही थी। हर युवती के भीगे भीगे अंग और नयनों में नये-नये उमंग लिए मृदंग

के साज पर कदम रख कर ऊपर नीचे आकाश पर गहरे लाल रंग के बादल उछालती हुई आगे बढ़ती जा रही थीं। और फिर होली के दिन तो एकाध मील का चक्कर लगाना मामूली सी बात है।

ऊपर छत से किसी ने रंग की बालटियाँ उंडेलना शुरू कर दिया। और सहेलियों के साथ भगदड़ में इन्दु भी पानी और रंग से तर हो गयी थी। सामने पास ही सुमन भी खड़ी थी और उसने ज्यों ही इन्दु को इस स्थिति में देखा कि वह पानी से नहा सी गयी थी, और इन्दु के शरीर में कुछ कम्पन सी होने लगी थी।

सुमन ने आगे बढ़ कर इन्दु के मुख पर गुलाल मल दिया और इन्दु देखती रह गयी "दीदी आप ?"

"जी" क्यों कैसा रहा।

"लेकिन मेरे पास तो गुलाल भी नहीं है लगाऊँ तो आपको क्या लगाऊँ ?"

"रंग तो है तेरे पास।"

"कहाँ है ?"

"तुम्हारे कपोलों पर।"

यह सुनते ही इन्दु ने लज्जा से नेत्र झुका लिए। लेकिन सुमन ने आगे बढ़कर इन्दु की ठोढ़ी को ऊपर उठाया और सुमन ने उसे अंक में भर लिया। "आज तो होली है क्यों आज भी मजाक न करूँ। ओह तुम्हारा तो शरीर तप रहा है इन्दु ?"

"अभी अभी नाश्ता करके बैठी थी और सहेलियों ने मुझे उठा लिया और यह पानी की बाल्टी मुझ पर गिरते ही पता नहीं जी क्यों खराब होने लगा है।"

"तो आओ मेरे साथ। मेरे घर तो वैसे आती नहीं आज होली के दिन ही घर को शुद्ध कर दो।"

"लेकिन आज नहीं आऊँगी आप के घर। आज तो रंग की लाल लाल होली है। अब मुझे घर जाने दो मेरा जी कुछ ठीक नहीं है।"

"तो क्या हुआ होली लाल लाल रंग की ही तो है" मुस्कुरा कर सुमन इन्दु को अंक में भर अपने घर की ओर चल पड़ी।

इन्दु को वेबस होकर सुमन के साथ उसके घर पर जाना पड़ा। सुमन का घर वहाँ से लगभग सौ गज के फासले पर था। फाटक पर पहुँचते ही इन्दु की आँखें चुंधिया गयीं। उन छोटे छोटे वृक्षों को देखकर, उसकी दृष्टि घास के एक टुकड़े से फिसलती हुई गमलों में लगे फूलों पर कुछ क्षणों के लिए अभी पूरी तरह टिक भी नहीं पाई थी कि सुमन ने पूछ लिया।

"क्यों गरीबखाना पसन्द है कि नहीं ?"

"दीदी आप इसको गरीबखाना कहती हैं यह तो अच्छी खासी कोठी है।"

"अच्छा। तो अन्दर आओ कपड़े बदल लो और मैं तुम्हारे लिए अभी गरम-गरम चाय बनाती हूँ। ओह मैं भी कैसी भुलक्कड़ हूँ तुम से पूछा भी नहीं चाय पीओगी या काफी ?"

"न चाय और न काफी ठण्डा पीयूँगी क्योंकि मुझे बहुत गरमी लग रही है। दीदी मेरी बात का बुरा न मानना क्योंकि आज होली है।"

"क्योंकि आज होली है इसलिए बुरा नहीं मनाती," सुमन इन्दु को कमरे के अन्दर ले गयी।

"विराजिए सुकुमारी जी।" हंसमुख आकृति से सुमन ने कहा।" जल्दी कपड़े बदल डालो। सुमन ने साड़ी इन्दु की ओर बढ़ा दी।

'नहीं दीदी, मैं साड़ी नहीं बाँधूंगी। कपड़े गीले ही रहने दो काफी पी लेती हूँ फिर मुझे घर भी जाना है माँ को चिन्ता होगी।"

"किस बात की चिन्ता ?"

इन्दु चुप रही।

"यही न कि देर हो गयी ?"

किन्तु इन्दु फिर भी खामोश थी।

"यह पत्थर तो तुम्हारी माँ को एक न एक दिन सीने पर रखना ही पड़ेगा।"

"दीदी।" इन्दु लजा गयी। "नहीं दीदी मैं साड़ी नहीं बाँधूंगी।"

"लो तो फिर सलवार पहन लो।"

सलवार कमीज अल्मारी से निकाल कर सुमन ने इन्दु के हाथ में थमा दिए और नौकर को जल्दी काफी बनाने के लिए कह दिया।

ज्योंही सुमन कमरे में वापस आई इन्दु अभी तक अपनी जगह पर वैसे ही बैठी थी।

"अब उतारो भी यह लाज का घूंघट। ओह तुम्हारा भी क्या कसूर है अंगी तो तुम्हें दी ही नहीं।"

लाज के मारे इन्दु डूबी जा रही थी और सर्दी के कारण उसका शरीर काँपने लगा। सुमन ने जल्दी जल्दी उसको वस्त्र पहनाने में सहायता की और उधर से नौकर काफी ले आया। लेकिन काफी का कप इन्दु के हाथों में काँपने लगा। उसका शरीर एकाएक बहुत ठण्डा हो गया था और उसके दाँत टकराने लगे.

सुमन समझ गई थी कि इन्दु को ज्वर की शिकायत हो गयी

है उसने जल्दी से इन्दु को पलंग पर लेटने को कहा और गरम कम्वल उसे ओढ़ा दिया। "तुम्हारी माता जी को यहाँ बुलवा लेती हूँ।"

लगभग ढाई वजे के करीब जब इन्दर होली मण्डली से विदा होकर घर पहुँचा तो डाक्टर को घर से निकलते देखकर भोंचक्का रह गया और तेजी से कदम उठाता हुआ वह तीर की तरह कमरे में घुसा "सुमन डाक्टर किस लिए आया था ?"

और उसके साथ ही उस की दृष्टि कमरे में पलंग पर रजाई में लिपटे हुए व्यक्ति पर पड़ी।

"मेरी सहेली बीमार है, आप घबरा क्यों गए ?"

"ओह ठीक है मैंने सोचा पता नहीं क्या हो गया, दूर से जब मैंने डाक्टर को गाड़ी स्टार्ट करते देखा तो घबरा गया था। क्या हुआ तुम्हारी सहेली को ?"

"पानी में भीग गयी है और अब ज्वर हो गया सो मैंने डाक्टर को टेलीफोन कर दिया था और सहेली के घर सूचना देने के लिए नौकर को भेज दिया है। और अभी सुमन और इन्दर की बातें चल रही थीं कि इन्दु की माँ घबराई हुई आ धमकी।"

इन्दर ने नमस्ते से उसका अभिवादन किया और सुमन उसको इन्दु के पास कमरे में ले गयी।

इन्दु की उस समय आँखें लग गयी थीं लेकिन सुमन ने तसल्ली देते हुए शोभा को कहा "आप चिन्ता न करें डाक्टर देख गया और बस आंखें खुलते ही ज्वर उतर जाएगा।"

"मैं तो घबरा गयी थी अभी इन्दु की परीक्षा के लिए एक ही सप्ताह रहता है।

"आप चिन्ता न करें आज ही ठीक हो जाएगी।" बातें करते

करते सुमन शोभा को ऊपर वाले कमरे में ले गयी।

इन्दर जो अभी अभी स्नान गृह से बाहर निकला था ज्योंही अन्दर प्रवेश किया और इन्दु का मुँह कम्बल से निकला देखकर उसके पाँवों के नीचे धरती खिसकने लगी।

"सुमन दीदी कहाँ है?"

"अभी बुलाता हूँ।"

"गला सूख रहा है एक घूँट पानी चाहिए।" कृतज्ञता जताते हुए इन्दु ने इन्दर की ओर देखा "आप लोगों को योंही कष्ट दे रही हूँ।"

"कष्ट की कोई बात नहीं।" इन्दर ने पास ही पड़ा पानी का गिलास उठा कर उसके हाथ में थमाने के लिए बढ़ा दिया।

इधर इन्दर के हाथ में पानी का गिलास काँप रहा था और उधर इन्दु को उठने में कुछ दिक्कत हो रही थी इन्दर ने आगे बढ़कर उसके सिर के नीचे हाथ दे दिया और पानी का गिलास उसके होठों से लगा दिया।

इन्दर तो हैरत में पड़ गया कि इन्दु और सुमन की सहेली यह सब क्या है? क्या वह स्वप्न तो नहीं देख रहा है। नहीं-नहीं है तो वही बस स्टेंड वाली लड़की।

अभी गिलास इन्दु के होठों से लगा हुआ था कि सुमन अन्दर आ गयी।

इन्दर घबराया नहीं बल्कि मुस्करा कर सुमन से कहा "घर आये महमानों की ऐसी सेवा की जाती है जैसे तुम कर रही हो। देखो तो तुम्हारी अनुपस्थिति में मुझे ही सब कुछ करना पड़ा।"

इन्दु लजा गयी और सुमन ने अति प्रसन्न होकर कहा—

"तब क्या हुआ आपने अभी केवल पानी ही तो पिलाया

है।" सुमन झट से आगे बढ़ कर इन्दु का सिर अपनी गोद में रख लिया और उसका सिर दबाने लगी। "कहो अब कैसी तबीयत है ?"

"ठीक है माता जी अभी नहीं आईं।"

"बाहर है अभी आ रही हैं।"

शोभा के अन्दर आने के बाद इन्दर बाहर नहीं गया वही पर जम कर बैठ गया। बातें चलती रहीं। रात हो गयी लेकिन इन्दु के शरीर का ताप अभी तक कम होने में नहीं आ रहा था। रात आधी से अधिक ढल चुकी थी। इन्दर तो जाकर सो गया लेकिन शोभा और सुमन जागती रहीं। बातें करती रहीं जागती रहीं कि प्रात:काल की रूपहली किरणों ने खिड़की पर अपना सिर पटका और ठीक उसी समय डाक्ठर भी आ धमका। डाक्टर दवाई देकर चला गया और शोभा सुमन की यह हमदर्दी और सेवा परिचर्या देकर चकित रह गयी। साथ ही साथ शोभा मन ही मन बुदबुदाई "कि क्यों भगवान ऐसी नारी को सन्तान से वंचित रख रहा है।"

सुमन के बार बार आग्रह करने पर भी शोभा इन्दु को दिन के लगभग दो बजे अपने घर ले गयीं। इस घटना के बाद तो फिर सुमन कई बार इन्दु के घर आया जाया करती थी अब तो शोभा का मन ही सुमन के सेवा से भर गया और उसने सुमन को बता दिया था कि इन्दु की परीक्षा के बाद विवाह की बात करेंगे। सुमन मन ही मन प्रसन्न हुई परीक्षा के बाद।

"सुमन तुम्हारे सिर पर यह कैसा भूत सवार हो गया है।" सुमन के पिता ने क्रोधित वाणी में कहा, "सुमन ऐसा तो कोई अन्धा भी नहीं कर सकता कि वह अपना सुहाग किसी और के हवाले कर दे।"

"काश ! पिताजी मैं अंधी होती तो फिर मैं वह कागज तो न देख सकती जो आपने मुझ से छिपा कर रखा था।"

"कैसे कागज ?" बिहारी लाल ने विस्मय से पूछा।"

"देखिए पिता जी। मैं आपकी बेटी हूँ आपका खून हूँ इस-लिए मुझे कोई ऐसा रहस्य खोलने पर मजबूर न करो जिससे तुम्हें पछताना पड़े।"

"मैं कुछ समझा नहीं ?" बिहारी लाल सोफे पर पहलू बदल कर बोले।

"आप इस बात को न समझें तो अच्छी बात है। बस मैं तो आपको केवल इतना कहने आई थी कि यदि इन्दु की माता आप से कुछ पूछे तो आप साफ साफ कह देना कि तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है यदि इन्दर इन्दु से विवाह कर ले।"

"ऐसा कौन पत्थर दिल पिता हो सकता है कि जो अपनी बेटी का सुहाग अपने आप ही लुटाये बल्कि मैं तो इन्दु की मां को यही कहूँगा कि वह इन्दर से अपनी बेटी का विवाह न करे।"

"हद हो चुकी है पिताजी। तुम ही तो वह पत्थर दिल पिता हो कि आज मुझे ऐसा करने पर विवश होना पड़ा है। क्या यह सच नहीं है कि विवाह से पहले जब मैं एक रात को सीढ़ियों पर लुढ़क गयी थी और उसके बाद मेरा आपरेशन हुआ था उस समय डाक्टर प्रमिला ने आपको यह नहीं बताया था कि आपरेशन तो सफल हो गया है लेकिन सुमन के जिन्दगी भर सन्तान नहीं हो

सकती क्योंकि बच्चेदानी आपरेशन करते समय खत्म हो चुकी थी ।"
यह सुनते ही बिहारी लाल का मुंह पीला पड़ गया ।

"आप बताइए पिताजी उस महान् पुरुष इन्दर ने आपका क्या बिगाड़ा था कि तुमने मुझे उसके गले की शोभा तो बना दिया वह भी शायद इसलिए कि इन्दर एक शरीफ आदमी हैं अगर सुमन के सन्तान न भी हो तो भी वह सुमन को जिन्दगी भर घसीटता जाएगा । क्यों पिताजी है न यही बात ? जवाब दो मुझे । काश ! कहीं मुझे इस रहस्य का पहले पता चल जाता तो शायद मैं जीवन-भर विवाह ही नहीं करती । लेकिन मुझे पता चला अब जब मेरे विवाहित जीवन को भी पाँच साल होने वाले हैं ।" कहिए पिताजी क्या मैंने झूठ बोला है ?

"नहीं ? यह सच है ।" बिहारी लाल के माथे पर पसीने का बूंदें चमक उठीं ।

"अगर यह सच है तो आप मेरे सबसे बड़े शत्रु हैं और सबसे बड़ा मित्र है इन्दर । यह ठीक है कि उसको इस बात का पता नहीं है लेकिन आज तक उसके मुंह से उफ तक नहीं निकला । तुम्हें क्या पता कि वह बच्चे के लिए कितना तरस रहा है लेकिन वह मजबूर है । उसकी आँखों में गैरत का पानी है कि उसने मेरे सामने कभी दूसरी शादी का नाम तक नहीं लिया है । और दूसरी ओर आप हैं कि इतना सब कुछ जानते हुए······· ।

"बेटी !"

"आज शाम तक मेरे नाम पर तीस हजार रुपये बैंक में जमा होना चाहिए ।" सुमन दृढ़ता से सोफे से उठ खड़ी । 'आप इन्दर और इन्दु के विवाह में बोलने की कोशिश न करना वरना मुझ से बुरा कोई नहीं होगा ।"

"बेटी यह सब कुछ तुम्हारा है। यह घर तुम्हारा है। लेकिन अब एक कृपा और कर दो कि कहीं अपनी मां को भी न बता देना क्योंकि यह डाक्टर वाली बात मेरे सिवाये तेरी मां को भी नहीं पता और इन्दर को तो मरते समय तक भी कभी न बताना। नहीं तो उसके सामने शायद मैं आँखें उठा कर भी न देख सकूं।" कह कर बिहारी लाल ने सुमन को अंक में भर लिया। "आज से इन्दु भी तुम्हारी तरह मेरी बेटी है। जैसे तुम कहोगी मैं वैसा ही करूंगा।"

परीक्षा के बाद, सुमन ने शोभा को अपना वचन याद दिलाया।

"देखिए सुमन जी। मेरी बेटी इन्दु की जिन्दगी में एक अनोखी घटना घटी है और मैं चाहती हूँ कि वह आपको बतला दी जाए क्योंकि मेरा जहाँ तक ख्याल है बातें अगर साफ-साफ की जाएँ तो इसमें ज्यादा भलाई है और साथ में मैं आपसे यह पूछना चाहती हूँ कि क्या आपके माता-पिता मान गए हैं ?

"जी हाँ। आप किसी किस्म की चिन्ता न करें।"

"क्या तुम्हारे इन्दर भी इस रिश्ते से राजी हैं ?"

"देखिए मैं हर प्रकार से तैयार होकर आई हूँ और आपको बार-बार यह प्रश्न नहीं पूछने चाहिए। हाँ, अगर इन्दर में आपको कुछ कमी दिखाई देती है तो कहिए ?"

"कमी तो कुछ भी नहीं बस जरा आयु की बात है कि इन्दर तो लगभग अठाई वर्ष के होंगे और इन्दु से मुश्किल तो अठारह पार कर चुकी है।"

मुस्करा कर सुमन ने कहा "आप आयु के झमेलों में क्यों पड़ गयी हैं सिक्कम के राजकुमार चालीस साल के थे और उसकी होने वाली अमरीकन बीवी बाइस साल की थी। और फिर इन्दु और इन्दर में आयु का कोई खास फर्क नहीं है।"

"हां तो फिर वह कौन सी घटना है इन्दु की जरा मैं भी तो सुनूं।"

"वह तो इन्दु तुम्हें स्वयं ही बतलाएगी मैं अभी बाजार जा रही हूँ और इन्दु के कनपटी पर एक हल्का सा दाग है। आप जरा बातों ही बातों में उस दाग के विषय में पूछना वह तुम्हें सब कुछ बतला देगी।" इतना कह कर शोभा चली गयी।

थोड़ी देर बाद सुमन ने इन्दु को खींच कर अपने पास बिठा लिया। "देखो इन्दु मैं तुम्हारे घर आई और तुम्हारी माताजी बाहर चल दीं।" सुमन इन्दु के केशों में उँगलियां फेरते-फेरते उसकी उँगलियां वहीं रुक गयीं जहाँ शोभा ने कनपटी के पास दाग बतलाया था।

"ओह यह दाग कैसे है ?"

"यह तो एक दिन चोट लग गयी थी।"

"कैसी चोट ?"

"गिर पड़ी थी।"

"झूठ। देखो इन्दु तुम्हें सच बतलाना पड़ेगा कि यह दाग तुम्हें कैसे लगा ?"

"यह तो बहुत लम्बी कहानी है और फिर आप इसे जानकर क्या करेंगी ?"

"मुझे जरूरत है इसीलिए तो मुझे यह सब कुछ जानना है ?"

"किस लिए जरूरत है ?"

"अब तुम्हारा विवाह भी तो करना है ?"

"इन्दु लजा गयी। उसने अपना सिर सुमन की गोदी में टिका दिया।

"देखिए लजाने की आवश्यकता नहीं है तुम्हारी माताजी ने मुझे सब कुछ बतला दिया है लेकिन मैं तुम्हारे मुंह से यह सब कुछ सुनना चाहती हूँ।"

"रहने दो दीदी ?"

सुमन ने दोनों हाथों से इन्दु का चेहरा उठा लिया "तुम्हें मेरी सौगन्ध। यह बात तुम्हें मुझे बतानी पड़ेगी।"

"यदि आप सुनना ही चाहती हैं तो फिर मुझे कब इन्कार है लेकिन एक इकरार करना होगा कि किसी को मत बतलाना।"

सुमन ने इन्दु का हाथ अपने हाथ में ले लिया "चलो इकरार रहा किसी ऐरे-गैरे को नहीं बतलाऊँगी।"

इन्दु ने कहना शुरू किया।

"एक दिन दीवाली के त्यौहार पर मैं सहेलियों के साथ कुछ चीजें खरीदने के लिए बाजार गयी थी जब मैं वापस आने लगी तो मेरी दूसरी सहेलियाँ तो मुझ से बिछुड़ गयीं और मैं अकेले ही रास्ते पर बढ़ती आ रही थी कि रास्ते में तीन लड़के खड़े थे। उनमें से एक बढ़कर आगे आ गया और शरारत भरी दृष्टि से देखने के बाद कहने लगा "क्यों जी कब तक तरसाती रहोगी ?"

मैंने बिना सोचे समझे ही कह दिया "मरणी मोया रण्डी

छड़िडया" और बिना उसकी ओर देखे आगे बढ़ गयी और वह अपना सा मुँह लेकर रह गया। ज्यों ही मैंने दो कदम चलकर पीछे मुड़कर देखा तो उसके अन्य मित्र उसको लानत देने के रूप में उसके मुँह पर खले मारने लगे और फिर मैंने उस लड़के को कई बार रास्ते में इधर-उधर घूमते देखा। शायद वह इस ताक में था कि वह किसी दिन मुझे फिर छेड़ेगा। यह बात तो मैंने अपनी माता जी को नहीं बतलाई थी।

लेकिन एक दिन मैं सहेलियों के साथ छः से नौ बजे एक पिक्चर देखने गयी थी। मेरी साथ वाली सहेलियाँ रास्ते में ही रुक गयीं उनमें से जनक ने कहा भी "इन्दु महारानी कहो तो तुम्हें घर तक भी छोड़ आयें और जनक ने मेरे गालों को अपने हाथों से रगड़ दिये परन्तु मैंने इन्कार कर दिया। थोड़ी दूर का रास्ता है यह सोच कर मैं अकेली ही घर की ओर चल पड़ी।

मैं पक्की सड़क से उतर कर कच्चे रास्ते पर हो गयी। हमारा घर लगभग वहाँ से तीन फरलाँग के फासले पर था। दस बजने वाले थे। वह कच्चा रास्ता वीरान नज़र आ रहा था परन्तु सड़क पर लगे बिजली के प्रकाश के कारण कुछ कुछ उजाला दिखाई दे रहा था। मैं तेज कदम उठाती हुई बढ़ती जा रही थी। उस दिन मैं स्लीपर पहन कर गयी थी। वैसे तो मैं स्कूल जाते समय फ्लीट पहनती हूँ या फिर क्रेपसोल की गुरगाबियाँ क्योंकि मुझे तेज चलने में मजा आता है, लेकिन उस दिन ऐसा न था।

मैं बढ़ती जा रही थी कि एकाएक मेरे कानों से आवाज टकराई 'इन्दु'। ज्योंही मैंने अपना नाम सुना पीछे मुड़कर देखा कि एक छाया आती दिखाई दी। मेरा हृदय धड़क कर रह गया। आवाज के साथ वह छाया धीरे-धीरे अजगर के समान मेरी ओर

बढ़ती जा रही थी। मेरा साँस रुक गया। लेकिन आहट बढ़ती आ रही थी और मुझे विश्वास हो गया था कि मैं कोई स्वप्न नहीं देख रही हूँ बल्कि वास्तव में कोई बुरे निश्चय से मेरी ओर बढ़ा आ रहा है। मैंने पूरी आँखें खोल लीं और बढ़ती हुई छाया को ध्यान-पूर्वक देखा, कहते-कहते इन्दु सिसकियाँ भरने लगीं लेकिन इन्दु को सुमन ने सांत्वना देते हुए कहा।

"देखो इन्दु। मुझ से क्या डर" और फिर सुमन इन्दु के बालों में हाथ फेरने लगी।

"इन्दु—" एक आवाज मेरे कानों से फिर टकराई। अपने नाम की दूसरी आवाज सुनकर मेरा दिल उछल उछल कर बाहर आने लगा और फिर तीसरी बार अपने नाम की आवाज सुन कर उस सुनसान वातावरण में मेरा साँस रुका जा रहा था। सहसा मेरे शरीर में कंपन सी उठी किसी के कदमों की आवाज ने मुझे चौंका दिया। वह आवाज हर क्षण मेरे करीब आती जा रही थी मैंने एक बार फिर मुड़कर देखना चाहा परन्तु मेरा साहस न हुआ।

दूसरे ही क्षण आवाज मेरे कदमों के समीप आ गयी। मैंने ऐसा अनुभव किया जैसे मेरे पीछे कोई चला आ रहा था। मेरा सारा शरीर जम सा गया। मेरी धमनियों में बहता हुआ रक्त सूख गया। उठते हुए पग भारी होने लगे। उस समय उस सुनसान कच्चे रास्ते पर और कोई नहीं था।

और फिर आवाज देने वाले ने बड़ी तेजी से मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने उसको पहचान लिया था यह वही राजेश था जिसको मैंने एक दिन गाली दी थी। उस समय मैं उसका कुनिश्चय समझ गयी। भय से मुझ में इतना भी साहस नहीं रहा था कि मैं सहायता के लिए चीख मार सकती—मैं स्थिर बनी खड़ी रही।

मैंने भागने के लिए जोर से अपने हाथ को झटका देकर छुड़ाना चाहा परन्तु सफल न हुई।

"न—न इतना जुल्म न करना कहीं नाजुक कलाई में मोच आ जायेगी।" कह उसने मेरी कमर में हाथ डाल दिया। बेबस पंछी को अपने जाल में देखकर वह एक सफल शिकारी की भाँति हँसा।

और उस समय मैंने अपने अमोघ शस्त्र का प्रयोग किया मैंने जोर से अपने दाँत उसके हाथ पर गाढ़ दिए पर सब व्यर्थ।

उसने मुझ को अपनी बाँहों में जकड़ लिया। कोई मार्ग न पाकर मैंने विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की। "मैंने क्या बिगाड़ा है कि मुझे यूँ नष्ट करने पर तुले हो? तुम्हें इससे क्या प्राप्त होगा? भगवान के लिए मुझ पर दया करो।"

"इस नेक सलाह के लिए शुक्रिया।" राजेश मुझे और जोर से कसने की कोशिश कर रहा था और बोला "तेरी यह मजाल मुझे गालियाँ देती थी मरती मोया रण्डी चट्टिया। बोल मेरे मित्रों में तुम ने उस दिन मेरी नाक उलटी छुरी से काट दी थी या नहीं?"

राजेश ने अपने होठ मेरे पवित्र कपोलों पर रख दिए पर न जाने मुझ में इतनी दैव्य शक्ति कहाँ से आ गयी थी कि मैंने अपना हाथ छुड़ाकर एक भरपूर धक्का राजेश को दिया किन्तु राजेश भी मुझे गले में कमीज़ से पकड़े हुये था झटका लगते ही मेरी कमीज आगे से अन्त तक बुरी तरह फट गयी लेकिन फिर भी मैं अपने आपको राजेश के पंजे से मुक्त न कर सकी। मैं पूरी तरह राजेश के बाँहों में कैद थी।

मैं राजेश की बांहों में कैद होकर तड़प रही थी कि दूर से ठ[illegible]यों की हँसी सुनाई दी। मैंने आवाज लगानी चाही लेकिन

राजेश ने मेरे मुँह पर हाथ रख दिया और कहने लगा "आज मैं तेरे साथ ऐसा व्यवहार करने आया हूँ कि तू जीवन भर मेरे सामने आंखें न उठा सकेगी।"

वह कमर कस कर शैतान बना मेरे कौमार्य को लूटने के लिए तैयार खड़ा था। उसका वह कुनिश्चय देखकर मैं सिर से पाँव तक काँप गयी।

मैं बेबस पंछी की तरह उसकी दया पर थी। मेरे शरीर में इतनी भी शक्ति नहीं रह गयी थी कि मैं जरा भी हाथ पाँव हिला सकती। वह क्षण भर रुक कर मुझे घूरता रहा उसकी घूमती हुई दृष्टि मेरे अंग-अंग को चीर रही थी।

"बचाओ ! बचाओ !" मैं जोर से चिल्लाई और दूसरे ही क्षण राजेश ने मेरे मुँह में मेरा ही दुपट्टा ठूँस दिया। "चिल्लाती काहे को है, यह तो मेरे ही दोस्त ठहाका लगा रहे हैं आज तो अपनी प्यास बुझा कर ही दम लूँगा"—और फिर दूसरे ही क्षण मैं धरती पर चित पड़ी थी।

आवाज नजदीक आ रही थी और उसके साथ साथ हंसी के ठहाके भी नज़दीक आते गये मैं एक बार फिर जोर से चिल्लाई "बचाओ बचाओ।"

"अमा यार—यह तो कोई लड़की चीख रही है" आसासिंह ने अलीसाबरी से कहा।

"हाँ यार है तो कुछ ऐसा ही मामला। अपन को लड़की की सहायता करनी चाहिए।" अलीसाबरी ने अपनी मुट्ठी भींच[illegible]।

"देखता क्या है आगे बढ़। वह देख सामने अन्धेरे में—" वे दोनों बिजली की चमक की भांति रास्ते से हट कर उस [illegible] आवाज की ओर बढ़े।

"मार मार साले को जबरदस्ती ज़ना करना चाहता है।" अलीसाबरी ने एक भरपूर हाथ राजेश पर दे मारा।

घूसा लगते ही राजेश के होशहवास उड़ गए।

राजेश ने एक नजर आसासिंह पर डाली जिसके गालों के नीचे से लेकर गर्दन तक घनी दाढ़ी उगी हुई थी। राजेश को सब से अधिक डर उसकी छोटी-छोटी आँखों से लगा जो उसके शरीर को चीरती जा रही थीं। उससे आँखें मिलते ही राजेश ने अनुभव किया जैसे वह किसी दानवी शक्ति के सामने खड़ा है। जो किसी भी भय या दया के किए बिना उस पर वार करने को तैयार खड़ी थी।

"देखता क्या है? एक कुमारी का कौमार्य लूटना कोई मिसरी की डली है जो मुँह में डालकर निगल जाएगा। खबरदार जो फिर कभी इस लड़की की ओर आँखें उठाकर भी देखा।" आसासिंह के कोमल दाँत उसके दाढ़ी में चमक उठे और राजेश कायरों की तरह एक दम पीछे हट गया।

और फिर आसासिंह राजेश की ओर लपका "आँखें निकाल कर रख दूँगा और तेरे इन नापाक हाथों को आग में झोंक दूँगा।" कहते कहते आसासिंह की तिरस्कार से भरी आँखों में खंजर सी तेजी आ गयी थी।

"सीना जोरी कर रहा है सुलेमान?" अलीसाबारी ने दूसरा घूँसा राजेश की छाती पर दे मारा।

मैं आसासिंह के पांवों में गिर पड़ी—"भैया तुम्हारा भला हो आज मेरी लाज आप लोगों ने बचा ली।"

मेरी बात अनसुनी करके आसासिंह ने राजेश पर हाथ झाड़ना शुरू कर दिए वह दोनों उसको पीटे जा रहे थे कि इतने में

राजेश के गुर्गे भी आ पहुँचे जो कुछ ही फासले पर खड़े थे। उन दोनों ने आकर सबसे पहले राजेश को छुड़ाया और यह साबित कर दिया था कि वह राजेश के साथी नहीं है। फिर अलीसाबरी ने उन दोनों को झकझोर डाला और वह क्रोधित होकर बोला :—

'देखो हमें बनाने की जरूरत नहीं और हम इतनी कच्ची गोलियाँ नहीं खेले। तुम दोंनों इस कमीने के साथ हो।" कहते ही अलीसाबरी ने राजेश की ओर इशारा किया जो हांफ रहा था।

मैंने उन दो लड़कों को पहचान लिया था कि वह राजेश के ही साथी थे लेकिन मैं कुछ बोली नहीं। अगर मैं कुछ कह देती कि यह दोनों ही राजेश के साथी हैं तो फिर मामला और बढ़ जाता और अभी मैं यह सोच ही रही थी कि आसासिंह को कहूँ या न कहूँ कि आसासिंह ने गरज कर कहा "और अगर तुम्हारी भी कुछ सलाह है तो देर न करो आओ हो जायें दो दो हाथ।"

यह सुनते ही राजेश के साथियों को जैसे साँप सूंघ गया था और खिसयाने होकर राजेश की ओर देखने लगे।

उन दो में से एक ने कहा "नहीं भई ऐसी बात नहीं हम तो राहगीर हैं? इतना कह कर वे दोनों आगे बढ़ गए। फिर अलीसाबरी ने राजेश को एक जोर का धक्का दिया और मुझ को जाने के लिए कहा। लेकिन मेरी कमीज फटी हुई थी इसलिए मैं बुरी तरह शरमा रही थी। कहते-कहते इन्दु कुछ क्षणों के लिए रुक गई जैसे वह कुछ याद कर रही हो।

कुछ कदम तेज चलकर राजेश भी अपने गुर्गों के साथ मिल गया और जब वह सड़क पर रोशनी में आ गए तो राजेश का हाथ आंखों से ही नहीं उठ रहा था।

"न जाने यह कमीने कहाँ से निकल आए।" विनोद ने सहा-

नुभूति जतलाते हुए कहा ।

"अच्छा हुआ कि उन से हाथा पाई नहीं हुई नहीं तो आज जिन्दा बचकर कोई भी न जाता ।" कैलाश ने शब्दों को चबाते हुए राजेश का हाथ आंखों से अलग करते हुए कहा । क्यों ज्यादा चोट लग गई है ?"

लेकिन राजेश का हाथ तो जैसे आंख से चिपक गया था और उसके दाहिने हाथ की कोहिनी जैसे टूट ही गयी थी ।

इन्दु के सिर में लगे चोट से राजेश के कपड़ों में रक्त के कई छींटे पड़ गए थे ।

"अरे अरे यह रक्त कहाँ से बह रहा है ?" कह, विनोद डाक्टर की भांति राजेश का निरीक्षण करने लगा ।

'मालूम पड़ता है इन्दु के कौमार्य पर हाथ साफ कर दिया ।" धीरे से कैलाश ने पूछा ।

"अवे मेरी जान निकल रही है और तुम्हें अठखेलियां सूझ रही हैं । बच के निकल गई थोड़ी सी देर की कसर थी ।" एक विषैली मुस्कान राजेश के होठों पर फैल गई ।

फिर क्या हुआ ? सुमन ने इन्दु से पूछा ।

मेरी फटी कमीज देखकर आसासिंह ने अपनी पगड़ी से चार पिन निकालकर मेरी ओर बढ़ा दिए लेकिन मेरे हाथों में इतनी भी तो शक्ति नहीं थी कि पिन लेकर कमीज पर लगा सकती ।

"डरो मत । तुम्हारा घर कितनी दूर है ?" कहते ही अलीसाबरी ने आसासिंह के हाथ से पिन लेकर मेरी कमीज पर लगा दिए जिससे मेरी कमीज का कुछ पर्दा सा बन गया ।

और जब चलने के लिये उन दोनों ने कहा तो मेरे पांव कांपने लगे ।

"आइए। हम आपको घर तक छोड़ आयेंगे। आप चिन्ता न करें वह भविष्य में आपको कुछ नहीं कहेगा। आज तो बचकर निकल गए क्योंकि हमें पूरी बात का पता नहीं था अगर फिर उन्होंने कोशिश की तो उनको जिन्दा जमीन में गाड़ दूंगा।" अलीसाबरी की यह बात सुनते ही मैं उस दोनों के पीछे भारी भारी पग उठाती हुई घर की ओर जाने लगी।

"आप आगे हो जाइए हम ने तो आपका घर नहीं देखा?" आसासिंह ने मुझे धीरज देकर कहा।

मैं उनके आगे आगे चलती रही और घर पहुँचते ही माँ से लिपट गयी। मैं तो यह भी भूल गयी थी कि मेरे साथ आसासिंह और अलीसाबरी भी हैं। और मेरी यह हालत देखकर बदहवासी में माँ की चीख उसके मुँह में ही दब कर रह गयी।

माँ मुझ से लिपट कर रोने लगी और रोती रही मेरे मुँह से बात तक नहीं फूट रही थी और माँ ने मुझे कसकर अपनी छाती से लगाया हुआ था। न जाने कितनी देर तक माँ मुझे थामे हुए थी कि अलीसाबरी ने मेरी माँ के कन्धे पर हाथ रख दिया।

"माँ बस करो, बहुत हो चुका। आप चिन्ता न करें आपकी बेटी को कुछ नहीं हुआ है।" फिर अनायास ही माँ के हाथ ढीले पड़ गए और अपने आँसुओं को पोंछती हुई उन दोनों को बैठने के लिए कहा।

मैंने माँ को केवल इतना ही कहा —"मां आज अगर ये न होते तो मैं हमेशा-हमेशा के लिए बरबाद हो जाती।" इसके आगे मैं कुछ न कह सकी।

"मैं अपने इन लालों का शुक्रिया कैसे अदा करूं" मेरी माँ ने उन दोनों की ओर देखा और साथ ही बैठने का आग्रह किया। वह

दोनों अन्दर आ कर बैठ गए। लेकिन जब मां ने अपने हाथों को देखा तो वह मेरे रक्त से लथपथ थे।

"खून। यह क्या इन्दु को चोट लगी है क्या ?" और आसा सिंह के यह शब्द सुनते ही मैं मां के पास बैठ गयी और मेरी मां ने बालों में देखा तो कनपटी के पास चोट लगी थी और यह चोट कांच के टुकड़े की थी उसमें रक्त अभी रिस रहा था। लगभग एक पैसे के बराबर खरोंच लग गयी थीं। और यह वही दाग है दीदी जिसके विषय में आप पूछ रही थीं। जख्म तो ठीक हो गया लेकिन यह दाग अभी तक लगा हुआ है।

"अच्छा तो फिर क्या इसके बाद अलीसाबरी और आसासिंह कब तक बैठे रहे और तुम लाजपतनगर से कैसे यहां सुभापनगर आ गए ?" सुमन ने पूछा।

"उसके बाद मैं झटपट सिर को तौलिए से साफ करने लगी। रक्त बन्द हो चुका है और मां ने दोनों को चाय पीने के बाद आग्रह किया तो फिर चाय पीने के बाद अलीसाबरी ने कहा—

"मां अगर आप चाहें तो आप इस मुहल्ले को छोड़ दें" और फिर मेरी मां ने 'हां' में सिर हिला दिया शायद बहुत दुःख के कारण उसकी जबान बन्द हो गयी थी।

"अच्छा तो हम कल सवेरे आपके लिए मकान यहां से बहुत दूर ढूंढ़ देंगे जहां यह आवारा कुत्ते न पहुंच सकें।"

जब वह जाने के लिए उठे तो मां उन दोनों के कदमों में झुक गयी।

लेकिन आसासिंह ने शीघ्र पांव खींच लिए—"मां इतना लज्जित तो न करो। बहुत बुरा किया आप ने मां कभी बेटों के पांवों नहीं छुआ करती।"

एक सर्द आह भरते हुए अलीसाबरी ने कहा "काश ! मां अगर आपने गरम सीख हमारे सीने पर रख दी होती तो शायद हमें इतना दुःख न होता लेकिन आपके हमारे पांवों से झुकने से हमें बेहद दुख हुआ है ।"

मेरी मां चुप खड़ी थी लेकिन मैंने आगे बढ़ कर दोनों के कंधों पर हाथ रख दिए और कहा—"मम्मी की जगह पर मैं अपने भाईयों से क्षमा प्रार्थी हूँ" और इस पर दोनों मुस्कुरा पड़े और पांच मिनिट के लिए फिर बैठ गए ।

मौन को भंग करते हुए मैंने पूछा "क्या आप दोनों की बहुत घनिष्ट मित्रता है ?" लेकिन उन्होंने कोई जवाब न दिया शायद वह मां के व्यवहार से रुष्ट हो गए थे । मैंने फिर विनम्र स्वर में कहा "कोई बात नहीं आप मेरी मां की बात पर नाराज न हों । यदि आप लोग मेरी सहायता के लिए न आए होते तो मैं सदा सदा के लिए बरबाद हो जाती और अब जब इस बरबादी से आप लोगों ने मुझे बचा दिया है तो मेरी मां खुशी से पागल हो गयी हैं और पागलपन में इन्सान से क्या कुछ नहीं हो जाता ।" मैंने यह सब कुछ एक ही सांस में कह दिया था ।

दोनों ने मुस्कुरा कर मेरी ओर देखा और मैंने फिर अपना प्रश्न दोहराया" क्या आप लोगों की बहुत घनिष्ट मित्रता है ?"

तो उत्तर में आसासिंह ने मुस्कुरा कर अलीसाबरी की ओर देख कर कहा, "हां है तो सही लेकिन अब हमारा झगड़ा भी उतना ही जबरदस्त होने वाला है ?"

"वह कैसे ?" मां ने उत्सुकता से पूछा ।

"देखिए मां जी । अब तो आप ने पूछ ही लिया है तो बात अब साफ-साफ ही होनी चाहिए ।" आसासिंह ने अलीसाबरी की

ओर देखा, "आप मुसलमान हैं और मैं जट सिख। हम दोनों बचपन से ही एक ही गाँव में जन्मे और पढ़े लिखे। लेकिन अब जब हम जवान हो गए हैं तो हम दोनों के सामने एक समस्या उठ खड़ी हुई है और वह है विवाह की ?"

आसासिंह ने सांस लेकर फिर कहना शुरू किया। "यह मियां जी कहते हैं कि तू हमारी बिरादरी में शादी कर और मैं इसको कहता हूँ कि तू हमारी बिरादरी में विवाह कर। अब हमने यह फैसला कर लिया कि किसी भी जाति में विवाह हो लेकिन दोनों बहनें होनी चाहिए, सहेलियां नहीं।"

हम सुनते ही हम चारों हँस पड़े। और साथ ही अलीसाबरी ने मुझे यह भी कह दिया "यह शरारती जनक, तुम्हारी सहेली ही मालूम पड़ती है वरना राजेश को क्या पता था कि तुम इस समय इधर से आओगी।"

"हाँ बेटा। यह बात तो आप ठीक कह रहे हैं। यह मेरी बच्ची, जनक की छोटी बहिन के साथ पढ़ती है और फिर राजेश जनक से कहलावा कर इन्दु को पिक्चर ले गया और तभी यह सब हो गया। नहीं तो उस मुए हो क्या पता था कि इन्दु पिक्चर देखने गयी है। लेकिन तुम दोनों की जोड़ी अलग नहीं होनी चाहिए।"

"अब यह फैसला तो आप ही कर दीजिए कि मैं इसकी बिरादरी में शादी करूँ या जट सिख मेरी बिरादरी में विवाह करे। और हां माता जी क्षमा करना हमें ऐसी बातें इन्दु बहिन के सामने तो नहीं करनी चाहिए थीं।" अलीसाबरी लजा सा गया।

"अब करने के बाद क्यों पछताते हो।" मैंने धीमी सी

"अच्छा तो अब आप फैसला भी सुना दीजिए ?"

"समय आने पर, पहले नहीं।" कहते-कहते मैं लजा गयी।

उसके बाद वह दोनों चले गए लेकिन अगले दिन सवेरे ही आ गए थे और हम लाजपत नगर छोड़ कर सुभाष नगर में रहने लगे।

शोभा बहुत देर से बाहर खड़ी सुमन और इन्दु की बातें सुन रही थी और जब उसने कमरे में प्रवेश किया और मुस्कुराते हुए सुमन से कहा "इन्दु दीदी को कुछ जल पान ही कराया होता—तुम्हारी सफलता पर बधाई देने आई हैं।"

इन्दु ने आँखें उठा कर मां को देखा और चंचलता से कहा, "मां जी दीदी बहुत चालाक हैं मुझे बातों में ही लगाये रखा।"

"अच्छा अब तू जा और चाय बनाकर ला।" इन्दु बाहर चली गयी और सुमन और शोभा कमरे में बैठी थीं शोभा ने देखा कि सुमन किसी गहरे सोच में खो गयी। लेकिन उसके चेहरे के भाव नहीं बदले थे।

"क्या सोच रही हो सुमन।"

"कुछ नहीं ?"

"सुन ली इन्दु की बात।"

"जी हाँ।"

"फिर ?" शोभा के आँखों में प्रश्न था।

"मुझे मंजूर है। आप विश्वास रखिए माता जी इन्दु मेरी छोटी बहिन है। मैं इन छोटी-छोटी बातों की परवाह नहीं किया करती।"

योजना अनुसार सुमन बाहर चली गयी और शोभा ने इन्दु से कहा—'बेटी !"

"बेटी" —इन्दु ने यह शब्द मन ही मन दोहराये क्योंकि शोभा ने आज तक कभी इन्दु को बेटी शब्द से नहीं पुकारा था वह हमेशा उसको नाम से पुकारा करती थी।

"इन्दु ! तुम मुझे यों आश्चर्य से क्यों देख रही हो। इन्दु अब तुम परीक्षा में पास हो गयी हो अब मैं तुम्हारे हाथ पीले करना चाहती हूँ।"

"मां"…एक खिंची हुई आवाज इन्दु के अंतड़ियों से निकली।

"हां बेटी"—शोभा ने इन्दु को गोदी में भर लिया, "क्या तुम्हें सुमन दीदी का पति इन्दर पसंद है ?"

यह सुनकर इन्दु मां की गोद से एक झटके से अलग हो गयी—"यह क्या कह रही हैं आप ?"

"हाँ बेटी—तुम्हारी सुमन दीदी की सन्तान नहीं होती इसलिये वह तुम्हें अपने पति की पत्नी बनाना चाहती है ?"

"सन्तान नहीं होती या नहीं हो सकती ?"

"सन्तान नहीं हो सकती जिंदगीभर" —शोभा ने दृढ़ता से कहा। क्योंकि सुमन ने अपने आपरेशन की बात शोभा को बतादी थी।

"हाँ बेटी यदि आपको लड़का पसन्द है तो…?"

इन्दु ने बात बीच में ही काट दी—"मां तुमने मां होकर मुझे एक विवाहित पुरुष को मेरा पति बनने के लिये कह कर बहुत बड़ा गुनाह किया है लेकिन तुम मेरी मां हो।……अगर तुम्हारी जगह कोई और होता……

"ऐसा न कहो बेटी जीवन दीपक की भाँति क्षण भंगुर है और फिर मेरा जीवन तो उस टिमटिमाती लौ की भांति है जो हवा

का एक हल्का सा झोंका लगते ही बुझ सकती है। पानी के एक बुलबुले के टूटने में देर लग सकती है बेटी, लेकिन मेरा जीवन बहुत खोखला हो चुका है। मेरी सांस का कोई भरोसा नहीं कि नीचे जाने वाली सांस ऊपर आयेगी कि नहीं।"

इन्दु सब कुछ सुनती रही और साथ ही साथ शोभा के मुरझाती झुर्रियों में अटके हुए आँसुओं को भी देखती रही, शोभा कहती गयी—

"बेटी एक विधवा के सामने इससे बढ़ कर और विषम समस्या क्या हो सकती है कि उसके सिर पर एक जवान बेटी सवार हो···।'

शोभा ने ऊपर आँखें उठा कर इन्दु की ओर देखा और उत्तर में इन्दु के मुख पर गम्भीरता···

"बेटी मेरी बात का अगर तुम बुरा भी मान गयी हो तो मैं अपनी बेटी से इसके लिये क्षमा······"

"मां!" इन्दु ने शोभा के थरथराते होठों पर हाथ रख दिए, "मां आप जो कुछ भी करेंगी मेरी भलाई के लिये होगा—मुझे आपका आशीर्वाद चाहिये अगर सच्चे दिल से तुम्हारा आशीर्वाद मेरे साथ हो तो मैं दुनिया की हर ठोकर का सामना कर सकती हूँ।"

इतना कह कर इन्दु शोभा के सीने से सट गयी और उसके आँखों में इन्दर की मोहिनी मूरत और उसकी सुहावनी सूरत नाच उठी और साथ ही साथ वह होली वाले दिन की कल्पना में खो गयी।

सुमन ने अन्दर प्रवेश किया और बहुत देर तक चुप खड़ी रही। शोभा ने अपनी बोझिल आँखें ऊपर उठाई और सुमन को

पास आने के लिये कहा—

शोभा ने इन्दु का हाथ सुमन के हाथ में दे दिया, "मुझे आप पर विश्वास है बेटी, न मुझे आप के पिता से और न ही पति से बात करने की आवश्यकता है आपकी सच्ची बातों पर मुझे पूरा भरोसा है—आज से इन्दर मेरा बेटा है और जैसे इन्दु मेरी बेटी है वैसे तुम भी—इन्दु प्रभात के ओस कण की भाँति निर्मल, फूलों की पंखुड़ियों की भाँति कोमल और समीर भोली भाली है बेटी सुमन—इतना याद रखना कि कहीं इस बंद कली को फूल बनने से गरम हवा न लग जाय क्योंकि यही मेरा जीवन है यही इन्दु मेरा संसार है। अपनी इस गरीब दिल की रौनक और बुढ़ापे की मुस्कराहट को फूलों में गूंथ कर तुम्हारे देवता इन्दर के गले में तुम्हारे कहने पर डाल रही हूँ यदि इससे कभी कोई भूल हो जाये तो इसे मेरी भूल समझ कर क्षमा कर देना—बेटी सुमन ··" कहते कहते शोभा का दामन आँसुओं से भीग चुका था।"

"आप मुझ पर विश्वास रखिए मां—

× × × ×

"तुम्हें इसके लिये—सुमन—यदि सचमुच तुम मेरे वंश का चिराग रोशन करना चाहती हो तो तुम्हें एक बलिदान और करना होगा ?" इन्दु ने प्रश्न भरी दृष्टि सुमन के मुख पर गाढ़ दी।

"वह भी कह डालिए ?"

"तुम्हें यहाँ प्रतिदिन आना पड़ेगा।"

"वह तो आऊंगी ही लेकिन मैं तुम्हें यह भी बताना चाहती हूँ कि इन्दु के इस घर में कदम रखने के बाद मेरे तन पर आपका कोई अधिकार नहीं रहेगा ?"

"केवल तन पर या मन पर भी ?"

मन और आत्मा सदा तुम्हारी रहेगी।"

"सुमन !" चीखती हुई आवाज में इन्दर ने पुकारा, "कहीं

तुम्हारा किसी और से प्रेम सम्बन्ध तो नहीं है और ऐसा तो नहीं कि इन्दु के इस घर में आने के बाद तुम कहीं और विवाह कर लो।"

"यह तो वही बात हुई कि कोई सस्ती भेड़ मेले से खरीद लाया था तो उसकी पत्नी उस भेड़ की पूंछ बार बार उठा कर देखती कि कहीं यह कुतिया तो नहीं।" यह सब सुमन ने मुस्करा कर कहा।

यह मुंह तोड़ जवाब सुन कर इन्दर हैरत में पड़ गया, "क्या ऐसी नारी भी कोई हो सकती है जो जीते जी अपना सुहाग किसी और के हवाले कर दे।"

"आप इतने हैरान क्यों हो रहे हैं ? मैं भी यहाँ सदा आती रहूँगी लेकिन शायद तुम घबरा रहे हो कि इन्दु का अधिक बोझ तुम पर लाद रही हूँ।"

"बोझ काहे का सुमन"—इतना कह कह इन्दर की आँखों पर अँधेरा छा गया और वह सुमन से लिपट गया "मैं तेरे बिना एक मिनट भी नहीं रह सकता तुम ही मेरी दुनिया हो तुम ही मेरी मंजिल हो—तुम ही मेरी आत्मा की शांति हो सुमन ··।"

× × × ×

इन्दु दुल्हन बन गयी थी लेकिन शहनाइयों की साया में उस की डोली नहीं गई थी उसने लाल चूड़ा गोरी कलाईयों पर पहन रखा था लेकिन उन चूड़ियों में झंकार नाम मात्र को भी नहीं थी। वह दुल्हन बनी बैठी थी लेकिन उसके दिल की धड़कनें बन्द थी उसके पहलू में मीठी-मीठी खलिश नहीं थी।

इन्दु के मन में वह उमंगें नहीं थीं जो दुल्हनों की आँखों में तिरछी चितवन बनकर, ओठों पर मधुर हास्य बन कर और अंग-अंग में आलस्य बनकर प्रकट होती हैं।

इतना सब कुछ होते हुए उसके होठों पर अनायास ही भूली-

झटकी मुस्कान दौड़ गई। उसके दिल ने हौले से कहा—इन्दु आज तो तू दुल्हन है और दुल्हन भी उस पति की जिसकी पहली पत्नी भी जीवित है।

उसके मन में हृदय में एक विचित्र प्रकार की शंका समा गई थी। रोम-रोम में एक अज्ञात भय का संचार हो रहा था कि न जाने क्या होगा ?"

उसने एक सर्द आह भरी-हाँ मेरी माँ का क्या कसूर, लड़का अच्छा है, स्वस्थ्य है, सुशील है और उसको होली वाले दिन की याद आ गई जब इन्दर ने उसे पानी पिलाया था। कितना हसीन पति है मेरा लेकिन क्योंकि उसकी दूसरी शादी है इसलिए काम शास्त्र के सारे मन्त्रों से भली-भाँति परिचित होगा और मैं—मैं – क्या बस मैं तो मुँह बन्द कली इन्दु ने अपने आप पर प्रश्न किया ?

"क्या मुझे अपने पति से राजेश वाली बात बतानी चाहिए ?"

राजेश की याद आते ही उसका दिल और जोर से धड़कने लगा। नहीं पगली ऐसी बातें विशेष कर पहली रात तो पति से नहीं करनी चाहियें और फिर वह जैसे कि सुमन दीदी ने कहा है कि क्या पता है कि राजेश किस घाट का पत्थर है और फिर भला मेरा पति राजेश को क्या जानता होगा। नहीं-नहीं– मुझे ऐसी वैसी कोई बात नहीं करनी चाहिए और अगर राजेश कहीं इनका परिचित हुआ तो ··? तो···? सोचते-सोचते वह अभी पूरी तरह से संभल भी नहीं पायी थी कि अनायास ही आहट ने इन्दु के विचार को झकझोर दिया और फिर वह और सिकुड़ कर बैठ गई।

आने वाले ने इन्दु के पलंग के पास वाली खिड़की खोल दी और हवा के नाचते हुए झोंके इन्दु के घूंघट से खेलने लगे। इन्दु से आँचल संभालना भी कठिन हो रहा था।

"हम से कैसा घूंघट ?" सुमन इन्दु के पास चली गई और

उसको अंक में भर लिया।

"दीदी—?" इसके आगे इन्दु कुछ न कह सकी।

"मैं तुम से आज पहली बार कुछ जरूरी बातें करने आई हूँ इन्दु।" और उसने इन्दु का चेहरा अपनी ओर कर लिया।

"देखो—तुम ने मुझे दीदी कहा है लेकिन इस नाते से भी बढ़ कर मैं तुम्हें अपना सुहाग सौंप रही हूँ केवल इसलिए कि इन्दर के बुढ़ापे का कोई सहारा हो। हो सकता है कि मैं कहीं मर भी गई —"कहते-कहते सुमन के होंठ थरथराने लगे।

इन्दु ने उसके मुँह पर हथेली रख दी।

"दीदी आप यह क्या कह रही हैं ऐसी अशुभ बातें—

"नहीं-नहीं ऐसी कोई बात नहीं। हाँ ठीक है मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।" सुमन ने इन्दु को अंक में भर लिया "इन्दु इन्दर को कभी उदास न करना और तुम से जितना भी बन सके उस की सेवा करना बस मेरी यही प्रार्थना है तुम से। मुझे और कुछ नहीं कहना।"

"एक बात पूछूं दीदी।" इन्दु ने विनम्र स्वर में कहा।

"पूछो।"

"आप को तो पता ही है कि मेरी माँ ने आप पर विश्वास कर के मेरी जिन्दगी को दाव पर लगा कर यह खेल खेला है नहीं तो मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मेरा ब्याह ऐसे आदमी से होगा जिसकी पहली पत्नी जीवित होगी। लेकिन मैं आप को सत्य बता रही हूँ दीदी शायद मेरी माँ ने यह दाव इस लिए लगाया है कि मेरी राजेश के साथ जो मुठभेड़ हुई थी वह उस कलंक से डरती थी कि मेरा विवाह भी नहीं हो सकेगा। हाँ दीदी मैं आप से यह पूछ रही थी कि क्या मैं यह बात उनको भी बता दूं?"

"नहीं तुम्हें यह सब उनको बताने की आवश्यकता नहीं है।

मैंने बातों ही बातों में सब बतला दिया है।

इन्दु तू मुझे कितनी अच्छी लगती है काश ! मैं पुरुष होती और तू मेरी पत्नी।"

इन्दु लजा गयी। "दीदी आप भी कैसी बातें करती हैं" मैं तो आप को दीदी कहे जा रही हूँ और तुम न जाने किस दुनिया में खो गई हो।

इन्दर बाहर पर्दे के पास खड़ा यह सब कुछ सुन रहा था लेकिन वह दोनों इतनी धीरे-धीरे बातें कर रही थीं कि बाहर अगर जा सकती थी तो केवल सुमन की आवाज और वह भी बहुत कम और इन्दु का तो शायद इन्दर ने एक शब्द भी नहीं सुना क्योंकि वह दुल्हन की तरह वास्तव में ही धीरे-धीरे बोल रही थी।

"अच्छा तो अब तुम सो जाओ। कल तुम लोग कश्मीर जाओगे।"

"कश्मीर।" इन्दु ने विस्मय से पूछा।

"घबरा क्यों गई हो। आज वह तुम्हारे यहाँ नहीं आएंगे। तू कल सवेरे ही उनको देख सकेगी।" इन्दु लजा गई और सुमन कहती गई "सैर सपाटे के लिए बस एक ही तो जगह है और वह है कश्मीर—।"

काश्मीर—कौन ऐसा होगा जिसने रुपहले फूलों से लदी काश्मीर घाटी के बारे में न सुना हो, जहाँ एक ओर भव्य विहार उद्यानों और चीड़ के सघन वृक्षों से आच्छादित घाटियों के पार्श्व भागों की शोभा, तो दूसरी ओर निर्मल जल से भरी झीलों की आभा और विशेष कर हरे भरे चरागाह और इस समृद्ध घाटी में रंगबिरंगे फूलों से अलंकृत रमणीय लताकुंजों की छटा तो इस संसार में अपना कोई सानी नहीं रखती। और सत्य भी तो है इस रमणीय घाटी से अधिक मनोरम स्थान और हो भी कहाँ सकता है। चंचल

झरने डल झील के किनारे से नसीम बाग की ठण्डी छायादार जगहों में उन्मुक्त क्रीड़ा करने या लालारुख के रोमांस की मधुर स्मृतियों से अनुरंजित शालीमार की सीढ़ी—उन बागों में खेलने का शुभ अवसर इन्दु और इन्दर को भी मिला। इन्दर तो कई बार सुमन के साथ आ चुका था लेकिन इन्दु का यह पहला अवसर था और वह भी तत्काल विवाह के बाद।

इसी सुन्दर स्थली में इन्दर और इन्दु भी स्वच्छ और खुले वातावरण में भ्रमण कर रहे थे।

चलते-चलते नहर के किनारे-किनारे से वह झरने की ओर हो लिये क्यारियों में रंग-बिरंगे नाना प्रकार के फूलों के तखते से बिछे थे। इन्दर ने अनायास ही एक हल्के गुलाबी रंग का फूल तोड़ लिया और चलते-चलने उसकी सुन्दरता को निहारने लगा। इन्दु की दृष्टि भी उस फूल पर जमी हुई थी।

मन्द पवन में लहराती हुई खिले हुए फूल की पंखुड़ियाँ यूं लग रही थीं मानो किसी भय से स्वर्ण सुन्दरी के महीन होंठ थरथरा रहे हों। उन फूलों से दृष्टि हटा कर इन्दर ने फूल को चूम लिया और एक नजर इन्दु की बल खाती हुई जुल्फों को देख कर मुस्करा पड़ा।

इन्दु इसी विचार में खोयी हुई थी कि इन्दर यह फूल उसके केशों में सजायेगा लेकिन इन्दर मौन था ''उसको सुमन की याद आ गई कि वह दो बार उसके साथ आई थी और उसने कई बार ऐसे फूल उसके जूड़े में लगाये थे लेकिन न जाने आज क्यों इन्दु के केशों में फूल लगाने से उसके हाथ कांप कर रह गए।

प्रेम की बात करते-करते जब कभी इन्दु कोई हँसी, मजाक, कल्लोल करती और जब कभी वह इन्दर को ऐसी गंभीर हालत में पाती तो इन्दु अपना मन मसोस कर रह जाती। कश्मीर में आये

हुए कई दिन हो गए थे। इन्दु ने एक बार इन्दर की ओर गंभीर मुद्रा में देखा, और इन्दर ने फूल को मसल कर पानी में फेंक दिया।

'आपने तो फूल को मसल डाला ?'

"फूल की किस्मत में मसलना ही लिखा है।"

"जैसे परवाने की किस्मत में जल कर भस्म हो जाना।"

इन्दर ने इन्दु की बात का कोई जवाब न दिया वह दूर नहर के जल में बिखरी हुई फूल की पंखुड़ियों को बहते देखता रहा। उसे यह अनुभव हुआ जैसे उसकी आशायें सिमटकर एक फूल सी बनीं और फिर अचानक भाग्य की किसी भयंकर झपट से बिखर गयी। मन ही मन उसने सुमन को पुकारा लेकिन उसके साथ तो आज इन्दु थी सुमन नहीं।

अनायास इन्दु के स्पर्श से उसकी विचार शृंखला टूट गई। इन्दु ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। इन्दर ने भी उससे कन्धे पर हाथ रख दिया। इन्दर उसकी अलसायी आँखों के सम्मुख विवश हो गया। इन्दु का कोमल हाथ, उसे ऐसा लगा मानों उसे कोई रेशमी तारों से छेड़ कर गुदगुदा रहा हो।

लम्बे मौन को तोड़ते हुए इन्दु ने कहा, "शायद आपको सुमन की याद आ गयी ?"

इन्दु ने दबे स्वर में कुछ ऐसे भाव से कहा कि दोनों के होठों पर एक साथ चुलबुली सी मुस्कुराहट दौड़ गयी और दोनों अनायास खिलखिला कर हँस पड़े।

"लेकिन तुम ने क्योंकर जान लिया ?"

"कुछ बातें ऐसी भी होती हैं।"

"मेरा ख्याल था आप फूल मेरे जूड़े में लगायेंगे ?"

"तो यह तुम्हारा ख्याल ही था या आशा भी ऐसी ही थी।"

"कुछ ही समझ लीजिये।"

इन्दर ने इन्दु के कान में ही कुछ कह दिया और इन्दु लजा कर रह गयी।

इन्दु का चेहरा मारे प्रसन्नता के तमतमा रहा था उसके बाल उड़-उड़ कर उसके माथे पर आ जाया करते थे उसकी अलसाई आंखें अत्यधिक सुन्दर लग रही थीं। दोनों एक दूसरे के साथ-साथ लगे हुए चल रहे थे। कभी-कभी दोनों एक दूसरे का हाथ थाम लेते। इन्दु कोई बात कहती तो इन्दर उसकी ओर झुक जाता था और फिर दोनों खिलखिला कर हंस पड़ते।

इन्दर ने इन्दु की कमर में हाथ डाल दिया और सहारा देते हुए पेड़ों की घनो छाया तले बढ़ गये। दोनों को ऐसा अनुभव हो रहा था मानो वह किसी सुहानी मंजिल की ओर बढ़ते जा रहे हैं। शीतल पवन के चुलबुले झोंके उनके शरीर को स्पर्श कर रहे थे किन्तु उन्हें फिर भी हल्की सी गुदगुदी देने वाली गर्मी अनुभव हो रही थी।

मौन को तोड़ते हुए इन्दर ने कहा "कहिए अब तो मुझे सुमन की याद नहीं आ रही है?"

"आप तो शायद मेरी बात का बुरा मान गए?"

"नहीं तो। ऐसी कोई बात नहीं इन्दु। बस मैं तुम से एक मोटी बात कहता हूँ कि तुम मेरी पत्नी हो और सुमन केवल मेरी पत्नी ही नहीं थी बल्कि मेरी प्रेमिका भी।' तुम मेरी जिन्दगी में आ भी गयी लेकिन अब भी सुमन का अधिकार मुझ पर पहले जैसे ही है। इन्दु अब मैं तुम्हें क्या बताऊं कि मैं उसके बगैर एक पल भी नहीं रह सकता था लेकिन अब तुम आ गयी हो तो मुझे तुम्हारे साथ घूमना पड़ता है लेकिन सुमन की याद मुझे बराबर आती रहती है।"

"आपको दीदी की याद आती है और मेरा तो जैसे उसके

वगैर दिल लग जाता है। मैं तो चाहती हूँ कि अब दस दिन और क्या रहना है ? चलो बस सैर हो गयी है अब घर वापस चलें।"

"देखा जाएगा। लेकिन आज तो खूब सैर कर लो।"

"इन्दु का शरीर पग-पग पर बल खा रहा था और वह धीरे-धीरे दबे शब्दों में बातचीत कर रही थी। आज उसकी वाणी में जाने कहाँ से इतनी मधुरता आ गयी थी कि इन्दर आसपास के सौन्दर्य को भूल कर उसकी वाणी की थिरकन पर डोलता रहा, डोलता रहा और देखता रहा कि इन्दु के कदमों के स्पर्श से प्रत्येक वस्तु में सौन्दर्य की आभा छलक रही थी।

\+ \+ \+

विवाहित जीवन के तीन महीने में ही इन्दु का रंग निखर आया था। देह भर कर सुडौल हो गयी थी। अंग-प्रत्यंग की शोभा कुछ और ही हो गयी थी। और होती भी क्यों नहीं, कली तो अलि के स्पश से ही खिलती है।

आकाश में चांदनी छिटकी हुई थी। वातावरण में एक उज्जवल निखार था। रात आधी से अधिक बीत चुकी थी। चन्द्रमा अभी तक पूरे यौवन से गगन में चमक रहा था। सब सपनों में खोये मीठी नींद सो रहे थे लेकिन इन्दु को नींद नहीं आ रही थी। पिछले दो दिनों से उसका जी फीका-फीका रहता था और अब तो उसकी कटि में हल्का-हल्का सा दर्द हो रहा था। वह करवट बदलते-बदलते थक गयी थी। इन्दर भी साथ ही पलंग पर सोया पड़ा था। इन्दु का दर्द बढ़ता गया और उसका दर्द सिसकियों में बदल गया। सिसकियाँ सुन कर इन्दर की नींद खुल गयी और इन्दु को रोता देखकर वह घबरा गया। बिजली की सी तेजी से उठकर इन्दु के पलंग पर आ गया।

"इन्दु···।" अधखुले नेत्रों से इन्दु न इन्दर की ओर देखा।

"क्या बात है इन्दु तुम रो रही हो ?" इतना कह कर इन्दर ने इन्दु का सिर गोदी में भर लिया।

"नहीं तो मुझे तो पीठ में दर्द सा महसूस हो रहा है।"

"तो पहले क्यों नहीं बतलाया।" इन्दर के हाथ इन्दु के कटि पर पहुँच गये।" कहो तो अभी डाक्टर को टेलीफोन कर दूं।"

"लेकिन टेलीफोन घर पर तो है नहीं दूसरे के घरों में इस समय जाना ठीक नहीं है। सवेरे ही डाक्टर के पास चली जाऊँगी।

इन्दर के हाथ लगातार इन्दु की पीठ को सहलाते रहे। सहलाते रहे और इन्दु कहती गयी "आप सो जाइए।"

"ओह तो तुम अभी तक जाग रही हो ?" इन्दर की आँखों से दो गरम गरम आंसू ढुलक कर इन्दु की पीठ पर गरम सलाख की तरह लग गए।

"आप क्यों रो रहे हैं ?"

"कुछ नहीं।"

"कुछ तो जरूर है। क्या आप मुझे नहीं बतायेंगे ?"

"इन्दु तुम्हें कैसे समझाऊँ जब से सुमन इस घर से गयी है मुझे चैन नहीं आता इन्दु रात की तनहाइयों में मैं उठ-उठ कर रोता हूँ इन्दु। तुम तो मेरी पत्नी हो इन्दु लेकिन वह मेरी प्रेमिका भी थी पत्नी भी और सब कुछ—"इससे आगे इन्दर कुछ न कह सका।

इन्दु तड़प कर उठ खड़ी हुई और उसने अपना हाथ इन्दर के हाथ पर रख दिया, "मैं आपको वचन देती हूँ मेरे प्राणनाथ कि एक बच्चे को जन्म देकर मैं सदा-सदा के लिए तुम्हारे और सुमन के रास्ते से हट जाऊँगी और अब भी मैंने सुमन दीदी को यह तो नहीं

कहा कि वह यहां न आयें। बल्कि मैं तो यही कहूँगी कि वह यहां पर रहें यह सब कुछ उनका है।"

"नहीं इन्दु यह बात नहीं है मैं बहुत लज्जित हूँ तुम्हारे सामने मैंने जो कुछ कहा है वह शायद तुमको बुरा लगा होगा लेकिन तुम्हें यह सब कुछ कह कर मेरे मन का बोझ हल्का हो गया है इन्दु। अब तुम सो जाओ इन्दु।" इतना कह कर इन्दर ने इन्दु की पीठ सहलानी शुरू कर दी।

खुले वातावरण में सफेद बिस्तर पर लेटी इन्दु यों प्रतीत होती थी मानो संगमरमर की कोई मूर्ति दूधिया चांदनी से नहा रही हो। चांदनी में उसका अंग-अंग निखरा हुआ था।

इन्दर उसे देखता रहा और वह पति का आदेश पाकर सो गयी। इन्दु सोचने लगा, क्या यह वही इन्दु है जिसकी एक झलक पाने के लिए वह प्रातःकाल उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा किया करता था। आज वही इन्दु उसके पहलू में पड़ी है।

सवेरा हुआ!

चाय आदि पीने के बाद इन्दर ने इन्दु को डाक्टर के पास चलने को कहा कि इतने में सुमन ने प्रवेश किया।

'ओह तुम आ गयीं।" इन्दर ने प्रसन्न मुद्रा में कहा।

"क्यों आपको आपत्ति है?"

"बहुत बड़ी आपत्ति है तुम से छुटकारा पाया तो इन्दु को अब सवेरे डाक्टर के पास ले जाने की बारी आ गयी है।

"क्यों क्या बात है?"

"पता नहीं सारी रात मैं सो ही नहीं सका, दर्द होता है उसको?"

इन्दु दूसरे कमरे में तैयार हो रही थी। सुमन ने आगे बढ़ कर उसको अंक में भर लिया "इन्दु कहाँ की तैयारी हो रही है?"

"दीदी तबियत खराब है ?"

"कैसी तबियत खराब है मैं भी तो जानूं ?"

"जी खट्टा-खट्टा महसूस होता है।"

"बस आगे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है तो फिर डाक्टर के पास जाने की आवश्यकता नहीं है।

"क्यों ?"

"री पगली बीजारोपण हो गया है ?"

"दीदी।" इन्दु लजा गई और वहीं पलंग पर बैठ गई।

इन्दर ने कमरे में प्रवेश किया "अजी यह बीजारोपण क्या होता है जी ?"

"जीव आने वाला है।" सुमन ने कहा।

"लेकिन यह तो बताया ही नहीं मुन्ना है या मुन्नी ?" इन्दर ने हसरत भरी दृष्टि से इन्दु की ओर देखा।

कपिल और उसकी पत्नी ने भी उसी समय कमरे में प्रवेश किया।

कपिल ने कदम रखते ही कहा—"आज तीनों की क्या मीटिंग हो रही है।"

"अरे भाई तुम तो बिल्कुल ही बुद्धू हो कपिल जी। मेरी बीवी को कुछ होने वाला है।"

"अरे वाह हमें बताया तक नहीं। यह तो अच्छा हुआ कि मैं आ गया वरना मुझे तो पता तक ही न चलता। आज ही मैं एक साल के लिये बाहर जा रहा हूँ।"

"एक साल के लिये क्यों दो साल के लिये जाओ तुम्हारा कमरा भी खाली नहीं है इसलिये अब तुम्हारी आवश्यकता नहीं है।" इन्दर ने कपिल की पत्नी की ओर देख कर कहा जो वास्तव

में गर्भवती थी ।

"लाज तो जैसे तुम दोनों ने बेच खायी है ।" सुमन ने कपिल की पत्नी को पास बैठा दिया और इन्दर और कपिल की ओर देखने लगी ।

"देवी जी तुम्हारे सामने हम सब नत मस्तक हैं ।" कपिल सुमन की ओर देख कर कहता गया लेकिन तुम इस खुशी में आने वाले जीव के लिये क्या तोफा ले रही हो ।" कपिल ने सुमन की ओर देखा ।

"तोफा यह क्या लायेगी ।" इन्दर मुस्कराया और कहता गया हां अगर कर सकती है तो टेलीफोन तो हमारे घर में लगवा ही सकती है । और गाड़ी में अपने आप ही ले लूंगा क्योंकि अब तो संख्या बढ़ती ही जायेगी ।"

"तो कौन सी गाड़ी लेने का ख्याल है ?" कपिल ने इन्दर से पूछा ।

"सस्ती ही लेंगे ।"

"लेकिन हमारा जीवन सस्ता नहीं है ?

"तो मतलब साफ है कि गाड़ी तुम लेकर दे रही हो ।" इन्दर ने सुमन की ओर देखा ।

"सुमन तुम्हारे लिये गाड़ी खरीदेगी । छोड़ो मियां ।" कपिल ने इन्दर को कहा ।

"लगाओ शर्त ।" सुमन ने हाथ आगे बढ़ाया तुम्हें याद होगा एक शर्त तुम पहले भी हार चुके हो और यह भी लगा कर देख लो ।

"न बाबा हम शर्त तो नहीं लगाते । लेकिन मुझे विश्वास नहीं है तुम बीस बाईस हजार की गाड़ी लेकर इन्दु और इन्दर को

सैर कराओगी।"

"आज से पूरे एक महीने बाद बिल्कुल नई गाड़ी आयेगी। पीछे क्यों हठते हो। शर्त लगा लो।"

"तुम्हारे से शर्त लगाने से मैं बाज आया।" कपिल को हार माननी पड़ी।

काफी देर तक गपशप चलती रही क्योंकि आज शाम को कपिल ने एक साल के लिये बाहर जाना था।

\+ \+ \+

इन्दु के प्रत्येक अंग-अंग से आभा झटक रही थी क्योंकि इन्दर जो अब तक उसके लिये अपरिचित था अब चिरपरिचित सा हो गया था।

काश्मीर से वापसी पर पति की ही परिचर्या में लीन इन्दु अपने आपको बड़ा भाग्यवान समझने लगी। उसका चेहरा अब फूल की भांति खिल उठा। इन्दर भी उसे इन्दु ही कहता। उसकी मां का प्यारा नाम अब यहाँ भी चल गया था। इन्दर जब भी उसे इन्दु नाम से पुकारता उसका हृदय गद्-गद् हो उठता। प्रसन्नता से उसके नेत्रों में चमक आ जाती।

प्रतिदिन की भांति वह आज भी सूर्य की पहली किरण से जाग पड़ी। इन्दर के मुखड़े को जी भर के देखने के बाद उसके चरण छू कर इन्दु पलंग से उतरी और अपने काम में लग गयी। चाय आदि से निबट कर वह अभी इन्दर के पास बैठी समाचार पत्र के पन्ने उलट रही थी कि नौकर ने प्रवेश किया—"बीबी जी ताजी सब्जी आ गयी है ?"

"भई आज तो साहब से पूछ लो कौन सी सब्जी पकानी है क्योंकि आज तो इनके मित्र पधार रहे हैं ?"

"लेकिन मेरा मित्र अकेला तो नहीं है बल्कि उसके साथ उसकी पत्नी भी आ रही है इसलिये मुझे उसकी पत्नी की च्वाइस का तो पता नहीं है कि वह क्या चीज पसन्द करेंगी ?"

"भई यह भी खूब रही···"इन्दु मुस्करा पड़ी और उसने मुस्करा कर नौकर की ओर देखा "जाओ दुकान पर जो भी सब्जी मिले एक एक तोला सब ले आना······सब को मिला कर बनायेंगे ?"

नौकर विचित्र दृष्टि से इन्दु की ओर देखने लगा। इस पर इन्दर ने कहा···"आज तुम खुद ही सब्जी ले आओ···" कह कर इन्दर फिर समाचार पत्र में डूब गया जैसा वह कोई विशेष समाचार पढ़ रहा हो।

अपनी जगह से उठ कर इन्दु इन्दर के पास खड़ी हो गयी "लेकिन तुम्हें अपने मित्र का तो पता होगा कि वह क्या चीज पसन्द करता है ?"

"उसकी बचपन की पसन्द तो मुझे पता है जब वह और मैं इकट्ठे पढ़ा करते थे।"

"तो वह तुम्हारा सहपाठी मित्र है ?"

"जी हाँ ? कुछ आपत्ति है क्या आपको ?

"इससे क्या होता है लेकिन आप जरा उसकी च्वाइस जल्दी बतायें तो अति कृपा होगी ?"

"तरी वाली भिण्डी बना देना···"कह कर इन्दर मुस्कुरा पड़ा और इन्दु सब्जी लेने चली गई।

'तरी वाली भिण्डी।' इस वाक्य से इन्दर को राजेश की याद आ गई जब वह दोनों इकट्ठे पढ़ा करते थे तो एक दिन राजेश लाया था लेकिन उसमें मिर्चें जरा ज्यादा थी और जब वे दोनों

खाना खा रहे थे तो रोटी के हर कौर के बाद पानी पीना पड़ता था। राजेश पानी पी रहा था कि इन्दर ने सब्जी में पानी डाल दिया।

'यह क्या कर दिया…?" राजेश ने पूछा ?

"वैसे भी तो हर कौर के पीछे पीना पड़ता है अब पानी पीने की आवश्यकता नहीं रहेगी—इस पर दोनों मित्र खिला खिला कर हँस पड़े। लेकिन विद्यार्थी जीवन के बाद दोनों ही के व्यवसाय अलग हो गये थे राजेश दफ्तर में क्लर्क लग गया और इन्दर अपने भाई के साथ घड़ियों की दुकान पर बैठ गया और कल शाम को जब राजेश इन्दर की दुकान पर किसी के लिये घड़ियां खरीदने गया था तो उसने इन्दर को बताया कि उसका विवाह हो गया है… बचपन की मित्रता थी सो कभी-कभी का मिलना था · इस पर इन्दर ने उसको अपने घर पर खाने की दावत दी थी। आज राजेश अपनी पत्नी के साथ इन्दर के घर आ रहा था।

"तरी वाली भिण्डी बन गयी।" इन्दु ने मुस्कुरा कर कमरे में प्रवेश किया। "लेकिन यह तुम्हारा विचित्र मित्र दिखाई देता है जो तरी वाली भिण्डी पसन्द करता है… जरा हम भी तो जाने इस किस्से को ?"

इन्दर ने उसको बाह से पकड़ कर अपने पास बिठा लिया… "पहलू में जरा बैठो तो तुम्हें बता देगें।" इन्दू अभी पूरी तरह से इन्दर के गोद में बैठ भी नहीं पाई थी कि राजेश दरवाजे पर खड़ा मुस्कुरा रहा था।

"अकेले आये हो ?"

"नहीं तो।" राजेश मुस्करा पड़ा।

इन्दु और राजेश की नजरें टकराईं तो दोनों का रंग उड़

गया । राजेश के बढ़ते कदम जाम हो गये और इन्दू भी उसे देखती ही रह गयी ।

राजी, राजेश की पत्नी, जो राजेश के पीछे ही खड़ी थी, जब दोनों को इस हालत में देखा तो वह संभल गई ।

इन्दर भी समझ गया था कि शायद इन्दु और राजेश दोनों एक दूसरे को बहुत निकट से जानते हैं ।

राजेश की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि यह सत्य है या वह कोई चलचित्र देख रहा है। इन्दु और यहाँ राजेश का मस्तिष्क इस सत्य को स्वीकार करने से इन्कार कर रहा था क्योंकि इन्दु अब वह पहली वाली इन्दु नहीं रही थी वह तो कश्मीर की सैर से चटक गई थी और ठीक भी तो है विवाह के बाद उसके शरीर में कुछ अनोखा पन आ गया था ।

बड़ी कठिनाई से यह नीरवता इन्दर ने भंग की ।

"अन्दर आओ राजेश ।" इतना कह कर वह अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और उसने राजी के लिये नमस्ते कही और साथ में अन्दर आने के लिये भी कहा ।

इन्दर ने राजेश के कन्धे पर हाथ रख दिया···"मालूम होता है आप दोनों एक दूसरे को बहुत निटकता से जानते हैं ।" इन्दर ने पहले राजेश और फिर इन्दु की ओर देखा जो अब तक नजरें झुकाये चुपचाप खड़ी थी ।

राजी भी अपने पति की इस अवस्था को विमुख न कर सकी । साफ प्रकट था कि दाल में कुछ काला है—दोनों की केवल जान पहचान ही नहीं बल्कि जिन्दगी के किसी न किसी मोड़ पर आपस में टकराये भी हैं ।

राजेश ने एक बार फिर इन्दु को भरपूर दृष्टि से देखा अब की बार इन्दु पानी-पानी हो गई । और इन्दु शायद अधिक देर तक

खड़ा रहना नहीं चाहती थी इसलिये आगे बढ़ कर राजी के पास गई और उसको साथ लेकने दूसरे कमरे में ले गई।

इन्दर ने राजेश के कन्धे पर जो हाथ रखा था उसके उत्तर में राजेश ने भी उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा · "सचमुच यह इन्दु तुम्हारी पत्नी है ?"

"दिखाई नहीं दिया · मेरी गोद में ही तो बैठी थी···लेकिन तू इसे कैसे जानता है।"

"यह तो हमारे दोस्त के मुहल्ले की हूर थी।"

"कौन सा तेरे बाप का मुहल्ला था।" इन्दर खिलखिला कर हँस पड़ा "तेरे से कोई मुहल्ला बचा भी है जो तेरे से बचा होगा वह कसर तेरे दोस्तों ने पूरी कर दी होगी।"

"लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता कि तुमने इससे विवाह किया होगा।"

"तू बोले जा रहा है और मेरी बात का जवाब नहीं देता ·· पहले तू यह बता कि तू कैसे जानता है इसे ?"

"यह तो विधवा शोभा की लड़की है।"

"हमें पेड़ गिनने से क्या मतलब। ले उस्ताद सास का नाम तो मुझे भी नहीं पता। लेकिन तुम तो इसकी मां को भी पहचाते हो मालूम पड़ता है गहरी जान पहचान है ?"

"मैं तो इन्दु की रग-रग से वाकिफ हूँ लेकिन मुझे यह अब भी विश्वास नहीं हो रहा कि यह तुम्हारी पत्नी है।"

"अपनी आँखों से देख तो लिया है कि वह मेरी घरवाली है।"

"खुश रहो प्यारे—फिर तो मुबारिक हो यह शादी तुम्हें।" कहते कहते राजेश की आंखों में एक कुटिल मुस्कान फैल गयी। और फिर उसने विश्वास भरे शब्दों में कहा—"लेकिन यह तेरी गोद आबाद करने से पहले कइयों की गोद आबाद कर चुकी है और

न जाने कितनों ने इसकी कमर में हाथ डाले होंगे और हाथ कब कमर तक पहुँचता है और फिर उसके आगे आगे क्या होता है यह तो तू स्वयं ही जानता है।

"राजेश—" फटी आँखों से इन्दर ने राजेश की ओर देखा और राजेश मुस्करा रहा था क्योंकि अब उसको अच्छा अवसर हाथ लगा था इन्दु से बदला लेने का—क्योंकि वह उसके मित्र की पत्नी थी और फिर राजेश ने अपनी कलाई पर लगे निशान की ओर देखा जो उसको आसासिंह ने धक्का दिया था और उसका हाथ बुरी तरह से घायल हो गया था जख्म ठीक हो गया था लेकिन निशान अभी तक बाकी था।

मौन को तोड़ते हुए इन्दर ने कहा—"खैर यह तो मुझे पता है कि कुछ लड़के इसके पीछे पीछे भवरों की तरह मँडराया करते थे।"

इन्दर की बात सुनकर राजेश ने अपनी नजर कलाई के निशान से हटाई और हँसकर इन्दर की ओर देखने लगा—"तुम्हें किसी ने पक्का उल्लू बना दिया है ?"

राजेश का यह कुटिल परिहास साथ वाले कमरे में सुनकर, इन्दु सिहर कर रह गयी। और राजी, राजेश की पत्नी देखने लगी इन्दु के चेहरे पर आते जाते रंगों को—और वह कुछ खोजने लगी। कुछ पढ़ने सी लगी उन रंगों को—किस हद तक यह पता नहीं।

"क्यों—इसमें उल्लू बनाने की क्या बात है सुमन ने इतना बड़ा बलिदान किया है।"

"लेकिन मेरी दृष्टि में यह सब बकवास है। मैं समझ गया हूँ कि तुम्हें इसका सबूत चाहिए और वह तुम्हें मिल जाएगा—क्योंकि सब मुहल्ले भर के लड़के इसको जानते हैं।"

यह सुनकर इन्दर का चेहरा मुरझा गया। इन्दु दूसरे कमरे में बैठी इतना तो जरूर समझ गयी थी कि बात उसके विषय में हो रही हैं किन्तु वह अच्छी तरह सुन न सकी। अनायास ही एक भय इन्दु के मन में घर कर गया।

"मैं आपके घर आई हूँ और आप न जाने किस सोच में डूबी जा रही हैं।" राजी ने इन्दु की थाह लेने के लिए कहा।

"जी बात ही कुछ ऐसी है।" घबराई हुई आवाज में इन्दु ने कहा।

"स्त्री होने के नाते एक बात कहूँ अगर बुरा न मानो तो ?" प्रश्नवाचक दृष्टि से राजी ने इन्दु की ओर देखा।

"जरूर—जरूर—क्यों नहीं ?"

"क्या आप इनको जानती हैं ?"

"किन को ?" वही घबराई आवाज।

"मेरे पति को।" राजी ने मुस्कराकर कहा।

"हाँ इतना तो अवश्य पहचानती हूँ कि वह लाजपत नगर में रहते थे।"

"और इससे आगे।" राजी को कुछ जानने की उत्सुकता हुई।

"लेकिन मैं इससे आगे कुछ और जानना चाहता हूँ।" इन्दर ने राजेश को कहा।

"बस इसे तो पूरी आजादी थी। इसकी माँ तो घर पर रहती ही कम थी और इसके घर में सब आजादी के साथ आया जाया करते थे।"

"राजेश।" इन्दर ने उसको चुप रहने का इशारा किया क्योंकि इन्दु अन्दर से कोई चीज लेने के लिए आ गयी थी। अचानक इन्दु को आता देख कर दोनों के मुख पर हवाईयां उड़ने लगीं।

25162
Cat......... Class No...............

खिची दृष्टि से इन्दु ने राजेश की ओर देखा और बिजली की सी तेजी से कमरे से निकल गई लेकिन राजेश इन्दु की इस दृष्टि से बहुत डर सा गया था मानो वह उसको वार्निंग दे रही हो। कुछ ऐसी वैसी बात कहीं तो तुम अपने लिए कांटे बोओगे। बाहर खड़ी इन्दु उसी तौलिया से नाक साफ करने लगी जो वह अन्दर से उठा कर लाई थी और वह ऐसा कोण बनाकर खड़ी हो गई जो उसने राजेश को अपने नजरों के घेरे में ले लिया और दूसरे ही क्षण वह वहां से चली गयी।

राजेश ने जो कुछ उगला था वह इन्दर के धमनियों में विष फैला चुका था। उसकी मशा जानना कठिन था। अब तक उसके मन में जो प्रेम सचित था, वह राजेश की एक हल्की सी चोट से उड़ता दिखाई दिया।

इन्दु सोचने लगी कि उसके मन में जो आशंका थी उसका अनुमोदन हो चुका है कि राजेश उसके विषय में बातें कर रहा है। तभी तो उसे देख कर एकदम उसने बात करना बन्द कर दिया था। उसे आभास हुआ कि उसके जीवन की ज्योति बुझाने के लिए राजेश आया है उसका सारा शरीर पसीना पसीना हो गया था।

इन्दर के माथे पर पसीने की चिकनाहट देखकर राजेश ने कहा। "अगर ऐसी बात न होती तो आजकल के जमाने में कौन अपनी बेटी को इस दाव पर लगा सकता है कि जिस आदमी की पहली पत्नी जीवित हो और कोई लड़की उससे विवाह करने पर राजी हो जाए। मैंने अब तक जो कुछ भी कहा है इस बात का सबसे बड़ा सबूत तो यह है। आप अगर इससे बढ़ कर कुछ कहें और चाहें तो वह सबूत भी मिल जायेगा।" कह कर राजेश को फिर इन्दु की खिची हुई दृष्टि याद हो गयी और वह थोड़ी देर के

लिए सहम गया।

इन्दर तिलमिला गया। राजेश उसके बचपन का दोस्त था। भला उसे इस प्रकार की बातें करने से क्या लाभ ? राजेश की बातें सुनकर वह क्रोधाग्नि में भड़क उठा। उसके जी में आया कि उठकर इन्दु का गला घोंट दे। ऐसी लड़की को तो मुँह लगाने से पहले डूब कर मर जाना कहीं अधिक अच्छा है। इन्दर यह सब कुछ गुमसुम सोचता रहा।

इन्दर को विचारों में डूबा हुआ देखकर राजेश ने सुअवसर जाना क्योंकि वह समझ चुका था कि अब लोहा काफी गरम हो गया है इसलिए इस पर अब वार करना चाहिए। "मैंने कहा कि फिजूल की बातें छेड़ दीं।" राजेश ने कृत्रिम पश्चाताप प्रकट किया लेकिन आग लगाने के बाद। "आया था तुम से मिलने और चर्चा कहाँ की छेड़ दी।"

"नहीं शायद तुम ठीक कहते हो लेकिन मुझे इस बात का सबूत चाहिये। वैसे तो सुमन ने मुझे कुछ बताया था लेकिन उसको मैं वैसे ही टाल गया था।"

"लेकिन क्या सुमन आजकल यहाँ नहीं रहती ?"

"नहीं वह तो कभी कभी यहाँ आती है वह तो अपने पिता के घर रहती है।"

तुमने यह क्या से क्या कर डाला। अभी दोनों की बातें हो रही थी कि नौकर ने चाय की ट्रे मेज पर रख दी। राजी और इन्दु भी चाय पीने के लिए आ गयीं। इन्दु चुपचाप चाय बनाने लगी और राजी नीचे नजरें किए इन्दु को देख रही थी कि राजेश ने इन्दर को कहा। राजी की ओर देख कर—"कैसी लगी आपको हमारी श्रीमती जी ?"

"हजारों में एक ?" इन्दर के होठों पर मुस्कान फैल गयी क्योंकि वह वातावरण को और गंभीर नहीं बनाना चाहता था। इन्दर की बात सुनकर राजी लाज से दोहरी हो गयी और इन्दु के चेहरे पर भी मुस्कान खेलने लगी तभी इन्दर ने कहा राजेश को, इन्दु की ओर देखकर।

"और आपको कैसी लगी हमारी श्रीमती जी ?"

"लाखों में एक ?" कहकर राजेश इतनी जोर से हंसा कि इन्दर की हंसी भी उसकी हंसी में डूब गयी।

"अब हजारों लाखों की बातें छोड़कर चाय पान कीजिए।" कह कर इन्दु ने चाय का प्याला राजेश की ओर बढ़ाया।

राजेश चला गया।

इन्दर कुछ देर तक अपने स्थान पर ही बैठा रहा। उसके आगे राजेश की बातें झूल रही थीं। उसकी ही गहराइयों में बहुत देर तक डूबा रहा। उठकर वह कहीं बाहर जाने लगा।

तो इन्दु उसके सामने आ गयी।

उसका चेहरा एकदम सफेद पड़ गया था।

"खाना तैयार है आप कहां जा रहे हैं ?"

"मुझे भूख नहीं लगी।"

इन्दु का उतरा हुआ चेहरा देखकर उसका शक और भी मजबूत हो गया।

पति का यह रूप देखकर इन्दु कांप उठी। हे भगवान् यह सब क्या होने वाला है। उसके अधरों से व्यथा में डूबी हुई एक दीर्घ निश्वास निकल गयी।

इन्दु वहीं पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ी देखती रह गयी और इन्दर बाहर चला गया।

लगभग दो घन्टे के बाद वापस आकर इन्दर पलंग पर लेट गया।

दीवार के छत की ओर एकटक देखता रहा वह सोच में डूबा हुआ था। उसके मन में बार बार आग भभक उठती। इन्दु के प्रति उसके मन में जो प्रेम था जितना आकर्षण था उससे द्विगुणित घृणा ने घर कर लिया था। बार बार उसके सामने इन्दु का घबराया हुआ रूप आता। इन्दु उसके मन से बिलकुल उठ गयी थी। उसने कभी सोचा न था कि एक सुन्दर मुखड़े वाली नारी का हृदय इतना कलुषित भी हो सकता है।

"आज आप सोचते ही रहेंगे कुछ खायेंगे नहीं ?"

इन्दर ने देखा इन्दु कैसी चोर सी बनी रही।

"मेरे कुछ न खाने से तुम्हारा क्या बिगड़ता है। पति के स्वर में व्यंग्य था।

सहमी हुई इन्दु ने पति की अन्तर की थाह लेने का प्रयत्न किया।

"आज आप नाराज मालूम पड़ते हैं ?"

इन्दर चुपचाप छत की ओर देखता रहा।

"मुझ से कोई अपराध हो गया है क्या ?"

इन्दर चुप था। जैसे कुछ सुना ही न हो।

"आप बोलते क्यों नहीं। यदि मुझ से कोई अपराध......"

अभी इन्दु बात पूरी भी कह नहीं पायी थी कि इन्दर ने एक जोर का तमाचा उसके मुख पर झाड़ दिया। चोट पड़ते ही वह तड़प उठी।

पति के इस व्यवहार को देख कुछ क्षणों के लिए वह खामोश सोफे पर पड़ी रही। उसके पश्चात उसके नेत्रों से नीर झलक पड़ा। उसकी गर्दन अधिक नहीं घूमी आँखें फिरा कर पति के मुख की ओर

देखने लगी। स्थिर अपलक और न जाने किस उग्र अभिप्राय भरी दृष्टि से।

"मेरी आंखों के सामने से हट जा।" इन्दर ने चीख कर कहा।

आज पहली बार इन्दु ने पति का यह रूप देखा था। उसको विश्वास नहीं हो रहा था कि उसके पति की सौम्य आकृति का यह रौद्र रूप भी हो सकता है।

सिसकती हुई वह उठ खड़ी हुई और उसने इन्दर के पांव पकड़ लिए। "मुझ से कौन सा अपराध हो गया है नाथ ?"

"अपराध। इन्दर ने चिल्लाकर कहा "अरे तू पापिन है। वह अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ मुझे मालूम न था कि तेरे इस सुन्दर शरीर में पापी आत्मा निवास करती है। तू पापिन है।"

"मेरे प्राणनाथ······स्वामी······"

"यह शब्द तुम्हें शोभा नहीं देते।"

इन्दु उसके पैरों से लिपट गयी। इन्दर ने झटका देकर पैर खींच लिए। क्रोध से उसका सारा शरीर कांप उठा। "मुझे सब पता लग गया है।"

इन्दु चुप थी।

"तू राजेश को जानती है ? बोलती क्यों नहीं ? तू उसे जानती है कि नहीं ?"

इन्दु के होश उड़ गए। अब सब कुछ उसकी समझ में आ गया था।

इन्दु के कपोलों पर आंसू जाम हो गए थे। सिसकियां थम गयीं। आखें फाड़-फाड़ कर वह अपने पति की ओर देखने लगी। उसे यह आशा नहीं थी कि इन्दर दूसरों की बात पर इतना विश्वास कर सकता है। अब इन्दु को समझने में कोई कसर नहीं रह गयी

थी कि यह सारी आग राजेश की लगाई हुई है और यह आग की लपटें उसे समाप्त करके ही दम लेंगी।

जवाब दो चुप क्यों हो गयी हो ? घबरा गयी क्या ?"

इन्दु तिलमिला उठी। मैं घबराई नहीं। मैं राजेश को जानती हूँ उसने मुझे एक दिन छेड़ने की कोशिश की थी लेकिन मैंने क्रोधित होकर उसको डांट दिया था और इसलिए उसने कई लड़के मेरे पीछे लगा दिए थे और इसलिए हम लाजपत नगर से मकान छोड़कर सुभाष नगर आ गए थे।

"और राजेश के मित्र राकेश से मुहब्बत की दास्तां सुनाने के लिए क्या उसको स्वयं बुलाना पड़ेगा या तुम ही सुनाओगी ?"

इन्दु के नैना बरस पड़े।

इन्दर की मुद्रा देखकर इन्दु काँप गई थी।

"बोलती क्यों नहीं। एक दफा रात के दस बजे अन्धेरे रास्ते पर......"

"लेकिन यह सब कुछ मैंने सुमन को बतला दिया था"

"यह सब कुछ तुम्हें सुमन को नहीं बल्कि मुझे बतलाना था तुम्हारा विवाह मुझसे हुआ है सुमन से नहीं ?"

इंदु खामोश खड़ी रही। इन्दर ने फिर बोलना शुरू किया और क्या तुमने यह भी सुमन को बतला दिया था कि तुम्हारी बाहीं रान पर एक काले तिल जितना निशान है। लेकिन मैंने पति होकर भी यह सब कुछ न देख सका जबकि राकेश को सब कुछ पता है ?"

आगे बढ़ने की आवश्यकता नहीं बहुत हो चुका।"

"मेरे प्रश्न का यह उत्तर नहीं ?"

इन्दु सिसकियां भरने लगीं।

"आंसू तो स्त्री का शस्त्र है जिससे वह पुरुष के पत्थर मन को पिघलाया करती है लेकिन मेरा दिल उस धातु का नहीं बना। प्रेम और सहानुभूति प्राप्त करने का अब यह ढंग बहुत पुराना हो चुका है। इन्दर ने अपना प्रश्न फिर दोहराया और चीख कर कहा— "तुम्हारा इस घर में रहना मुमकिन नहीं।"

"इस घर के दीप निशि दिन मैं जलाऊँगी। पुरुष के हृदय में नारी के प्रति जब संदेह उत्पन्न होता है तो वह बातों से दूर नहीं किया जा सकता। उसके लिए बलिदान की आवश्यकता पड़ती है और अब मैं भी बलिदान से मुंह नहीं मोड़ूँगी।"

मैं कविता नहीं, उत्तर चाहता हूँ यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं।"

इन्दर ने आगे बढ़कर इन्दु के गालों को अपनी हथेलियों में दबोच लिया— इंदु के गाल आग के समान तप रहे थे। इंदर ने उसका आंखों में आंखें गाड़ते हुए कहा।

"यह मत भूलो इन्दु कि मैं अपनी छाती पर तुम से पहले सुमन की धड़कनें भी सुन चुका हूँ······लेकिन तुम्हारी मासूम सूरत पर तरस आ रहा है।"

"अप मेरे सरताज हैं आप कुछ भी कह सकते हैं।" इन्दर ने अनुभव किया कि अँगारों जैसे तपते हुए गाल बर्फ के समान ठण्डे पड़ गये मानो धमनियों में चलता हुआ लहू सहसा जम गया हो। इन्दु चुप थी लेकिन इंदर ने कहा "पगली डरती क्यों हो··"

इन्दु ने इंदर को क्रोध से भयभीत आंखों में देखा।

इंदर ने जोर से इंदु के गालों पर एक भरपूर वार किया एक धमाका हुआ और फिर मौन छा गया। भोली-भाली इंदु ने अपनी आशाओं पर तमाचा पड़ते हुए देखा और वह सहसा सहम गई।

"पुरुष होने के नाते आप कुछ भी व्यवहार कर सकते हैं..." उसके थरथराते हुए होंठ सूख गये और जबान तालू से लग गयी।

इंदु की सूख चली आँखों में फिर से आंसू भर आये और उसके होंठ थरथराने लगे। इंदर कमरे से बाहर चला गया लेकिन वह बेसुध होकर वहीं कालीन पर लेट गई और सिसकियां भरभर कर रोने लगी और जब उसे अपनी आवाज पर अधिकार न रहा तो इंदु ने अपना आंचल मुंह में ठूंस दिया।

× × ×

चमचमाती गाड़ी इंदर की कोठी के सामने हारन बजा रही थी लेकिन अन्दर से कोई भी निकलकर न आया। सुमन तुरन्त अपनी गाड़ी से उतर पड़ी और ज्यों ही उसने अन्दर कदम रखा वह कांप कर रह गई। इंदु परदे को पकड़े हुई थी और इंदर अंदर चाय पी रहा था। वह पहले भी कई बार आयी थी जबकि वे दोनों एक ही जगह पर चाय पीया करते थे एक ही थाली में खाया करते थे लेकिन आज यह विचित्र बात देखकर दंग रह गई।

वह हट कर एक ओर खड़ी हो गई। इन्दु ने कहना शुरू किया। "आज आपके वह दोस्त आये थे?"

"कौन वह?"

"राजेश?"

"ओह तो फिर तुमने बिठाया नहीं?"

"जी मैंने तो कहा था कि बैठ जाओ लेकिन वह चले गए।"

कुछ देर स्तब्धता के बाद इन्दु ने कहा।

"क्या यह नहीं हो सकता कि वह आपको उधर बाहर ही मिल लिया करें?"

"तुमको यह बात कहने की हिम्मत कैसे पड़ी।" इन्दर ने घृणा से इंदु की ओर देखा। तुम अपने आप ही कह दो राजेश को उसको तो तुम भी अच्छी तरह से जानती हो।"

इंदु यह सुनकर पीछे की ओर मुड़ी कि सुमन ने उसको अंक में भर लिया "इन्दु······।" वह आगे कुछ न कह सकी। इन्दु सुबक पड़ी। "दीदी ·····मेरे घर को आग लगाने वाला राजेश यहां आया था।"

"तब क्या हुआ मेरा जन्म किस काम आयेगा पगली यदि यह रोड़ा भी रास्ते से न हटा सकी।" सुमन इन्दु के अंक में भरे हुए इन्दर के पास ले गई। लेकिन आज तो इंदर की त्यौरियां चढ़ी हुई थीं। उसने सुमन की ओर देखा तक भी नहीं।

"क्या बात है आज आप बहुत उदास हैं?" सुमन ने प्रश्न किया।

"पूछ लो अपनी ब्यूटी क्वीन से सुमन" इन्दर के आवाज में नफरत थी। "मुझे मालूम न था कि इंदु इतनी जलील लड़की है।"

इन्दर के यह शब्द सुनकर सुमन का खिला चेहरा कुम्हला गया। जलील शब्द ने उसके कोमल हृदय पर वह चोट की कि वह तड़प उठी। वह कुछ बोली नहीं और इन्दर की ओर देखती ही रह गई।

"तो क्या मैं पूछ सकती हूँ कि राजेश कौन है?"

"राजेश मेरे बचपन का मित्र है। शायद तुम उसको नहीं जानती क्योंकि वह यहां हमारे घर नहीं आया है। विवाह से पहले इंदु और राजेश की घनिष्ट मित्रता थी।"

बिना कुछ कहे ही सुमन इन्दु को दूसरे कमरे में ले गयी। इंदु सिसकियां भर रही थी। सुमन ने दृढ़तापूर्वक उसको गले से

लगाया। "अब तुम्हें दम भर के लिए भी उदास होने की आवश्यकता नहीं इंदु मैं राजेश को जान से मार डालूँगी। इंदु तेरी माँ ने मुझ पर विश्वास किया है और मैं विश्वास-घात नहीं करूँगी।

इन्दु से बातें करने के बाद सुमन इन्दर के पास दूसरे कमरे में गई।

"तो महाशय यह तुम्हारा अन्तिम फैसला है ?"

"क्या ?"

"तुम्हें राजेश की बातों पर विश्वास आ गया है ?"

"विश्वास की तो बात है ही नहीं उसके पास तो सबूत हैं।"

"कैसे सबूत ?"

"उसके पास इन्दु का फोटो है और इन्दु के शरीर पर जो चिन्ह हैं वह सब राजेश को पता है पर पुरुष को यह चिन्ह कैसे पता लग गये जब कि आज तक मुझे भी नहीं पता लग सके।"

"खैर यह चिन्ह की बातों को छोड़ो यह चिन्ह तो इन्दु की सहेली ने देख लिए थे जब वह तालाब पर नहाया करती थी और वही लड़की तुम्हारे परम श्रेष्ठ मित्र की मित्रा थी इसलिए वह चिन्ह उसने राजेश को बता दिए हैं और फोटो तो एक दूसरे से जोड़े भी जा सकते हैं।"

"तो तुम कहना क्या चाहती हो ?"

"मुझे पक्का सबूत चाहिए।" सुमन की वाणी में कम्पन के साथ-साथ दृढ़ता थी।

"वह भी मिल जायेगा।"

"सबूत मिल जाये तो इन्दु तुम्हारे घर को सदा के लिए छोड़ देगी।" इतना कह कर सुमन इन्दु की ओर मुड़ी।

इंदु ने अपनी भीगी पलकें उठायीं उसकी आँखों में बेबसी और प्रार्थना थी।

सुमन ने उसको अंक में भर लिया। "इन्दु साहस और सूझ-बूझ से काम लो, तुम्हारे कन्धों पर इस परिवार की मान-मर्यादा का बोझ है। तुम इस जरा से झोंकों से घबराने लगी तो तेरा पहाड़ जैसे जीवन कैसे कटेगा।"

इंदु ने सुमन की आँखों में झिलमिलाते हुए आंसू देखे जिन्हें वह मुस्काते हुए पी जाना चाहती थी इससे उसे अपने डूबते हुए मन को सहारा मिला और वह सुमन के सीने से सट गयी। "तुम ठीक कहती हो दीदी लेकिन पति की दृष्टि में गिरी हुई स्त्री की मंजिल क्या हो सकती है यह तुम अच्छी तरह से जानती हो ?"

"मैं सब जानती हूँ मेरे होते हुए तुम्हारा बाल भी बांका नहीं हो सकता।" सुमन के इन शब्दों ने इन्दु में उत्साह से भर दिया। सुमन कहती गई—"पगली इस कोठी के चिराग सदा तुम्हारे हाथों से रोशन होंगे और मेरे हाथों के लगे हुए पौधों की छाया के नीचे तू ही जीवन भर बैठेगी।"

× × ×

"देखो राजी साफ बात तो यह है कि मैंने आपको जो कुछ कहना था वह मैं कह चुकी। अब बात यह है कि इससे राजेश को क्या मिलेगा कि इन्दु के जीवन में कांटे बिखेरता फिरे। आखिर मैं ने इतना बड़ा खतरा मोल लेकर केवल इस इच्छा के लिए इन्दर को विवाह करने पर मजबूर किया है कि उसका बुढ़ापे में सहायक हो—उसका भी कुल चलता रहे—कहकर सुमन ने राजी को और गौर से देखा।"

खैर वह तो मैं समझ गई हूँ…"

"अच्छी बात है अगर समझ गई हो। इन्दु और राजेश का जिस बात पर झगड़ा हुआ था वह भी मैंने आपको सही सही बतला

दी है इसमें मैंने कुछ भी अपनी तरफ से झूठ बोलने की कोशिश नहीं की है। मैं एक बार फिर आपसे प्रार्थना करती हूँ—एक स्त्री के नाते—कि आप राजेश को समझा देना और फिर मुझे इस बात की कोई अपत्ति नहीं है कि उसकी मित्रता इन्दर से न रहे रहे—सौ बार रहे—लेकिन राजेश को यह बात दिलसे निकालनी पड़ेगी कि इन्दु और उसका झगड़ा हुआ था। अगर वह ऐसा नहीं करेगा तो इसका नतीजा बहुत भयंकर भी हो सकता है। आप उसकी पत्नी हैं इसलिए मुझे यह सब कुछ आपको बताना पड़ा और आप पत्नी के नाते राजेश को प्यार से भी समझा सकती हैं कि गढ़े मुर्दे उखाड़ने से कोई फायदा नहीं है।

लेकिस आप उन से स्वयं क्यों नहीं बात कर लेती ? अभी वह दफ्तर से आने वाले ही होंगे।

"पहले आप बात कर लीजिएगा।" सुमन कहती गई, "क्योंकि मैंने उनको दफ्तर में दो तीन बार टेलीफोन किया है और मिलने के लिए समय मांगा तो उन्होंने साफ इन्कार कर दिया था। आज तो तुम उनसे बात कर लेना नहीं तो फिर मुझे किसी दिन रात को आपके घर राजेश से बात करने के लिए आना पड़ेगा।"

इतना कह कर सुमन चली गई लेकिन राजी और राजेश के बीच एक बहुत बड़ी दीवार खड़ी कर गई। राजी तो पहले दिन ही जान गई थी जब वह इन्दर के घर गई थी और कैसे उसका पति इन्दु को देख कर तिलमिलाया था। 'उसका पति' यह सोच राजी खो गई अपने जीवन के भूले भटके उन क्षणों में जब किसी वक्त राजीव उसका पति बनने वाला था।

कई बार आदमी के मन में कोई खास जगह, कोई खास नाम, या कोई ऐसी खास बात याद आ जाती है कि उसके देखने

या सुनने मात्र से ही वह पुरानी यादों में डूब सा जाता है। और यही हाल राजी का भी था सुमन के बार बार 'उसके पति' का वाक्य सुन कर राजी को राजीव की याद आ गई।

जब वह मैट्रिक पास करके मामे के घर से अपने गाँव गई थी और रात को जब सतसंग हो रहा था। प्रवक्ता कहता चला जा रहा था। ज्यों तिलन में तेल है ज्यों चकमक में आग - यह दोहा तो राजी ने पढा था और उसका अर्थ समझ रही थी इसलिए वह सुनने वालों को ध्यान से देखने लगी। और आँखों के घेरे में आ गया था राजीव —उसको बालसखा—तो अब राजीव जवान हो गया है —'अरी पगली तू भी तो जवान हो गयी है'—अपने आप ही उसने कहा—और फिर वह सोचने लगी कि यह वही राजीव ही तो है जो उसके रेत के घरोंदों को पाँव से उड़ा कर वर भाग जाया करता था—और फिर राजी ने अनुभव किया कि राजीव भी उसे कनखियों से देख रहा है।

राजीव ने कनखियों से राजी की ओर देखा। क्षण भर के लिये राजी की आंखें राजीव की आंखों से उलझी—उसके होंठ मुस्कराये औ उसके बाद तत्क्षण ही उसने अपनी दृष्टि राजीव पर से हटा ली। लेकिन गालों पर हल्की सी लाली क्षण भर के लिए आकर चली गई ठीक पानी के बुलबुले की तरह जिसके न बनते देर लगती है और न फूटते।

क्या यह वही राजी है जो मेरे साथ बचपनमें खेला करती राजी थी—मेरे मुंह पर काली स्याही पोत दिया करती थी लेकिन अब यह पहले वाली राजी नहीं रही। अब तो वह जवानी के दलहीज पर खड़ी मुस्करा रही है। यह सोलह की बाली उर्मिया और दसवीं पास। और मैं कमबख्त तीन बार दसवीं में फेल हो गया। मेरी नालायकी पर जरूर मुस्करायेगी।

नहीं ·· नहीं मेरे लिए वही राजी है और उसने आँखें उठा कर जब राजी की ओर देखा तो वह डूब सा गया राजी के चिकने, रक्तिम तथा मांसल भुजाओं व चोली में कैद पुष्ट वृक्षों को देख कर तो राजीव विचलित सा हो गया ।

राजी ने एक बार फिर राजीव को निस्तब्ध दृगों से देखा और देखा उसका उन्नत ललाट्, चन्द्रमा के समान उसका समुज्जवल शरीर, राजी ने उसके दोनों नेत्रों को देखा । जो समुद्र की भाँति गम्भीर, सूर्य की भाँति अलोकपूर्ण—और राजीव राजी को अपनी ओर देखना देख कर सुध बुध खो बैठा । राजीव के दिल में प्रलय मचाने के लिए बस एक ही नजर काफी थी । प्रति क्षण उसे एक ही मनमोहिनी सूरत दिखाई देने लगी । गोरा गोरा मुखड़ा, बड़ी बड़ी काली आँखें, लाज और शर्म से झुकी काली घनी पलकें, अर्ध खुले होंठ । अत्यन्त सुघड़ शरीर—हाय यह कैसी लड़की है जो मेरी तरफ टिकटिकी लगाए देख रही थी । आँखें जपकने की देर थी कि राजीव ने समझ लिया कि प्रेम का जाल बिछ चुका है और राजीव सोचने लगा कि कुछ ही दिनों में यह प्रेम का पौदा पनपने लगेगा ।

आज मेरे मन में यह किसका आलोक फैल रहा है, मेरे मन में आज इतनी उमंगें क्यों हैं ? वह मेरा नियंत्रण क्यों नहीं मानता? इस प्रकार के शत शत प्रश्न राजी के अन्त:करण में उठ उठ कर बैठ रहे थे । वह कुछ समझने की चेष्ठा करती, परन्तु रह रह कर अपने आपको असमर्थ पाती । वह समझ नहीं पा रही थी कि उसकी लालसा में इतना प्रवाह क्यों है ?

राजी की अद्भुत अवस्था को देख कर उसके दिल ने मुस्करा कर कहा । अरे नादान छोकरी—तू समझती क्यों नहीं कि तेरा सारा अस्तित्व राजीव में समाविष्ट हो रहा है । तेरे अन्त:करण में राजीव का दिव्य आलोक फैलता जा रहा है और यही आलोक ही

आज तेरे हृदय के अनियंत्रण और प्रफुल्लता का कारण है।

'तो यह बात है मेरे दिल की।' राजी अपने आप पर स्वयं ही मुस्करा पड़ी।

बसन्त के आने पर जिस प्रकार वृक्षों में नये पत्तों की सृष्टि होती है उसी प्रकार राजीव को देखकर राजी के हृदय में प्रेम का स्त्रोत उत्पन्न हुआ। राजीव उसके लिए नया नहीं था। लेकिन अब राजीव बचपन वाला राजीव भी नहीं था। लेकिन था वही स्कूल वाला राजीव। और फिर उसको याद आया कि राजीव छट्ठी कक्षा पास करके किशन गढ़ के हाई स्कूल में दाखिल हो गया और वहीं पर ब्रोर्डिंग हाऊस में रहा करता था क्योंकि गाँव आठ-दस मील दूर था। राजी उन दिनों चौथी कक्षा में पढ़ रही थी। दो साल के बाद छट्ठी कक्षा पास करके वह अपने मामा के पास शहर में दसवीं कक्षा तक पढ़ने के लिए चली गई थी—पूरे चार साल के इस लम्वे समय में वह एक दो बार गाँव आई थी लेकिन राजीव से उसकी एक बार भी मुलाकात नहीं हुई थी लेकिन उसने सुन रखा था कि राजीव लगातार दसवीं कक्षा में फेल होता जा रहा है। और आज जब वह दसवीं कक्षा पास करके आई थी तो भी राजीव दसवीं कक्षा में फेल होने के कारण दुकान का काम चला रहा था। और एक प्रकार से दुकानदार था।

राजीव दुकानदार—लेकिन जीने के लिए कोई न कोई व्यवसाय तो आदमी को अपनाना ही पड़ता है और फिर दुकानदार भी क्या बुरी चीज है। राजी अनेक कल्पनाओं के साथ साथ विहारी करने लगी वह अपने होठों में बुदबुदाई, "मैं ने अपना प्रियतम पा लिया है। जिसके प्यार में मैं अपनी तृष्णा को तृप्त करूँगी और राजीव के पूर्ण सहयोग से मैं अपना जीवन सफल करूँगी।"

कल्पना में राजी ने राजीव के नाम को चूम लिया, "कितनी

सिलौनी सूरत है मेरे सैंया की , मेरे सैंया ।" यह सोचते ही वह तरंगित हो उठी ।

राजी ने ऊपर आकाश की ओर देखा जहाँ काले और सफेद बादलों की नन्हीं नन्हीं टुकड़ियां आपस में मिल कर एक विचित्र प्रकार का रंग उत्पन्न कर रही थी । राजी मन ही मन सोचने लगी । प्रेम के रंग में रंगे व्यक्ति को हर चीज रंगीन दिखाई देती है । राजी आकाश में पहले भी कई बार बादल देख चुकी थी लेकिन आज के बादलों को गले लगते देख कर वह सोचने लगी ।

काश—कहीं मैं भी राजीव के साथ ऊपर आकाश पर बादलों की तरह आँख मिचौली करती और एक दूसरे के गले मिलते ।

"देवी जी आपके जूते यहाँ पड़े हैं ।" एक लड़की जो अपनी जूतियाँ ढूंढ़ रही थी राजीव ने उसको ऊंची आवाज में कहा ताकि राजी सुन ले उसकी आवाज । देवी जी तो जूती पहन कर चली गयीं लेकिन राजी सोचने लगी कि राजीव की यह चहक उसके लिए ही है । इसलिए उसके अधर लाभ से लाज़ हो उठे । वह लाज से सिमठ गई और उंगलियों से मुख पर खेल रही केश राशि को ठीक करने लगी । वह अधिक देर तक वहां न बैठ सकी इसलिए घर जाने के लिए उठ खड़ी हुई और राजीव के थोड़ी सी दूर पर पड़ी जूती को पहने लगी तो राजीव ने कहा, "गालों पर केश राशि का पहरा और आँखों पै पलकों के घूंघट ।"

राजीव के यह शब्द सुनकर राजी लाज के कारण लाल हो उठी । उसकी यह रक्तिम अवस्था अग्नि की अपेक्षा गी अधिक रक्तिम हो रही थी । परन्तु उस समय भी वह नीरव और खामोश थी उसके अन्तःकरण में अनेक आँधियाँ उठ रही थीं वह जान नहीं पा रही थी कि उस समय उसके मन की क्या अवस्था थी हाँ उसको इतना पता अवश्य था कि यदि वह कुछ देर और इसी तरह

अगर खड़ी रही तो उसके लिए दो कदम चलना कठिन हो जाएगा।

दो कदम चल कर वह अनायास ही खड़ी हो गई मानो हृदय की गति जैसे रुक गई हो। वह प्रस्तर के समान अपने आपको मालूम हो रही थी उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसका श्वास अब बन्द होने वाला है' अपनी इस दुरावस्था में अपने हाथों की उँगलियों को उसने दाँतों से काटना आरम्भ कर दिया। वह मन ही मन सोचने लगी। क्या इसको मुहब्वत कहते हैं अब नजरों से नजरें टकरा जाती हैं और फिर आँखों में मुस्करा कर एक मीठा सा दर्द बन जाता है। और उसके मासूम दिल ने उसकी सोची हुई बात का अनुमोदन कर "अरे—हाँ बावली इसी को तो मुहब्बत कहते हैं। तेरे अंग सौष्ठव में जो मादकता भरा आकर्षण है उसकी रूप सुधा का पान केवल राजीव ही कर सकता है।"

"वाणी मौन थी लेकिन फिर यह कैसी मुहब्बत ?"

"किन्तु तुम्हारी नेत्र-दृष्टि ने अन्तरतम की अभिव्यक्ति को प्रकट कर दिया।"

मुझे तो जैसे राजीव के नेत्रों ने एक मौन अमंत्रण दिया और बस मैंने उसे स्वीकार कर लिया।

"इसी मौन अमंत्रण के स्वीकार का दूसरा नाम मुहब्बत है राजी।" उसके दिल ने कहा उसका दिल उसको कहता ही गया, "बस अब तू जाकर सो जा। यहाँ पर खड़ी रहेगी तो घर तक पहुँचना मुश्किल हो जाएगा।"

"राजी"—और उत्तर में राजी होठों में मुस्करा कर रह गई। और अपनी मुस्कराहट को छिपाने के लिए अपने ही आँचल को होटों में दबा लिया।

"हम से तो यह आँचल ही किस्मत वाला है—जो तुम्हारे होठों से खेल रहा है।"

यह सुन कर राजी ने अपनी कालो कजरारी आंखें उठा कर राजीव की ओर देखा—"बहुत चंचल हो गए हो ?"

"लेकिन तुम कहां स्थिर हो ? "

"जमाने के साथ-साथ तो चलना ही पड़ता है ।"

"लेकिन जमाने से इतना आगे भी तो नहीं निकलना चाहिए कि किसी की पकड़ में ही न आ सको—"

"हम किसी की पकड़ में आने वालों में से नहीं हैं—"

"हमारे भो नहीं ?"

"तुम अपने आपको और किसी के साथ क्यों मिलाते हो ?"

"अनाड़ी जो ठहरा ।"

"चुटकियों में अनाड़ीपन दूर कर दूंगी"—कहकर राजी के रसीले होठों पर हंसी बिछ गयी ।

"तो तुम शहर से यही काम सिखकर आई हो ?"

"शहर-शहर है और गाँव-गाँव है" कहकर राजी आगे बढ़ना चाहती थी और राजीव उससे और बातें करना चाहता था ।

"राजी —बचपन के दिन भी क्या दिन थे ··"

"अब बचपन अंतिम सासें ले रहा है और जवानी चढ़ती चली आ रही है अब कुछ जवान दिलों की बातें करने में मजा आता है" कहकर राजी चली गई और राजीव खो गया राजी की आकृति में।

दीये की भाँति प्रकाशमान उसकी मुखाकृति, उसके गोरे-गोरे कन्धों पर बलखाती उसकी काली-काली लटें,—राजी को उमड़ती घटा की तरह जाता देख कर राजीव के मन में यौवन और सौंदर्य का एक तूफान था जो उमड़े चला आ रहा था । और वह सोचने लगा कि राजी के लाल होंठ तथा कपोल गुलाब के फूल की तरह स्वच्छ, सुन्दर और उसपर उसकी यह नजाकत—

राजीव वहां से चल पड़ा लेकिन महसूस किया कि सारा

शरीर भारी-भारी सा लग रहा था। कल से ही उसकी तबीयत कुछ नासाज थी और राजी से बात करके उस पर जो नशा चढ़ा तो वह और भी नासाज हो गई। इस प्रकार राजीव दो तीन दिन तक चारपाई पर पड़ा रहा और जब राजी ने उसको कई दिनों तक नहीं देखा तो मौका पाकर वह उसके दुकान के आगे से निकल गई। राजीव ने उसको देख लिया लेकिन वह अपनी जगह से उठा नहीं वहीं पर ही बैठा रहा।

कुछ कदम आगे चल कर राजी रुक गई और सोचने लगी राजीव तो दुकान में अकेला बैठा है क्यों न टोफी लेने का बहाना बना कर उसके स्वास्थ्य के विषय में ही पूछ लिया जाए—और अगर बातें करते-करते कोई आ गया तो ? तब क्या हुआ—इतनी दूर से चलकर आई हूँ राजीव के स्वास्थ्य के विषय में पूछने के लिए और अब खाली हाथ चली जाऊँ यह तो कायरता ठहरी—

राजी पर राजीव के इश्क का मुश्की रंग चढ़ चुका था और जब यह मुश्की रंग चढ़ता है तो न यह आगे देखता है और न पीछे मुड़कर—फिर यह रंग बिना गुल खिलाए थोड़े उतरता है। क्योंकि प्रायः इश्क करने वाले भी यही सोचते हैं कि ये आती जाती सांसे तो ढलती छाँव की तरह है और जिन्दगी एक कागज की नाव ⋯ जाने कब तक चलेगी—

ऐसा कब तक चलेगा राजी—अब आई भी है और इश्क करके डरती भी है—और उसके कदम राजीव की दुकान की ओर बढ़ चले—

और ज्योंही राजी ने दुकान के अन्दर पाँव रखा झट से राजी ने कहा—"दो टाफी देना"—और पैसे उसने पास रखे टीन पर रख दिए।

राजीव विमुग्ध सा उसकी ओर अपलक देख रहा था जिस

सौंदर्य, जिस रूप का अभास उसे मिला था उससे उसकी आँखें पुलकित होने लगीं, हृदय माधुर्य से भर उठा और वह उसी अन्नत सौंदर्य सागर में गोते लगाता रहा और एक नशा सा उसके मस्तिष्क में समाने लगा लेकिन उसके नशे को भंग किया राजी के शब्दों ने --"दो टाफी देना।"

"मीठी या नमकीन ?" राजीव मुस्करा पड़ा।

"बीच वाली"···राजी भी अपनी जगह पर थोड़ी सी थिरक गयी। और राजीव उसकी पतली-पतली उंगलियों को देख रहा था।

"राजी क्या तुम सचमुच टाफी लेने आई हो ?"

"जल्दी कीजिइएगा। कोई आ जाएगा ?"

"मैं जो पूछ रहा हूँ उसका जवाब दो ?"

"नहीं मैं तुम्हें देखने आई हूँ--सुना था कि तुम बीमार हो—" कहकर राजी के दिल में मीठा-मीठा सा दर्द होने लगा और वह पीड़ा सुखद मालूम होने लगी और अनजाने ही में एक मधुर मुस्कान उसके अधरों पर स्थिर हो गई।

"अब मैं तुम्हें कैसे दिखाई देता हूँ ?"

"जल्दी करो न टोफी दो तो मैं चलूं।"

कहकर राजी अमिट लाज से सिमटने लगी। कपोल आरक्त हो उठे तभी लज्जा सुलभ मुस्कान से उसने धीरे से कहा—"अब तो कुछ पहले से ठीक और समझदार मालूम पड़ते हो।"

राजी ने एक बार फिर अपनी बोझिल पलकें उठा कर राजीव की ओर देखा। उसके अधर लज्जा से रक्तिम हो उठे। दूसरे ही क्षण वह पलकें झुका कर जमीन की ओर देखने लगी। शायद उसे लाज आ रही थी इसलिए वह लज्जा से सिमटे बिना न रही सकी—

नजरें झुका कर मेरा हाल बार-बार न पूछ ?

नजर उठा कर मुझे एक बार देख—

कहकर राजीव ने टोफी का डिब्बा राजी के टीन पर पड़े पैसों के पास रख दिया "निकाल लीजिइए जितनी चाहियें—लेकिन जाने से पहले एक बार मुझे नजरें उठा कर देख लेना—"

बात सुनकर राजी का चेहरा बिल्कुल सुर्ख हो उठा था इतना सुर्ख यदि उस पर गुलाब के फूल से भी चोट की जाती तो खून चू पड़ता। राजी की आँखें अपने खूबसूरत पैरों पर जम गयीं, जैसे सुहागरात की दुलहनियों की निगाहें पैर के महावर पर टिक जाती हैं —

डिब्बे से दो टोफियाँ उठा कर राजी जाने लगी तो राजीव ने कहा—"आज शाम नदी पर पीपल के वृक्ष के पास मिलना—"

राजीव की बात सुनकर राजी चली गयी और वह सोचने लगी यदि उसको शाम को मिलूंगी तो क्या कहूँगी उसको ? वह मुझ को क्या कहेंगे ? कैसी-कैसी बातें होंगी ? दोपहर ढल चुकी लेकिन इस प्रकार के शत-शत प्रश्न उसके दिमाग के नसों से टकराते रहे कि आज तो राजीव से मिलन होगा जी खोल कर बातें करेंगे।

जवानी केवल जवानी ही नहीं होती बल्कि मस्तानी भी होती है और मस्तानी होकर यह बिना परों के आकाश में उड़ने की बातें सोचा करती है। राजी भी जवान थी और वह बिना परों के आकाश में उड़ने लगी—वह सोचने लगी कि आज शाम को राजीव से मिलना ऐसा लग रहा है जैसे बिना परों के आकाश में उड़ा जाए—राजीव को दो बार देखने मात्र से ही राजी के दिल में उमंगों का एक ज्वालामुखी व्याप्त हो गया था। और इसी ज्वालामुखी को शान्त करने के लिए वह राजीव से मिलने के लिए नदिया के पार गई

नदिया के पास जहां राजीव पहले से ही पलक पावड़े बिछाए बैठा था

नूरानी चान्दनी में नहाते राजी के गुलनार चेहरे को जरा गौर से देखा और मुस्करा कर राजीव बोला—"आप से मिल कर बड़ी खुशी हुई ··"

राजी झेंप गई और राजीव एकटक उसकी ओर देखता रहा। राजीव के इन साधारण शब्दों ने उसके मन में अनोखी वेकली उत्पन्न कर दी थी—एक अनजानी चाह—एक रंगीन सी झलक जिसने उसके मन को झंकृत कर दिया।

राजीव को विश्वास था कि राजी अवश्य कुछ बोलेगी लेकिन जब वह बहुत देर तक कुछ नहीं बोली तो राजीव ने उसके बिल्कुल पास आ कर कहा—"तुम इतनी खूबसूरत क्यों हो ?"

लाज से राजी के श्वेत मुख पर गुलाबी रंग झलक गया। उसने ऊपर आकाश की ओर देखा और फिर उसने एक बार पास खड़े राजीव को देखा लेकिन उसका मुख अभी संकोच से लाल था। उसके हृदय में हलचल हो रही थी जो उसने कभी अनुभव न की थी एक अनजान उल्लास जिसने उसकी रग रग में मस्ती भर दी थी—एक विचित्र लाज—जिसने उसके मुखड़े के रंग को ही कई रंगों में रंग दिया था।

राजी के गालों पर लाज की हल्की बदली छा गई और जब उसने ऊपर आकाश की ओर फिर देखा तो चाँद के सामने एक छोटी सी बदली आ गई तो राजीव को ओर देख कर उसने पूछा—"न जाने इस चंचल बदली को क्या सूझी है कि चाँद को उसने अपने नन्हें से आँचल में छिपा लिया ?"

"इसलिए कि कोई तुम्हारे आँचल में भी छिपना चाहता है—" कहकर राजीव ने उसका आँचल पकड़ लिया।

राजीव ने यह बात कुछ इस ढंग से कही थी कि राजी लाज से दोहरी हो गयी और मन्द-मन्द मुस्करा कर उसने कहा—"मेरी बात का यह उत्तर तो कदापि नहीं ?"

"लेकिन तुम ने भी तो मेरी पहली बात का उत्तर नहीं दिया —होठों को मुस्कान से तर करके राजीव ने कहा और साथ ही साथ राजी के आँचल को भी उंगलियों से लपेटने लगा।

राजी ने एक हल्के से झटके से आंचल को खींच लिया और पूछा—"कौन सी बात ?"

"तुम इतनी खूबसूरत क्यों हो ?"

"यदि इस का उत्तर दे दूं तो फिर कहोगे कि तुम पैदा ही क्यों हुई ?"

हवा के नरम हल्के हल्के झोंके अठखेलियाँ कर रहे थे राजी के केशों से। इस धुंधली रोशनी में राजीव ने राजी की आंखों में देखा और बस एक नजर इस एक नजर ने क्या कुछ नहीं किया।

शरम की लाली ने राजी के गालों पर करवट ली। आंखों में खुमार सा भर गया। पलके बोझिल हो उठीं। लाज की झुरझुरी उसके सारे शरीर में दौड़ गयी। वह कुछ बोली नहीं पर पल भरके लिए वह राजीव के आंखों में अपनी छाया देखती रही, फिर उसकी बोझिल पलकें अपने आपही नीचे झुक गयीं।

कुछ क्षणों तक यही स्थिति रही कि इसी बीच में राजी ने एक बार फिर अपनी भारी भारी पलकें उठा कर राजीव की आँखों में झाँक लिया और फिर तुरन्त ही उसकी आँखें झुक गयीं। आनन पर अचानक ही लालिमा की एक हल्की रेखा दौड़ गयी। उसे ऐसा लगा जैसे उसके मन में संजोये सपने साकार होने लगे हैं।

राजीव ने भी उसकी यह शरारत देख ली तो उसके हृदय की गति भी तेज हो उठी। एक अपरिचित खुशी उसके नस नस में

फूट पड़ी। कुछ क्षणों तक वह उस अपार सौन्दर्य को निहारता रहा। सहसा उसकी पलकें भी मारी होकर झुक गयी।

यों लग रहा था जैसे दो प्रेमियों के बीच एक नया समझौता हो रहा था। शायद आंखों में शर्म, होठों पर लाज और दिल में हलचल होने लगी।

राजी के जीवन में तो बहार आ गयी थी। वह सोच रही थी कि यह कितनी अनहोनी बात हो गयी है। वह तो बेचारी अब तक यही समझ रही थी कि प्रेम में सफलता इतनी आसान नहीं होती।

राजीव ने उसके शान्त जीवन स्त्रोत में हलचल पैदा कर दी। इसी हलचल के कारण ही तो उसकी बाली उमरिया में प्रत्येक अंग जाग गया और जाग कर फड़कने लगा।

राजीव राजी की मोहिनी मुद्रा, मृगी के समान नेत्र, मुस्कान भरे अधर, गठा शरीर और फैले हुए कोमल हाथ देख कर गद् गद् हो गया और उसने एकदम राजी को कलाई से पकड़ लिया।

"तोड़ने की ठान रखी है क्या ?" कह कर राजी के मुलायम माथे पर एकाएक एक तिरछी शिकन पड़ गयी।

"मेरे दिल से तुम्हारी कलाई नाजुक नहीं है। कह कर राजीव के मन से एक तूफान उठा और घोर गर्जना करता हुआ खामोश हो गया।

राजी ने अधरों पर अर्ध मुस्कान बिखेरते हुए एक भरपूर अंगड़ाई ली और माथे पर आयी हुई लट को उसने जरा पीछे की ओर किया और ऐसा करते वक्त उसके सुर्ख़ हो चले गाल थोड़े से और लाल हो गए।

राजी राजीव से बहुत देर तक बातें करती रही सूर्य की किरणें जिस प्रकार वृक्षों के प्रत्येक पत्ते की शिराओं में प्राणों का

संचार करती हैं उसी प्रकार राजीव की बातें सुन कर राजी के शरीर का प्रत्येक अंग अंग मुस्कुरा उठा।

राजू के प्रेम में पगी पगी सी राजी उठते बैठते सोते जागते राजीव की तस्वीर कल्पना में बनाती रहती। और आज सोते समय भी वह प्रेम सागर में डूबती उतरती रही—राजी सोचने लगी कि एक छोटा सा खूबसूरत सा सजा सजाया कमरा हो जिसमें एक स्प्रिंगदार पलंग हो और उस पर बिछी हुइ लाल रंग की शाटन की रजाई और उस पर बिखरी हुई चाँदनी की शीतल किरणें और पहलू में बैठा ही राजीव—और मुझे बार बार अंक में भर भर कर मधुर मधुर बतियाँ करें और मैं उसको कहूँ—'अब जाने भी दो और उत्तर में राजीव कहेगा—मैं अपने दिलको सम्भाल तो लूँ तो फिर चले जाना।

राजी ने अपनी पलकें बन्द कर लीं वह सोचने लगी राजीव के सीने पर टेकने से कितना आनन्द होता होगा। और तब जाने कौन सी भावनायें सीने के अन्दर ही अन्दर अंगडाईयाँ लेंगी और राजी ने अपने कलेजे पर हाथ रख दिया—जाने यह कसक से क्यों तड़प उठा और कसक को कम करने के लिए उसने गुलगुले तकिया को बाँहों में भर लिया और तब ऐसा करने से भी कसक कम न हुई तो उसने जोर से तकिया को छाती से भींच लिया। राजीव से प्रथम भेंट ने ही यह हलचल पैदा कर दी थी।

जाने कब निद्रादेवी ने उसे आ दबोचा और वह सुन्दर सपनों की मनारेम वादियों में खो गयी। सपनों की प्रत्येक मंजिल पर उसकी जिन्दगी में राजीव उसके साथ था और उसका मन मस्तिष्क संसार की चिन्ताओं से दूर प्रसन्नताओं के अथाह सागर में हिचकोले खाये जा रहा था।

"कहां जा रहे हो अपनी बेदम जिन्दगी को थके कन्धों पर

लादे ?" कह कर राजी मुस्कुरा पड़ी— 'दम भर के लिए रुक जाओ।" राजी कहती गयी और राजीव सुनता गया —"यह चाँदनी रात। ये नजारे जाने फिर आयें कि न आयें ?"

"यह सब नजारे आते जाते रहेंगे लेकिन यह वाली उम्रिया की नजाकत फिर कभी लौटकर नहीं आयेगी।" राजीव ने उसके कन्धों पर दोनों हाथ रख दिए। "निकला था तुम्हारी तलाश में लेकिन उदास हो कर लौटे जा रहा था तुम्हें न पाकर नदिया के पार।"

"नदिया के पार वाली जगह अब पुरानी हो चुकी है। न वहाँ उठने बैठने की जगह है और न ही वृक्षों के पत्तों से छनती हुई शीतल चाँदनी की फुवारें। "और फिर राजी ने एक बड़े वृक्ष की ओर संकेत किया।" चलो वहाँ चलें। उस वृक्ष के नीचे बैठेंगे जी भर के प्यार मुहब्बत की बातें करेंगे।" कोमल नजरों से राजी ने राजीव की ओर देखा और हल्की सी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर फैल गयी।

"भूखे भजन न होये गोपाला।" राजीव ने अपने सूख चले होंटों पर जबान फेर कर कह—"मुझे बहुत जोर की प्यास लगी है पहले जरा में नदी से पानी पी आऊँ फिर चलेंगे वृक्ष के नीचे।"

"लेकिन नदी में पानी कहाँ से मिलेगा ? इस समय वह सूखी हुई है ?"

"इतनी बड़ी नदी के किसी न किसी किनारे में पानी अवश्य होगा।"

"मुझे देख कर क्या तुम्हारी प्यास भी नहीं बुझी ?"

अपनी लम्बी बरोनियों की ओर से वह राजीव को बड़ी ध्यान से परख रही थी। यह पहला अवसर था जब राजी ने इस तरह राजीव की ओर देखा था। और दूसरे ही क्षण राजी राजीव के

इतने करीब आ गयी थी कि राजी के जवान बदन तेज और मीठी महक से वह अर्ध-विक्षिप्त सा हो गया था तभी उसने पूछ लिया। "आज तेरे पसीने से भी फूलों की महक आ रही है राजी ?"

"आयेगी क्यों नहीं।" राजी मुस्कुरा पड़ी "अभी अभी जवान कलियों की सेज से उठ कर आई हूँ तुम्हारे लिए ?"

"जवां कलियों की सेज से उठ कर आई हो राजी तुम मेरे लिए।" राजीव ने विस्मत दृष्टि से राजी की ओर देखा "इस विया बान जंगल में फूल कहाँ से आ गए ?"

राजी ने राजीव को हाथ से पकड़ लिया। "मेरे साथ साथ आओ आज हम तुम्हें ऐसी जगह ले चलें जहाँ स्वर्ग ही स्वर्ग है। कलियाँ ही कलियाँ हैं।" और फिर दूसरे ही क्षण राजी वहीं पर रुक गयी और राजीव पर तीखी दृष्टि फेंक कर कहा। "जवां कलियाँ को देख कहीं तुम मुझे भूल ही न जाओ और फिर मैं भटकती फिरूं और तुम किसी और कली के साथ रंगरलियाँ मनाते फिरो ?"

"भई तुम्हारी पहेलियां तो मेरी समझ से बाहर होती जा रही हैं।" राजीव ने राजी को अनोखी दृष्टि से देखा जैसे वह उसको बतला रहा हो कि वह उसका हाथ कभी नहीं छोड़ेगा।

राजी ने गुलाब की पंखुड़ियों जैसी कोमल हथेली राजीव के सामने फैला दी। "रखो यहाँ हाथ और वायदा करो कि मुझे कभी नहीं छोड़ोगे।" और दूसरे ही क्षण राजीव ने अपना पंजा उसके हाथ पर रख दिया। "मेरे गले पर अभी तक तुम्हारी बाँहों के निशान अंकित हैं। लेकिन आज तुम और तुम्हारी यह बातें मुझे तो कुछ विचित्र सी लग रही हैं ?"

"क्या करूं मैं भी मजबूर हूँ राजीव ?"

"यह मजबूरी—यह जवां कलियाँ। कहीं तुम ख्वाब तो नहीं

देख रही हो राजी ?"

"तुम्हारी बुद्धि पर अब दया आने लगी है राजीव।" अपने अधरों को मुस्कान में डुबोती हुई वह बोली। "खुली आँखों से सपना देखना छोड़ दो और अब चलो मेरे साथ।" और जब वे दोनों कदम से कदम मिला कर जा रहे थे तो राजी ने कहा। "यहाँ एक पुष्प वाटिका है उसमें पानी का नल भी लगा हुआ है और जवाँ कलियाँ भी हैं जिन्होंने अभी तक घूँघट नहीं उतारे। कभी जिन्दगी में देखी हैं तुमने ऐसी कलियाँ ?"

"आज देख लेंगे अगर नहीं देखी तो ?" राजीव भी उसके साथ साथ बढ़ता चला गया।

"आज क्या खाक देखोगे ? तुम्हें तो यह पुष्प वाटिका मुझ से पहले देख लेनी चाहिए थी और तब तुम ही मुझे बतलाते और मुझे यहाँ पर लाते। पर यह तब हो न जब तुम्हें दुनियाँ के जंजाल से समय भी मिले। बस तुम तो सारा दिन "

"हम तो सारा दिन तुम्हारे नाम की माला ही जपते रहते हैं।"

"बिलकुल बोगस काम है यह। मुझे ऐसे चोंचले पसन्द नहीं।" और जब वे दोनों उस वृक्ष के पास पहुँच गए जहाँ राजी ने पुष्प वाटिका देखी थी। वहाँ पर पहुँच कर और पुष्प वाटिका को न पाकर राजी चकित सी इधर उधर देखने लगी। न तो वहां पर पुष्प थे न मुँह बन्द कलियाँ। और न हीं वह बेंच जिस पर बैठ कर राजी ने पुष्प मालाएं गूँथी थी और न वह सेज जिस पर बहुत देर तक बैठी रही थी और कह रही थी राजीव की प्रतीक्षा ..

राजी को आश्चर्यचकित देखकर राजीव ने उसके कन्धे पर धीरे से हाथ रख दिया। "कहाँ गए वह रग बंगले। तुम तो कह रही थी कि एक पुष्प वाटिका है फूल हैं नाना प्रकार के आर

कलियाँ की सेज। अब टूट गया न तुम्हारा सपना ?"

"सपना बिखर गया है अभी टूटा नहीं ?" कह कर राजी ने उस वृक्ष के तने पर देखा जहाँ उस पुष्प वाटिका का छोटा सा माडल बना हुआ था और प्रसन्न होकर उसने राजीव को कहा। "वह देखो वृक्ष के तने के पास। वह रही पुष्प वाटिका।" लेकिन राजीव को कुछ भी दिखाई नहीं दिया और उसने राजी को झक-झोर डाला। "कुछ भी दिखाई नहीं दिया।" लेकिन राजी तो उस माडल को घूर घूर कर देख रही थी जो वृक्ष के तने के पास नीचे नीचे सरकता जा रहा था। उसने राजीव का हाथ छोड़ दिया और वृक्ष के तने के पास दौड़ कर पहुँच गयी ज्योंही राजी वहाँ पर पहुँच गयी वह पुष्ट वाटिका का माडल अन्दर ही अन्दर धसता गया। राजी ने हाथ जोड़ कर कहा– "रुक भी जाओ मैं न जाने कितने अरमान संजो कर राजीव को साथ लाई हूँ और तुम भागे जा रहे हो ?"

"राजीव कौन है ?"

"मेरे सैंया और कौन ? राजी ने दृढ़ता से कहा और साथ ही साथ उसे प्रसन्नता हुई कि पुष्प वाटिका का माडल वहीं पर रुक गया।

'सच कह रही हो नादान छोकरी ?"

"बिलकुल सच कह रही हूं—लेकिन आप तो मुझ से दूर भाग रहे हैं।"

"हमारे पीछे अन्दर ही आ जाओ ?"

"लेकिन रास्ता ?"

"रास्ता के लिए पूछ रही हो। बड़ी नादान हो तुम। जिस रास्ते पर तुम्हारे कदम बढ़ रहे हैं वह रास्ता भी तो अन्धा ही है।"

"लेकिन मेरे कदम तो किसी भी रास्ते पर नहीं बढ़ रहे हैं।" राजी ने दृढ़ता से कहा और उसने अनुभव किया कि उसके कन्धे पर राजी ने दोनों हाथ रखे हुए हैं।

"मुहब्बत के रास्ते अन्धे हुआ करते हैं देवी जी। और यहाँ भी अन्धा रास्ता है। दो कदम आगे बढ़ कर देखो यहाँ तुम्हें टूटी फूटी सीढ़ियाँ मिलेंगी। और अगर तुम्हें अपने सैंया से मुहब्बत है और उसको पुष्प वाटिका दिखाना चाहती हो तो लड़खड़ाते हुए चले आओ।"

"राजी ने मुड़कर प्रश्नवाचक दृष्टि से राजीव की ओर देखा जैसे उससे पूछ रही हो कि क्यों मेरे सैंया क्या ख्याल है तुम्हारा ?

"छोड़ो भी अब घर चलें। क्या रखा है इन बातों में।" राजीव ने राजी को हाथ से कस कर पकड़ लिया जैसे राजी कहीं सीढ़ियाँ उतरने लगी तो मुश्किल हो जाएगा उसको रोकना।

"मैंने कहा न कि यह मोह माया के बन्दे हमारे इन रास्तों पर नहीं चल सकते।" पुष्प वाटिका के माडल ने विचित्र हंसी बिखेर कर कहा। "ये लोग क्या जाने क्या होती है मुहब्बत ? क्या होती है सच्ची प्रीति ? लेकिन तुम तो बस अबोध बालिका हो जो इस चक्र में फंस गयी हो और अब त्रिशंकू की तरह लटक रही हो।

राजी से इस व्यंग्य का कुछ उत्तर न बन पड़ा तो उसने राजीव की ओर देखा जो बड़े ध्यान से उस आवाज को सुन रहा था। राजी ने राजीव को हिलाया। "राजीव यह हमारे प्यार की हंसी उड़ा रहा है।"

"नहीं राजी मेरे जीते यह कभी नहीं हो सकता कि कोई मेरे प्यार की हंसी उड़ाये।" राजीव ने दृढ़ंता से कहा और वे दोनों अंधेरी सीढ़ियाँ उतरने लगे।

दो चार सीढ़ियाँ उतरने के बाद अन्धेरा गहरा होता गया और राजी भी राजीव से एक सीढ़ी आगे हो गयी जिस कारण राजीव को राजी के कन्धे पर हाथ रखना पड़ा तभी मुस्करा कर राजीव ने कहा—"तुम्हारा कद भी कितना प्यारा प्यारा है ?" लेकिन राजी ने तो राजीव की बात सुनी ही नहीं क्योंकि इस घुप अन्धेरे में बहुत दूर, जिधर को वे बढ़ रहे थे, पुष्प वाटिका के माडल में एक सुन्दर युवा बाला खिलखिला कर हँस रही थी और ऐसा देख कर राजी ने राजीव को कहा –'वह देखो पुष्प वाटिका में"—और दूसरे ही क्षण राजी तीन सीढ़ियाँ एकदम लुढ़क गयी और राजीव का हाथ उसके कन्धे पर से हट गया। राजीव तड़प उठा, "राजी !" और मुस्करा कर राजी ने कहा—"चले आओ घबराने कोई बात नहीं लेकिन ख्याल रखना तीन चार सीढ़ियाँ संभल कर बढ़ना।"

"मुझे तो कुछ भी दिखाई नहीं देता राजी ?"

"रास्ता अन्धा है लेकिन तुम्हारी तो दो बड़ी-बड़ी आँखें हैं।" राजी मुस्कुरा पड़ी, "घबरा गए क्या ?"

राजीव वहीं पर पत्थर की मूर्ति की भाँति खड़ा था। राजी को राजीव साफ नजर आ रहा था लेकिन राजी राजीव को नहीं दीख रही थी तभी तो उसने पूछा, "किस रास्ते से आऊँ राजी मुझे तो कुछ भी दिखाई नहीं देता, इतना अन्धेरा रास्ता—तोबा-तोबा—मैंने तो स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि यह रास्ता इतना अन्धकारपूर्ण हो सकता है ?"

"अब तो देख लिया न।" राजी ने पतली आवाज में कहा—

"देखा क्या खाक ?" तुम ही ऊपर आ जाओ।"

"राजीव !" राजी की आवाज में दर्द था जल्दी "चले आओ, छलांग लगा कर आ जाओ कोई मेरे कपड़े उतार रहा है।"

और दूसरे ही क्षण राजीव ने छलांग लगाई और राजी के ऊपर जा गिरा और राजी लिपट गयी राजीव से—और सिसकियाँ भर कर रोने लगी, "किसी ने मेरे वस्त्र उतार लिए राजीव।"

कुछ समझ में नहीं आता राजी—कि हम कहाँ जा रहे हैं ? क्या करने जा रहे हैं ? और क्यों जा रहे हैं ? चलो अब भी कुछ नहीं बिगड़ा वापिस चलो ?"

"अब तो सब कुछ बिगड़ चुका राजीव, राजी उसी प्रकार रोती रही देखो मेरे शरीर पर वस्त्र ही नहीं हैं मैं कैसे जाऊँगी घर ?"

"कपड़े तो तुम मेरे पहन लो" कह कर राजीव ने कपड़े उतारने शुरू कर दिए लेकिन राजी ने उसको रोक दिया—"ऐसा न करो राजीव कहीं ऐसा न हो जाये कि मैं तुम्हारे कपड़े पहन लूं और कोई फिर मुझ से कपड़े उतार ले ?" कह कर राजी ने पुष्प वाटिका की ओर देखा और उसकी रोती आँखें मुस्करा उठीं वहाँ जवान कलियों की सेज को देख कर। और फिर उसने राजीव का ध्यान उस ओर को खींचना चाहा और उसने जब राजीव को कहा, "वह देखो सामने पुष्प वाटिका में जवां कलियों की सेज पर मेरे कपड़े पड़े हैं ?"

"तू बावली हो गयी है राजी।" राजीव ने दृढ़ता से कहा। यह जगह मुझे पसन्द नहीं जिस तरह से भी हो सके चलो यहाँ से चलें, यह पुष्प वाटिका यह जवां कलियों की सेज – यह सब कुछ मेरी अक्ल के घेरे से बाहर है।" कह कर राजीव ने अनुभव किया कि अब वह एक शब्द भी नहीं बोल सकेगा क्योंकि उसको बहुत जोर की प्यास लगी थी।

"तुम्हारी अक्ल घास चरने गयी है।" राजी मुस्करा पड़ी। "ऐसी बहारें जिन्दगी में बार बार नहीं आया करतीं।"

राजीव ने कोई उत्तर न दिया। लेकिन राजी को राजीव के उत्तर की प्रतीक्षा भी तो नहीं थी वह तो खो गयी पुष्प वाटिका में बनी जवां कलियों की सेज की सुन्दरता और सुगन्ध में—और आँखों के पैमाने से उस रास्ते के फासले को नापने लगी देखने में वह बहुत नजदीक दिखाई दे रहा था लेकिन बीच के रास्ते के ऊबड़-खावड़ को देख कर वह घबरा सी गयी और दूसरे ही क्षण उसको राजीव की याद आ गयी कि राजीव भी तो उसके साथ है तो फिर घबराने की क्या बात है और उसने राजीव के कन्धे पर दोनों हाथ रख दिए, "क्या ख्याल है जनाव का ?"

लेकिन राजीव तो गुमसुम अपना हाथ ठोडी पर टिकाए बैठा था। राजी ने उसका हाथ वहाँ से हटा दिया "तुम बोलते क्यों नहीं जी ?"

"तुम ठीक कहती हो राजी, "धीरे-धीरे राजीव कहता गया, "पुरुष का मौन औरत के लिये परेशानी का कारण हो सकता है लेकिन मैं क्या करूं मुझे इतनी जोर की प्यास लगी कि अब तो कलेजा सुलगने लगा है।"

"इस तरह से तुम मेरी बात को उड़ाओ नहीं ?" राजी ने उसको हाथ से पकड़ लिया और उसके दिल पर हाथ रख दिया "देखूं तो कैसी प्यास लगी है ?"

"ऊई—" कर राजी राजीव से पीछे हट गयी "ऐसा लगता है जैसे हीटर जल रहा हो।" और ज्योंही राजी ने उठा हाथ थोड़ा सा और ऊपर को उठाया तो उसका हाथ एक वृक्ष के गुच्छे में उलझ गया और राजी ने अनुभव किया कि हो न हो यह तो अंगूरों का गुच्छा लगता है। झटके से उसने उस गुच्छे में से कुछ दोनों को तोड़ डाला और कुछ तरल पदार्थ उसके हाथ पर लग गया और जब उसने उस हाथ को जीव लगाग तो सचमुच वह अंगूरों का

रस था। वह प्रसन्नता से उछल पड़ी और दूसरे ही क्षण उसके हाथ में एक बहुत बड़ा गुच्छा आ गया और उसने वह गुच्छा राजीव के होठों पर रख दिया "लीजिएगा अपनी प्यास बुझाइएगा" और ज्यों ही राजीव ने मुंह हिलाना शुरू किया उसकी आँखों में चमक आ गयी। अपने होठों को अंगूरों के रस से गीला करके राजीव ने पूछा, "राजी यह अंगूर और यहाँ कैसे आ गए ?"

"अजी तुम इन बातों को नहीं जान सकते।" राजी भी अंगूर खा रही थी और कहने लगी—"यह हमारी रियासत है जो माँगों वही मिलेगा ?"

"हम जो भी माँगें मिलेगा ?" राजीव ने प्रसन्न होकर पूछा।

"अवश्य, हम तुम्हें वचन देते हैं।" दृढ़ता से राजी ने कहा, "लेकिन पहले अपनी प्यास अच्छी तरह से बुझा लो। तुम्हारी यह शिकायत बार बार नहीं होनी चाहिए।"

"कौन सी शिकायत ?"

"यही प्यास वाली शिकायत ?"

"एक प्यास तो बुझ गयी लेकिन दूसरी प्यास को जन्म दे कर ?"

एक प्यास तो बुझ गयी लेकिन दूसरी प्यास फो जन्म दे कर, राजी ने राजीव के शब्दों को बड़े भोले अन्दाज से दोहराया और विचित्र दृष्टि से राजीव की ओर देखा लेकिन इतना घोर अन्धकार था कि हाथ को हाथ तक दिखाई नहीं दे रहा था। लपक कर राजीव ने राजी को अंक में भर लिया। और राजी राजीव से अलग हो गयी और कहने लगी, "तुम्हारी प्यास बुझा दी तो तुम शरारत करने पर उतारू हो गए हो ?"

"पहले वाली प्यास यानि पानी वाली प्यास ही ठीक थी।

उस प्या.स में तो बस यही तकलीफ थी कि मुझ से बोल नहीं निकल रहे थे लेकिन यह दूसरी प्यास यानि कि मुहब्बव की प्यास, बहुत ही विचित्र प्रकार की प्यास है शरीर का रोम-रोम दुखने सा लगा है।"

"बड़ी विचित्र बात कह रहे हो।" राजी मुस्करा पड़ी— "पानी की प्यास बुझ जाने के बाद तो आदमी को शान्ति मिलती है और तुम हो कि बोखला गए हो ?"

"अब तक नहीं बोखलाया था लेकिन अब जरूर बखोला जाऊँगा।" कह कर राजीव ने राजी को बाहों में अकड़ लिया और उसको अपनी छाती से इतनी जोर से भींच लिया जैसे वह उसको छोड़ कर कहीं भाग जाएगी।

"देखो राजीव तुम मेरी मजबूरी और कमजोरी का नाजाइज फायदा उठाना चाहते हो। और ऐसा करना इन्सानियत पर एक धब्बा है और जब इन्सानियत के नाम पर ऐसे धब्बे पड़ जाते हैं तो धरती का कलेजा चाक हो जाता है। भूचाल आ जाते हैं। बिजलियाँ गिर पड़ती हैं।'

"छोड़ो भी अब इन बेकार की बातों को।" राजीव ने उसे और अधिक कस लिया, "तुम इस रियासत की मालिकन हो और तुम मुझ से वायदा कर चुकी हो कि जो माँगोगे मिलेगा और अब जब हमने माँग रखी तो उसको उपदेश से टाला जा रहा है। और अगर उपदेश सफल सिद्ध न हुआ तो फिर पैरों के नीचे रौंद दिया जाएगा क्योंकि तुम मालिकन ठहरीं इस रियासत की।"

"तुम बहुरूपीया की बातों में जो फंसा फिर वह गया काम से।" राजी ने मुस्करा कर कहा।

'लेकिन तुम मुझे किस आधार पर बहुरूपीया कह रही हो।" राजीव ने उसे और अधिक कस लिया, "उलटा चोर कोत-

वाल को डांटे ।"

"तो तुम कोतवाल बन गए बैठ हमारी रियासत में—" राजी ने अपने आपको आजाद करने का प्रयत्न किया लेकिन व्यर्थ। और जब वह ऐसा करने में सफल न हो सकी तो उसने राजीव की बाहों में ही तड़पते हुए कहा ।" यह कहाँ का न्याय है कि मैं तुम्हारे पास रपट लिखवाने आई थी और तुम ने मुझ को ही बाहुपाश में कस लिया ।"

"फरमाओ क्या तकलीफ है ।" कह कर राजीव ने उसको छोड़ दिया, "हम तुम्हारी हर प्रकार से सहायता करेंगे ?"

"अब आए न असली लाईन पर ।" राजी ने राहत महसूस की । "जनाबे आली तकलीफ यह है कि कोई मेरे वस्त्र चुरा कर ले गया है ?"

"केवल वस्त्र या कुछ और भी ?" राजीव ने प्रश्न वाचक दृष्टि से राजी की ओर देखा ।

"केवल वस्त्र ही चुरा कर ले गया और मैं उसका पता भी जानती हूँ केवल तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है ।"

"पता तुम उसका –उस चोर का पता भी जानती हो तो चलो हमारे साथ हम अभी अभी उसको गिरफ्तार किए देते हैं ।"

और फिर राजी ने पुष्प वाटिका की ओर संकेत किया, "वह देखो पुष्प वाटिका ।'

"मुझे तो इस अन्धेरे कुछ भी दिखाई नहीं देता ।"

"मेरी आँखों से देखा ।" कह कर राजी ने राजीव को उंगली से इशारा किया ।" वह जो एक टिमटिमाता चिराग जल रहा है वह पुष्प वाटिका द्वार है । "इतनी देर में राजीव राजी के बिल्कुल करीब उसकी नाक की सीध से देखने लगा और तब कहीं जा कर

उसको वह दीप दिखाई देने लगा लेकिन ऐसा करते करते उसके गाल राजी के गालों से रगड़ा खा गए और वह दीप की ओर देख कर राजी के गालों की कोमलता में डूब सा गया ।

"टिमटिमाता दीप तो दीख रहा है लेकिन मुझे डर इस बात का है कि हमारे वहाँ पहुँचते पहुँचते कहीं वह गुम न हो जाए ।" कह कर राजीव फिर राजी के गालों पर अपने होठों को रगड़ने लगा ।

"यह रगड़ाई का काम क्या शुरू कर दिया है ।" राजी उठ खड़ी हुई और राजीव को हाथ से पकड़ कर आगे बढ़ने के लिए कहा ।

"लेकिन इस अन्धकार में कहाँ कहाँ भटकते फिरेंगे । यहीं बैठी रहो कम से कम यहाँ अंगूर तो खाने को मिल रहे हैं जिससे प्यास भी बुझ जाती है और थोड़ा बहुत पेट भी काला हो जाता है ।"

"बड़े स्वार्थी हो तुम तो जो ।" राजी मुस्करा पड़ी, "मैंने इतने परिश्रम से कलियों की सेज सजाई है और तुम यहाँ अन्धेरे में रहना चाहते हो · चलो भाग चलें उस दीप के पास—जहाँ हमारी मंजिल है ।" और राजी ने उसको हाथ से पकड़ कर आगे बढ़ने के लिए कहा और जब वे आगे बढ़ने लगे, सीढ़िया उतरने लगे तो ठन्डी हवा चलने लगी और दो चार सीढ़ियाँ उतर गए तो हवा इतनी ठण्डी हो गई थी जैसे नदी बह रही हो । राजी को सार्दी लगने लगी । मारे सर्दी के वह राजीव से लिपट गई और रजीव ने उसको कस कर पकड़ लिया । "राजी"—राजीव के दांत भी सर्दी के कारण टकराने लगे, "इतनी सर्दी जाने आगे क्या होने वाला है । चलो अब भी वक्त है वापिस चले चलें । मेरा कहना

मान भी लो।" लेकिन राजी का तो मारे ठण्ड के बुरा हाल हो गया था उसके मुंह से बोल नहीं फूट रहे थे और राजीव ने उसको बाहों में भर पीछे मुड़ना चाहता था लेकिन ज्यों ही उसने वापिस जाने के लिए सीढ़ी पर पाऊं रखना चाहा वहां सीढ़ियां नहीं थी बल्कि हमवार जगह थी, "अब गए काम से।" राजीव ने राजी को कहा, "अब तो सीढ़ियों का रास्ता भी बन्द हो गया अब तो हर हालत में आगे ही बढ़ना पड़ेगा।"

"लेकिन सर्दी से मेरी तो जान निकली जा रही है।" राजी ने राजीव से लिपटते हुए कहा।

"सब तुम्हारी वजह से हो रहा है।" राजीव ने उसको वहां पर बैठने के लिए कहा।

"यहां बैठने का कोई फायदा नहीं चलो आगे चलते हैं या तो ठण्ड से सिकुड़ जायेंगे या फिर पार कर जायेंगे इस ठण्डी लहर को।"

"लेकिन यह ठण्ड की लहर नहीं है राजी—हम ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जायेंगे त्यों त्यों ठण्ड और बढ़ती जाएगी।"

"तुम्हें इस रियासत के मौसम का कुछ पता नहीं यहां ठण्डी और गरम लहरें नदियों की तरह बहा करती हैं जिस प्रकार नदी बहती है उसकी चौड़ाई दस फूट से सौ फुट तक हो सकती है ठीक उसी प्रकार यह गरम सर्द लहरें बहा करती हैं अब यह पता नहीं कि ठण्डी लहर की चौड़ाई कितनी है। लेकिन मुझे यह विश्वास है कि इस ठण्डी लहर को पार करते ही अच्छा मौसम शुरू हो जायेगा और फिर हम तुम उछलते कूदते पुष्प वाटिका तक पहुँच सकेंगे। बस इतनी कृपा करो मुझ पर कि मुझे अपने आपसे लिपटे रहने दो ताकि मुझे ज्यादा ठण्ड न लगे।"

"जहां दो जवां बदन आपस में टकरायेंगे वहां ठण्ड का

क्या काम।"

"ठण्ड की ऐसी की तैसी।" राजी मुस्करा पड़ी और राजीव से ही लिपटे वे आगे बढ़ने लगे लेकिन अब सीढ़ियों पहले से कुछ अधिक टूटी फूटी होती गयीं।

पाँच सात सीढ़ियां उतरने के बाद कुछ समतल जगह आ गई। वे दोनों वहां पर खड़े हो गये। "यहाँ तो कुछ रोशनी दिखाई दे रही है।" राजीव ने राजी के कन्धे पर रख दिया।

"लेकिन मुझे घाटा रहेगा रोशनी में।" राजी ने राजीव के हाथ पर अपना हाथ रख दिया। और उसको आगे बढ़ने को कहा। ज्यों ज्यों वे आगे बढ़ते गये रोशनी भी बढ़ती गई और अन्त में वे एक वृक्ष के नीचे खड़े हो गए। वृक्ष के पत्तों से रोशनी छन छन पर उन पर पड़ रही थी तभी राजी ने पूछा, "यूं मालूम पड़ता है जैसे यह रोशनी चान्दनी हो ?"

"चान्दनी नहीं तो और क्या ? कोई मशाल थोड़ी जल रही हैं।" राजीव मुस्करा पड़ा और नूरानी चान्दनी में वृक्ष के पत्तों से छनती चान्दनी में नहाते हुये राजी के गुलनार चेहरे को जरा गोर से देखा और मुस्करा कर बोला, "आप से मिल कर बड़ी खुशी हुई ?"

राजी झेंप गई और राजीव एकटक उसकी ओर देखता रहा। राजीव के इन साधारण शब्दों ने उसके मन में अनोखी बेकली उत्पन्न कर दी थी एक अनजानी चाह—एक रंगीन सी झलक जिसने उसके मन को झंकृत कर दिया।

राजीव को विश्वास था कि राजी अवश्य कुछ बोलेगी लेकिन जब वह बहुत देर तक कुछ नहीं बोली बल्कि वह तो लाज के मारे राजीव के पीछे खड़ी हो गई और जब राजीव ने अपना मुंह राजी

की ओर कर लिया तो उसने पाया राजीव के श्वेत मुख पर गुलाबी झलक। तो उसने जरा घूम कर कहा, "तुम भी कैसी विचित्र हो। तुम्हारा रंग धूप में ताम्बे की तरह दमकता है और चान्दनी में श्वेत पड़ जाता है।"

राजो से कोई उत्तर नहीं बन पड़ा लेकिन एक ऐसी हलचल उसने अनुभव की जो उसने कभी अनुभव नहीं की थी। एक अनजान उल्लास जिसने उसकी रग रग में मस्ती भर दी थी। एक विचित्र लाज से वह सिमटी जा रही जिसने उसने उसके मुखड़े को कई रंगों में रंग दिया था।

दूसरे ही क्षण उसको पुष्प वाटिका की याद आ गई और जब उसने आँखें उठा कर उधर देखा तो वही सब कुछ दिखाई दे रहा था। वह दीप अभी तक टिमटिमा रहा था मानो उसकी टिमटिमाती लौ उसको कह रही हो, कि जल्दी आओ वरना मैं बुझ जाऊंगा और फिर तुम लोगों को पुष्प वाटिका के अन्दर जाने का रास्ता नहीं मिलेगा। और यह सोच कर वह काँप सी गई और दृढ़ता से उसने राजीव के कन्धे पर हाथ रख दिया, "जल्दी चलो नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि हमारे पहुँचने से पहले से दीप गुल हो जाये।"

"यहाँ से हिलने को तबीयत नहीं करती— क्योंकि न तो यहाँ पर गर्मी है और न सर्दी—बहुत सुहाना मौसम है कुछ देर के लिये यहाँ रुक जाते हैं फिर चले जायेंगे।" और अन्त में राजीव ने दृढ़ता से कहा, "हमारे पहुँचने से पहले दीप कभी नहीं बुझ सकता।"

हवा के नरम नरम झोके अठखेलियाँ कर रहे थे राजी के केशों से। इस धुन्धली रोशनी में राजीव ने राजी की आँखों में देखा और बस एक नजर इस एक नजर ने क्या कुछ नहीं किया।

"ऐसे तो न देखो मुझे।" कह कर राजी के गालों पर हल्की

बदली छा गई ।

"कहीं बहक न जायें हम ।" राजो ने यह शब्द कुछ इस ढंग से कहे कि राजी लाज से दोहरी हो गई और मन्द मन्द मुस्करा कर कहने लगी, "जो चाहता है पलकें मूंद कर तुम से ढेर सारी बातें करूँ ।" और फिर उसने राजीव के बैठने के लिए एक शिला की ओर इशारा किया और वे दोनों वहाँ पर बैठ गए ।

बैठ कर राजो ने अपना चेहरा राजीव की गोद में छिपा लिया । आँखों में खुमार सा भर गया था । पलकें बोझिल हो उठीं । लाज की झुरझुरी उसके सारे शरीर में दौड़ गई । पलकें उठा कर वह कुछ बोली नहीं पर पल भर के लिए राजीव की आँखों में अपनी छाया देखती रही, फिर उसकी बोझिल पलकें अपने आपही नीचे झुक गयीं । राजीव लगातार उसके बालों को उंगलियों के पोरों से संवारता रहा । और उसकी पीठ को थप-थपाता रहा । कुछ क्षणों तक यही स्थिति रही कि इसी बीच राजी ने एक बार फिर अपनी भारी भारी पलकें उठा कर राजीव की आंखों में झांक लिया और फिर तुरन्त ही उसकी आंखें झुक गयीं ।

राजीव ने उसकी यह शरारत देख ली तो उसके हृदय की गति भी तेज हो उठी । एक अपरिचित खुशी उसके नस नस में फूट पड़ी । कुछ क्षणों तक वह उस अपार सौन्दर्य को निहारता रहा । सहसा उसकी पलकें भी भारी हो झुक गयीं ।

राजीव राजी की मोहिनी मुद्रा, मृगी के समान नेत्र, मुस्कान भरे अधर, गठा शरीर और कोमलहाथ देख कर गूद गूद हो गया और उसके कानों में पड़ गई राजी की धीमी धीमी मुस्कराहट तभी राजीव ने पूछा, "अजी आज तुम इतनी प्रसन्न क्यों हो ?"

राजी ने अधरों पर अर्ध मुस्कान बिखेरते हुए अपनी बाहों को फैलाया और माथे पर आयी हुई लट को जरा पीछे की ओर हाटया ऐसा करते हुए उसके सुर्ख होचले गाल थोड़े से और लाल हो गए। आँखों में उन्माद लाकर पतले स्वर में बोली—"अभी क्या पूछ रहे थे ?

राजी के मुख मण्डल पर यौवन का मण्डराता उत्साह, आन्तरिक प्रसन्नता की चमक, आँखों में मादकता और शरीर में हल्की सी कम्पन देखकर राजीव ने पूछा—"आज तुम इतनी खुश क्यों हो ?"

"हर खुशी कारण नहीं हुआ करता। कई खुशियां बिना कारण के भी हुआ करती हैं—"

राजी की आँखों में लाल रेखाएं देखकर राजीव को अज्ञात मिठास का अनुभव होने लगा। जो बार-बार उसके कोमल मन को गुदा-गुदा रहा था। और राजी के होठों पर दबी मुस्कान देखकर वह नशे में इतना बेसुध हो गया कि उसको पता तक न चला कि कब उसने राजी को अपनी बाहों में जकड़ लिया था।

"चलिए भी अब यहां से कहीं ऐसा न हो कि पुष्प वाटिका तक पहुँच भी न पाएं ?"

राजीव उसकी बात सुनकर भी उसकी मदभरी आँखों में आवक सा देखता रहा। मानो वह मदिरा के प्यालों से पूर्णतया रस पान करना चाहता हो।

"अब चलिइएगा भी—"कह कर राजी उसकी बाहों से खिसक गई।

"जब तक हमारी मांग नहीं पूरी होगी तब तक हम यहां से नहीं हिलने के ?" कहकर राजीव ने अपने दोनों गालों पर हाथ रख दिए।

"माँग—कौन सी माँग—?"

"हमारे गले लग जाओ"—राजीव की निगाहों राजीव के वक्ष पर टिकी हुई थी जो तूफानी सागर की तरह ठाठें मार रहा था और राजीव का कोमल हृदय भी कौधनी की तरह धड़कने लगा।

राजी ने काम्पती आवाज में कहा—"मैं प्यार को जीवन की एक बहुत बड़ी आयश्यकता माननी हूँ।" कहकर राजी ने उसको बाहों का हार पहना दिया—"प्यार के बिना जीवन एक ऐसा उपवन है जिस में फूल है लेकिन उन फूलों में महक नहीं।"

"तुम ठीक कह रही हो राजी—"राजीव की उतावली उंगलियाँ जैसे ही उसके दिल के ऊपरी आवरण पर पड़ीं, राजी को लगा जैसे बिजली का जलता तार उसे छू गया हो—'ऊई' करके वह राजीव से इतने जोर से अपने आप ही लिपट गयी कि दोनों की धड़कनें एक दूसरे को प्यार करने लगीं। राजीव उसकी उमंग भरी छाती को गुदगुदाता रहा और जब राजी से अधिक गुदगुदाहट सहन न हो सकी तो लजरती आवाज में राजी ने कहा—"हर चीज की सीमा उलंघन करने लगे हो तो इसका परिणाम ठीक नहीं होगा—" कह कर राजी राजीव के बाहों से आजाद होने का प्रयत्न करने लगी।

"हाँ मैं सीमा उलंघन करना करता चाहता हूँ—क्या तुम रोक सकती हो।" राजीव को राजी को कस कर पकड़ लिया जैसे अब की बार उसको कभी अपनी बाहों से नहीं जाने देगा।

राजी की आंखें अनायास ही मून्द गई। उसे लगा कि उसके होठों पर राजीव के होंठ नहीं बल्कि जलता अंगारा आ पड़ा हो। उसने चाहा कि इस आग से अपने नाजुक होठों लो बचा ले, चाहा कर कोशिश की पर असफल रही। राजीव के चुलबुले होठों में इतनी ताकत थी कि उसके होठों को अपने होठों के नीचे से फिसलने

नहीं दे रहे थे। राजी के मुख से बोल नहीं फूट रहे थे।

राजी के नूरानी चेहरे को राजीव ने दोनों हथेलियों के बीच ले लिया—"जी चाहता है जिन्दगी भर तुम्हें देखता रहूँ—देख देख कर प्यार करके अपना जी बहलाता रहूँ—" और राजी जो अब तक निष्प्राण सी आँखें मूँदे सब कुछ सुन रही थी बोली पड़ी—"तो मैं तुम्हारे लिए एक जी बहलाने का खिलौना हूँ—

"तुम मेरी जिन्दगी हो राजी—"

"और ज्यादा न बनाओ मुझे—बहुत हो चुका अब चलो भी देर हो रही है पुष्प वाटिका—"

"तेरे मन में अनार क्यों फूटने लगते हैं पुष्प वाटिका को देख कर—" राजीव ने बात काट कर कहा। "यहाँ बैठे तुम्हें क्या तक-लीफ हो रही है—यह समा—यह पतों से छनती चाँदनी की फुवारें—" और चांदनी की बरखा को देख कर राजी भी उसके साथ-साथ मुस्कराने लगी।

"तुम्हारी यह चंचल मुस्कुराहट बतला रही है कि तुम मेरी बात समझ गयी हो ? और जब तुम मेरी बात समझ रही हो समझ क्या रही हो बल्कि समझ गयी हो तो मुझे विश्वास है कि तुम उस को मान भी लोगे ?"

"आज तक मैंने तुम्हारी कोई बात टाली भी है या आज ही टालूंगी—" राजी ने शोखी से कहा—लेकिन वास्तव में यह राजी की आवाज नहीं थी बल्कि उस रंगीन वातावरण का रंग था जो उस पर चढ़ चुका था—जिसमें वह पूरी तरह से रंग चुकी थी—और यही रंग उसको ऐसा कहने के लिए विवश कर रहा था। तभी तो उसका शरीर एंठने लगा उसकी नसें विद्रोही हो उठी और वह अपने होशोहवास गंवाती जा रही थी और होश में आने के लिए

राजीव की सश्कत बाहों की आवश्यकता थी इन्हीं बाहों में समाने के लिए तो वह कह रही थी कि मैंने आज तक आपकी कोई बात नहीं टाली—"

"ऐसा तो मैंने कभी नहीं कहा—"

"लेकिन तुम मेरी बात टाल रहे हो ?"

"मैं तुम्हारी बात टाल रहा हूँ यह कैसे हो सकता है - यह तुम क्या कह रही हो राजी -"राजीव ने कहा और संभल कर बैठ गया।

"तुम देर लगा रहे हो—पुष्प वाटिका तक पहुँचना बहुत आवश्यक है और उसके पहुँचे बिना में और कहीं नहीं जाऊँगी और न ही—"

"चुप क्यों हो गयी हो बोली न आगे क्या कहना चाहती हो ?"

"और न ही कोई तुम्हारी बात मानूंगी जब तक पुष्प वाटिका तक नहीं पहुँचते।"

"राजीव ने अपनी हथेली फैला दी—यहाँ हाथ रखकर वायदा करो कि पुष्प वाटिका में पहुँच कर तुम वही करोगी जो मैं चाहूँगा—"

राजी ने राजीव की फैली हथेली की ओर देखा और उठ खड़ी हुई—"मैं तुम्हारी प्रेमिका हूँ गुलाम नहीं ? समझे—" तलखी से कहकर राजी पुष्प वाटिका की ओर जाने लगी और मुड़कर उसने राजीव को कहा—"मुर्गा अगर बांग न देगा तो क्या सुबह न होगी ? अगर तुम साथ नहीं देते तो क्या मैं अकेली वहाँ नहीं जा सकती—जा सकती हूँ और अवश्य जाऊँगी और वहाँ पर पहुँचगी। मैं जा रही हूँ पुष्प वाटिका में यदि तुम्हें मेरी जरूरत हो, वहाँ आ जाना।" कहकर राजी ने राजीव की फैली हथेली को देखा जा अब तक फैली हुई थी। राजीव की हथेली को देख कर राजी ने मुस्करा

कर उसे अपने पास बुलाया —"आ भी जाओ –" और राजीव उठ कर उसके पास चला गया और वे दोनों चलने लगे। कुछ कदम चलने के बाद फिर अन्धेरा होता गया और राजीव ने महसूस किया कि जहाँ से वे गुजर रहे हैं पानी-पानी सा लग रहा था। उसने राजी के कन्धे पर हाथ रख दिया और कहने लगा—"राजी यूं मालूम होता कि यहाँ पानी है।" राजी ने हाँ में सिर को हिला दिया लेकिन राजीव को कुछ दिखाई नहीं दिया। पानी अब घुटनों से ऊपर हो चुका था तो राजीव ने कहा—"राजी पानी गहरा होता जा रहा है कहीं ऐसा न कि पानी इतना गहरा हो जाए कि कहीं ··

"कहीं डूब न जायें—" राजी ने पतली सी मुस्कराहट के साथ कहा—यह तो पानी की छोटी सी नदी मालूम होती है। यदि पुष्प वाटिका तक पहुँचने के लिए आग का दरिया भी पार करना पड़े तो भी मैं मुँह नहीं मोड़ूंगी।" कह कर राजी वहाँ पानी में खड़ी हो गयी और उसने राजीव के कन्धे पर अपने हाथ रख दिया और राजीव ने उत्तर में राजी के कन्धे पर रखे हाथ को उसकी कमर में डाल दिया—राजीव ने अनुभव किया पानी अब राजी की नाभि पहुँच चुका था। दम भर के लिए राजी ठिठुक गयी और उसको दिखाई दे रही थी पुष्प वाटिका के मुख्य द्वार पर टिमटिमाते दीप की कांपती लो—"मैं आ रही हूँ अब बुझ मत जाना—" और ज्योंहि उसने अगला कदम बढ़ाया—पानी बहुत गहरा होता गया और राजीव ने उसको कस कर पकड़ लिया—"राजी थोड़ी सी देर के लिए रुक जाओ पानी गहरा होता जा रहा है कहीं ऐसा न हो कि पानी में डूब जायें—"

"डरो मत अगर डूब भी गए तो भी वहाँ तक पहुँच जाएंगे —" राजी ने दृढ़ता से कहा और जब उसने दूसरा कदम रखा तो भी पानी उतना ही गहरा था अधिक गहरा नहीं हुआ था। राजीव

समझ गया था कि राजी अवश्य पार कर जायेगी इसलिए उसने राजी का धीरज बन्धाते हुए कहा—"चलो ;यह भी अच्छा हुआ कि पानी न गर्म है और न सर्द--"

"बड़ा खुशगवार पानी है—" राजी मुस्करा पड़ी "लेकिन यह है सब तुम्हारे ही सहयोग से—" कहकर राजी आगे बढ़ना चाहती थी इसलिए वह राजीव से और अधिक लिपट गई थी।

दो चार कदम चलने के बाद पानी की गहराई कम होती गयी और अब जब कि पानी घुटनों को छू रहा था झुक कर राजी ने उँगलियों को सिकोड़ कर चुल्लू में पानी भर कर राजीव के मुंह के पास ले गयी—"लो अमृत पान करो।" और राजीव चुपचाप उस पानी को पी गया लेकिन बहुत देर तक पकड़े रहा राजी की हथेली को—और राजी देखती रही पुष्प वाटिका के द्वार पर टिम-टिमाते दीपक को—"वह देखो हम पहुँच गए हैं।" और राजीव ने प्रसन्न होकर राजी को कस लिया, "वह देखो मुख्य द्वार पर लिखा है स्वागतम—"

"सुनहरी अक्षर में लिखा दिखता है।" राजी ने कहा और तेज गति से द्वार को पार कर पुष्प वाटिका में पहुँच गयी। मारे प्रसन्नता के उसके शरीर का सारा खून उसके गालों पर उतर आया था। राजीव राजी की आँखों की गहराई में और डूब गया और उसके तरल गालों पर नाचती हुई ताजगी में अभी वह डूब उतर ही रहा था कि राजी ने संकेत से उसका ध्यान जवां कलियों की सेज की ओर आकर्षित कराया और राजीव सेज को देख कर फूले नहीं समा रहा था।

दूसरे ही क्षण राजी के हाथों में अपने वस्त्र थे वह चकित खड़ी अपने वस्त्रों को देख रही थी और उनको पहनने की सोच रही थी कि राजीव ने उसके हाथ से वस्त्र खींच लिए, "अब जवां कलियों

की सेज तक पहुँच चुकी हो और यह मत भूलो कि तुम ने मुझ से वायदा किया है और अगर तुम ने अब भी अपना वायदा पूरा न किया तो मेरा तुम पर से सदा-सदा के लिए विश्वास उठ जाएगा।" राजी चुपचाप खड़ी राजीव की बात सुन रही थी और राजीव अपने भीगे वस्त्र उतारने लगा। राजीव अपने काम में व्यस्थ था और राजी जवां कलियों की सेज पर लेट गयी और धस गयी फूलों की पत्तियों में —उसने अपने शरीर पर कुछ पत्तियों इस प्रकार से बिखेर दी कि राजीव को कुछ पता ही न चल सके।

और ज्योंही राजीव सेज की ओर बढ़ने लगा उसके पांव से कोई चीज टकरा गयी और जब उसने वहाँ हाथ लगाया तो उसके हाथ में बोतल थी वह हैरान था यह बोतल और यहाँ कैसे? बोतल को हाथ में पकड़े वह राजी के पास बैठ गया और उसने बोतल को गर्दन से पकड़ लिया, और राजी की चढ़ती आँखों में झाँकता हुआ बोला, "मदिरा की बोतल को गर्दन से और औरत को हमेशा कमर से पकड़ना चाहिए बड़े बूढ़ों का यह मत है। क्यों राजी तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"बड़ी फिलासफी पखारने लगे हो?"

"हाथ में जब जाम हो और पहलू में कविता हो ओर जवां कलियों की सेज हो।"

"लेकिन तुम्हें कैसे पता है कि यह मदिरा की बोतल है?"

"अपने कर कमलों से इसका घूंघट खोलो—सब पता चल जायेगा।" कह कर राजीव के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गयी।

"हटाओ-हटाओ—इसको हमारे सामने से—हम अपनी सौत के मुँह नहीं लगना चाहते।"

"लो तो पहले मैं तेरी सौत का कत्ल किए देता हूँ" राजीव ने एक ही झटके से बोतल को खोला और पीने लगा राजीव ने अनुभव किया कि जैसे अन्दर ही अन्दर कांच की तरह कोई चीज चिटक चिटक कर टूटने लगी हो ?

"क्यों कैसा स्वाद है इसका ?"

"तुम्हारे से मिलता जुलता है ?"

"वह कैसे ?"

"तुम्हें देख कर जैसे कांच की तरह कोई चीज अन्दर ही अन्दर चिटक चिटक कर टूटने लगी थी ठीक वैसा ही स्वाद है इसका भी।"

सुन कर राजी लजा गयी। और राजीव ने उसका हाथ पकड़ लिया, "तुम तो ऐसी लजाती हो, जैसे प्रान-प्यारे से छेड़-छाड़ करते हुए, नई नवेली दुल्हन दिन दहाड़े अपनी ददिया सास के द्वारा देख ली जाये।"

राजीव के जीवन में भी तो बहार आ गयी थी। यह कितनी अनहोनी बात हो रही थी वह तो बेचारा अब तक यही समझ रहा था कि पुष्प वाटिका तक पहुँच भी पायेंगे कि नहीं। लेकिन अब तो वे पहुँच गए थे। तरल पदार्थ अब तक काफी असर कर चुका था। राजीव ने अनुभव किया कि आग की लपट की तरह कोई चीज उसके सारे शरीर में दौड़ गयी। और राजीव की बेलगाम नेगी कामुकता और वासना का सागर हिलोरें ले रहा था। आग की लपट की तरह राजीव के जवां जिस्म में कुछ सुलगता ही रहा और जब उसने राजी के अंग-प्रत्यंगों को अपने से लगा लिया तो उसे लगा कि उसने राजी को अपने जिस्म से नहीं बल्कि आग की लपट को अपने से लपेट लिया है।"

"दूध की रखवाली बिल्ली—दूध की रखवाली बिल्ली—" अनायास ही कोई ऊँची आवाज से चिल्ला रहा था। यह डरावनी आवाज सुन कर राजीव के हाथ पाँव कांपने लगे और राजी के मुँह से जैसे बोल नहीं फूट सकेंगे इस तरह से सहम गयी थी वह।

आवाज नजदीक और तीव्र होती गयी और फिर एक जोर का ठहाका सा हुआ—"दूध की रखवाली बिल्ली—"उस अजनबी की आवाज सुनकर राजी का शरीर पतझड़ के मारे हुए पत्ते की तरह कांप-कांप उठता।

"आवाज तेज होती गयी। किस कम्बखत को मौत यहाँ खींच कर लाई है।"

"मौत" शब्द सुन कर राजी सोचने लगी—और राजीव ने उसको सान्त्वना दी। "तुम डरो मत मैं तुम्हारे साथ हूँ—लेकिन समझ में यह नहीं आता कि कबाब में हड्डी कहां से आ गयी?"

राजीव अभी-अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि उसने अजनबी को देख लिया जो उनकी तरफ ही बढ़ा चला आ रहा था वह आदमी बहुत बदनुमां था। मोटे मोटे होंठ, पसीने से लथपथ, फोड़ा-फुंसियों के दागों और नश्तरों से कटा फटा थल-थल और लेही-सा चेहरा, पीलिया आँखें और बादी फूले हाथ जिन में अन्त में ठुकी-ठुकी पिटी-सी उँगलियां दिखाई देती थीं और उन उंगलियों के बीच में एक हन्टर बड़ी मजबूती से पकड़ा हुआ था राजीव उसे अपनी ओर आता देख रहा था उसके होठ हिल रहे थे और उसके चेहरे पर उदास और चोट खाया हुआ भाव मण्डरा रहा था। अजनबी ने अपनी छोटी छोटी आँखों से राजीव को घूर कर देखा। और राजीव को जैसे काठ मार गया हो। गूंगे की भाँति राजीव ने उसकी ओर देखा। लेकिन जाने क्यों एकाएक गुस्से की लहर उसके शरीर में दौड़ गयी। और राजीव ने पूछ लिया।

"तुम कौन हो ?"

"मैं तुम्हारे बाप का नाना हूँ।" और फिर जरा तीव्र आवाज में उसने पूछा। "लेकिन तुम्हारे साथ यह छोकरी कौन है ?"

"जाओ-जाओ अपना रास्ता नापो ? समझे वरना..."

"वरना तुम क्या कर लोगे मेरा ?" उसने छड़ी हिला कर कहा—"नादान छोकरे तुम जो कुछ करने पर तुले हुये हो शायद जानते नहीं कि इसकी सजा क्या है ?"

"मैं सब कुछ जानता हूँ, और मैं यह भी जानता हूँ कि तुम यहाँ क्या करने आए हो। अब तुम यहां से नौ दो ग्यारह हो जाओ वरना अगर मैं एक बार सेज से उठ गया तो तुम्हें जिन्दा जमीन में गाड़ दूंगा समझे।"

"दूध के दाँत तो टूटे नहीं, और दुनियाँ भर के हुनर सीख लिए।" उसने अपने नोचे-खरोचे चेहरे को जरा सख्त करके कहा।

"मुझे उठने पर मजबूर न करो, दफा हो जाओ यहाँ से। राजीव ने नफरत से उस अजनबी की ओर देखा।

"मैंने कहा न कि अपनी थूथनी को काबू में रखो।" उसने अपने मोटे मोटे होठों को जुम्बश तक न दी और पहले से अधिक निश्चल अन्दाज में कहा—"तुम शायद जानते नहीं कि अस्मत के लुटेरे को क्या सजा है ?" कह कर वह अजनबी राजीव की ओर बढ़ने लगा कि एक लड़की आकर उसके सामने खड़ी हो गयी। अजनबी ने उसके कन्धे पर हाथ रख दिया, "तुम कहाँ गयीं थी। कद्दू की दुम, तुम्हारे बदले मुझे यहाँ चाकरी बजानी पड़ती है।" कह कर उसके चेहरे पर मीठी-मीठी मुस्कान चस्पा हो गयी। और फिर उसने राजीव की ओर संकेत करके कहा—"इन नादान लोगों को समझा दो और अगर फिर भी न मानें तो मेरे पास ले आना, पकड़

कर ।" कह कर उस अजनबी ने घूर कर राजीव की ओर देखा और वहाँ से चलता बना । उसको जाता देखकर राजी की जान में जान आ गयी और मुस्कुरा कर राजी ने उस लड़की को अपने पास बुला लिया ।

लड़की ने राजीव को घूर कर देखा और कहा—"युवक, शायद तुम जानते नहीं कि तुम अभी-अभी किस से जुबान लड़ा रहे थे ?"

"मैं उसे पहचानता हूँ और तुम्हें भी पहचानता हूँ देवी जी ।" राजीव ने जरा सी आँखें सिकोड़ कर कहा, "तुम लोग बस प्यार के रास्ते की रुकावट हो ।"

"लेकिन क्या तुम यह जानते हो कि प्यार कुछ नहीं बल्कि मृगतृष्णा है ।"

"पर मेरी समझ में यह नहीं आता देवी जी कि यह जानते हुए कि प्यार मृगतृष्णा है तो फिर इसी प्यार के लिए क्यों सारी दुनिया पागल है ?" कह कर राजीव ने राजी के चेहरे को बालों से ढक लिया ।

"नादान छोकरी को चुंगल में फंसा लिया है तो तुम इसको प्यार करने की संज्ञा देने लगे हो ।' लड़की ने कुछ इस अन्दाज में कहा जैसे वह राजी राजीव के प्यार की खिल्ली उड़ा रही हो ।

'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद ।" राजीव ने भी उसी लहजे में कहा —"कभी तुमने इश्क किया हो तब जानो भी कि क्या होता है ?"

"चूहे को हल्दी की गांठ मिल गयी तो वह भी पंसारी की दुकान खोल कर बैठ गया ।"

"जुबान संभाल कर बात करो देवीजी—वरना तुम्हें भी उसी रास्ते पर भेज दूंगा जिस पर उस बूढ़े खूसट को भेज दिया है ।"

"बूढ़ा खूसट अभी यहीं खड़ा है अभी गया नहीं, अजनबी आवाज फिर लहराई। और उसने राजीव के पास एक टूटी हुई बोतल रख दी—"अगर तुम प्रेमी हो तो इस पर जोर से झटके से हाथ मारो हम तुम्हारा खून देखना चाहते हैं ?

'बोलो कैसे हाथ मारूँ इस बोतल पर ?"

"झटके के साथ हाथ मारो और कैसे मारो।"

राजी ने राजीव की आँखों में निश्चय की लौ देख ली थी इस पर उसने राजीव के दोनों हाथ पकड़ लिए। "भगवान के लिए ऐसा न करो।"

"अरे है क्या यह ? ऐसे खेल तो हमने बचपन में अनेकों खेले हैं—और आज फिर हमारी मुहब्बत को ललकारा जा रहा है।" और दूसरे ही क्षण राजीव ने अपना हाथ जोर से उस बोतल पर मार दिया। झरने की तरह रक्त राजीव के हाथ से बहने लगा लेकिन उसके माथे पर या शरीर के किसी अंग पर शिकन तक नहीं आई लेकिन राजी ने जब उधर को देखा तो उसके मुँह से चीख सी निकल गयी।

चीख कर राजी की नींद खुल गयी, उठ कर वह बैठ गयी, उसने अपने वस्त्रों को देखा, अपनी चारपाई को देखा, लेकिन वह स्वप्न वाली पुष्प वाटिका, और जवां कलियों की सेज, वह बूढ़ा खूसट, और वह देवी, बैठे-बैठे वह घबराने लगी, और स्वप्न को याद करने लगी, स्वप्न की धुंधली रेखायें उसके मस्तिष्क पर छाती गयी, और सोचने लगी जाने क्या होने वाला है।

झरोखे से झांक कर राजी ने देखा कि उसके परिवार के लोग सब उठ चुके थे। अपने अपने काम में व्यस्थ थे। सुबह गुजर गयी। दोपहर आ गयी और फिर जब वह शाम को नदी के पार पहुँची जहाँ राजीव उसकी प्रतीक्षा कर रहा था बाहें फैलाए। आते ही

राजीव ने उसको बाहों में कैद कर लिया। "मुझे उम्मीद थी कि तुम अवश्य आजाओगी।"

और फिर राजी राजीव के हाथ को देखने लगी "तुम्हारे हाथ पाँव तो ठीक है न ?"

"देख लो सही सलामत हूँ।" राजीव अपने हाथ उसको दिखाने लगे—"लेकिन तुम्हें हो क्या गया है आज तुम बहुत घबराई हुई हो।"

"रात बहुत भयंकर स्वप्न देखा था ?"

"स्वप्न हुआ करते हैं भयंकर नहीं ?" राजीव ने मुस्करा कर कहा।

"लेकिन वह स्वप्न जो मैंने देखा है वास्तव में बहुत ही भयंकर था सुन्दर नहीं ?"

"लेकिन मैं इससे सहमत नहीं। अगर स्वप्न भयंकर था तो उसमें सुन्दरता भी कहीं अवश्य होगी।"

"हां सुन्दरता भी थी उसमें लेकिन उसकी भयंकरता ने सारी सुन्दरता को ढाँप लिया था।"

"यह कैसा स्वप्न था मैं भी तो जानूं ?"

और फिर राजी धीरे-धीरे कोमल-कोमल शब्दों में वह धुंधला स्वप्न सुनाने लगी जो एक धुंधलाके की तरह अभी तक उसके मन मस्तिष्क पर अधिकार जमाये हुआ था। और जब राजी चुप हो गयी तो राजीव ने कहा—"तभी तुम मेरे हाथ पांव देख रहीं थी।"

"वह तो सही सलामत हैं। वह तो मैं देख चुकी।"

"लेकिन जवां कलियों की सेज का नृत्य—वह तो नहीं देखा तुमने ?"

'लेकिन वह तो एक स्वप्न था ?"

"लेकिन मैं इस स्वप्न को साकार रूप देना चाहता हूँ ?"

राजी ने कहा कुछ नहीं बस राजीव की ओर देखती रही। और दोनों एक दूसरे को देखने लगे और अपने आपको समझने लगे कि जैसे वे जवां कलियों के सेज पर बैठे हों।

दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा—उनकी आंखों में लाल रेखाएं झलक रही थीं। राजी के होठों पर एक दबी मुस्कान स्पष्ट हुई।

राजीव के जीवन में अज्ञात मिठास का अनुभव होने लगा। जो बार बार उसके मन को गुदगुदा रहा था वह नशे में इतना बे सुध था कि यह देख भी न सका कि राजी कब ,उसकी बाहों से खिसक गई।

राजी आंखों में उन्माद लाकर पतले स्वर में बोली—बड़े ओ हो तुम जी—"चलिए भी अब बहुत देर हो गई है।"

राजीव उसकी बात सुनकर भी उसकी मदभरी आंखों में आवाक सा देखता रहा। मानो वह मदिरा के प्यालों से पूर्णतया रसपान करना चाहता हो।

"अब चलिइएगा—"

राजीव वहाँ पर लेट गया—नर्म-नर्म रेत पर—"जब तक हमारी शर्त पूरी नहीं होगी हम यहाँ से नहीं हिलने के—"

"लेकिन यह भी तो सोचो कि जवान लड़कियाँ कच्ची हाण्डी की तरह हुआ करती है—ऐसी छोटी-छोटी बातें में फिसलने का खतरा होता है—

"देखो राजी—एक तो तुम पूरे एक सप्ताह के लिए बाहर जा रही हो किसी के विवाह पर—और दूसरा जो तुम यह आज चांदी की जंजीर—जो तुम्हारे वक्षस्थल पर झूल रही है हम देखना चाहते हैं इसके भीतर···"

"तुम कर लो अपने अरमान पूरे—" घड़ाम से राजी राजीव के पहलू में गिर गई—राजीव राजी पर झुका हुआ था तथा दोनों तेज सांसों से एक दूसरे को देख रहे थे केवल राजी का हल्का सा दुपट्टा ही राजी और राजीव के वास्तविक वक्षस्थल की के बीच दीवार थी—अनायस ही राजी के सीने से दुपट्टा खिसक गया और उसका वक्ष था जैसे भरी बरसात में तूफानी सागर जोर-जोर से ठाठें मार रहा हो—और राजीव का कोमल हृदय भी कौधनी की तरह धड़कने लगा—

राजी ने काम्पती आवाज में कहा—"प्रेम मन में एक बार जन्म लेने पर कभी नहीं मरता और उस समय तक जीवन के साथ साथ रहता है जब तक कि जीवन नष्ट नहीं हो जाता।"

"तुम ठीक कह रही हो राजी"— राजीव ने और अधिक कस लिया।

राजीव की उंगलियां जैसे ही उसके दिल के ऊपरी आवरण पर पड़ी, राजी को लगा जैसे बिजली का जलता तार उसे छू गया हो—ऊई करके वह राजीव के और पास आ गई इतनी पास कि दोनों को धड़कनें एक दूसरे के वदन को प्यार करने लगीं। वह राजीव की बाहों में तड़पती रही लेकिन निष्ठुर बन्धनों ने जैसे कुछ सुना ही न हो। राजी के वक्ष की गर्मी उसे धीरे-धीरे मदहोश बनाती जा रही थी।

"तुम आदमी हो या—" शेष शब्द राजी के होठों में दब कर रह गए।

"प्यार में तो इतनी ही शक्ति से दबाया जाता है।"

"मुझे माफ कर दो यह पीड़ा मुझ से सही नहीं जाती। राजी ने लौटती सांस में कहा।

"लेकिन मुझे आनन्द आ रहा है इसलिए..."

"लेकिन यह कहाँ की इन्सानियत है कि अपने आनन्द के लिए दूसरे के जान पर बन आये—"

"हम तो ऐसा ही करेंगे - क्योंकि तुम जा रही हो और हम आज की याद के सहारे ही सात दिन गुजारेंगे—"

"यह भी खूब रही किसी की जान जाये और किसी को खट-खेलियाँ सूझें—"

"लेकिन यह तो प्रकृति है इस को न तुम बदल सकती हो और न मैं—" राजीव ने लरजती आवाज में कहा और निष्ठुर वन्धन कसता ही गया।

राजी चुप रह गई क्योंकि वह समझ गई थी कि राजीव ठीक ही तो कह रहा है इसलिए वह चुप हो गयी। और राजीव उसकी उमंग भरी छाती को गुदगुदाता रहा और जब राजी से अधिक गुद-गुदाहट सहन न हो सकी तो उसने कहा—"किसी चीज की हद भी होती है अब तुम हद से बढ़ने लगे हो—" राजीव के माथे का पसीने अपने ओढ़नी के आँचल से पूंछ कर राजी ने कहा।

उसके माथे का पसीने पोंछते राजी स्वयं ही उसके इतने निकट आ गई थी कि उसके दिल की धड़केनें उसके दिल से टकराने लगी। और जब राजी की धड़कनें धीरे-धीरे तेज होती गयीं तो वह निढाल हो लता की तरह राजीव से लिपट गई।

अपनी गीली शराबी बोझिल पलकें उठा कर राजी ने अपने होठों की ओर राजीव के होठों को देखा कि वे उसके होठों नहीं उतर पड़े।

राजी की आँखें अनायास ही मून्द गयीं उसे लगा कि उसके होठों पर राजीव के होंठ नहीं बल्कि जलता हुआ अंगारा आ पड़ा हो। उसने चाहा कि इस आग से अपने होठों को बचा ले, चाह कर कोशिश की पर असफल रही। राजीव के चुलबुले होठों में इतनी

शक्ति थी कि उसके होठों को अपने नीचे से फिसलने नहीं दे रहा था और उसके होठों पर अंगड़ाईयाँ लेने लगे।

कुछ क्षणों के बाद राजीव के होंठ उसके होठों पर से उठ गए और तब उसने सन्तोष की साँस ली। राजी के मुख से बोल नहीं फूट रहे थे और अपनी नशीली आँखों को उसने धीरे से उठाया।

नर्म हवा के झोंके राजी के केशों से खेलने लगे और राजीव खो गया। उसके तरल गालों पर नाचती हुई ताजगी में राजी की आँखों की गहराई में और डूब गया।

राजी के गुलनार चेहरे को राजीव ने हथेलियों के बीच ले लिया—"जी चाहता हूँ जिन्दगी भर तुम्हें देखता रहूँ—" और राजी निष्प्राण सी आँखें मून्दे सब कुछ सुनती रही।

कामनाएं जाग उठीं, और दिल के अरमानों की आग सुलगने लगी। ऊपर आकाश पर नवजात चन्द्रमा भोली-भाली मुस्कान बिखेर रहा था और राजीव डूबा हुआ था—बड़ी-बड़ी मस्ती भरी आँखों में मानो दो कमल खिले हों, गुलाब की पंखरियों के समान दो होंठ—घनी और लम्बी पलकें, सुन्दर और बारीक भवें, कपोलों पर लाज और कुंवारेपन की एक लालिमा में—राजी के मुख पर ऐसा तेज देखकर राजीव ने धीरे से कहा—"तेरे मुखड़े की आभा और ज्योति की सौगन्ध खाई जा सकती है राजी—"

"और ज्यादा न बनाओ मुझे—" जाम छलका कर राजी ने कहा—और वह महसूस करने लगी जैसे बिना मौसम की बरसात एक हल्का सा छींटा सुखती हुई खेती में नये सिरे से जिन्दगी फूंक देता है। उसने ऊपर चांद की ओर देखा जो चांदनी बरसा रहा था और वह भी चाँदनी के साथ-साथ मुस्कराने लगी।

और राजीव प्रेम के फूलों से भरे देश में पहुँच गया। राजी कि सुगन्ध भरे शरीर के स्पर्श से उसका मन आसमान पर उड़ने

लगा ।

थोड़ी देर बाद जब राजी लजा गयी तो उसने अपनी ओढ़नी के कोनों को दान्तों में दवा लिया और उसके अधरों पर लज्जा मिश्रित मुस्कराहट नाचने लगी ।

"तुम्हारी रंगीन मुस्कराहट बतला रही है कि तुम मेरे दिल की बात समझ गयी हो—"

"अब भी कुछ कसर रह गयी है । जो पहेलियाँ बुझा रहे हो—" राजी की चांदी की जंजीर झनझना उठी और वह अपने कमीज के बटन वन्द करने लगी ।

"पहेलियाँ नहीं—सीधी सादी बात है—" राजीव ने उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया । "मानोगी न ?"

"आज तक मैंने तुम्हारी वात टाली है या आज ही टालूंगी—" राजी ने शोखी से कहा—लेकिन वास्तव में यह राजी की आवाज नहीं थी बल्कि उस मदहोश वातावरण का प्रभाव था—रंग था - जो उस पर चढ़ चुका था और वह उसे ऐसा कहने के लिए विवश कर रहा था तभी तो उसका शरीर एंठने लगा उसकी नसें विद्रोही हो उठीं और वह अपने होश हवास गवां चुकी थी और होश में आने के लिए राजीव की वाहों की आवश्यकता थी इसलिए तो वह कह रही थी कि मैंने आज तक आपकी कोई बात नहीं टाली—

"ऐसा तो मैंने कभी नहीं कहा—" राजीव ने कहा ।

"लेकिन तुम मेरी बात टाल रहे हो—

"मैं तुम्हारी बात टाल रहा हूँ यह कैसे हो सकता है—" यह तुम क्या कह रही हो राजी—राजीव ने कहा और संभाल कर बैठ गया ।

"अब बहुत देर हो गयी है—कल के जाने के लिए तैयारी भी

करनी है – माँ जी गुस्सा करेंगी कि इतनी देर तक कहाँ गई थी— डांट पड़ेगी, जानते हो मैं तो लड़की हूँ ''

"दो घड़ी और बैठ जाओ"···और राजीव ने राजी को हाथ से पकड़ कर बिठा दिया · "बेठिइएगा · इतनी भी क्या जल्दी है कुछ तो रंगी वातावरण का लुत्फ उठाइएगा और फिर कोई भी मीठी-मीठी चीज चबा चबा कर खानी चाहिए निकलोगे तो सारा मजा जाता रहेगा ··

राजी ने चढ़ती हुई आँखों से राजीव की ओर देखा और वह सोचने लगी कि आज न जाने क्यों राजीव इतना रसिक हो उठा है —वह सोचने लगी शायद इसलिए कि मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जा रही हूँ ··लेकिन मेरा पौर-पौर क्यों दर्द करते लगा है···वक्त सरक रहा था इसलिए राजी ने कहा···"भोलेनाथ अब चलो भी ?"

"भोला नाथ न होता तो तम्हारे जाल में कैसे फंसता।"

"बात पलटने की कोशिश मत करो यह क्यों नहीं कहते कि मुझे भोली-भाली समझ कर अपने जाल में फंसा लिया।"

राजी को ऐसा कहता देख कर राजीव की आँखों में निश्चय की लो जल उठी और मुस्करा कर राजीव ने उसको अंक में भर लिया।

कुछ क्षणों के लिए वे एक दूसरे में लीन हो गए। तीव्रता से चलता श्वास, और धधकता शरीर, जब वे अलग हुए तो राजीव ने कहा·· "अब मुझे यूं महसूस हो रहा है जैसे किसी ने मुझे स्वर्ग से एक ही झटके से नर्क में फेंक दिया हो।"

राजी गुलाबी होठों में मुस्करा कर रह गई और कहने लगी ···"तुम्हारी बातों में जो फंसा तो फिर वह गया काम से"··· राजी ने आँखें संकोच से झुका ली और अपने मुख को राजी के वक्ष में छिपाने का प्रयत्न करने लगी। दोनों के होंठ मिले और शरीर में

ज्वाला सी भड़क उठी।

राजीव की आँखें भी उसके होठों, गालों पर से होती हुई उसकी आँखों से उलझ गई और आँखों के साथ-साथ उसका मन भी उलझ गया और उलझ कर मदहोश हो गया और इसी मदहोशी में राजीव के हाथ राजी के कमरे की ओर बढ़ गए और दोनों एक-दूसरे की भुजाओं में फिर से बन्ध गए। यह कुछ इतना शीघ्र हुआ कि दोनों में से कोई न सोच सका कि यह सब कुछ क्यों और कैसे हुआ।

राजी ने जरा सी आँखें उठा कर राजीव की ओर देखा जैसे वह राजीव की आंखों में उसका मललब समझने का प्रयत्न कर रही हो। लेकिन दूसरे ही क्षण राजीव का मतलब उसकी समझ में आ गया। लाज की सिन्दूर उसके गुलाबी गालों पर बिखर पड़ी और उसने अपना चेहरा उसके सीने में छिपा लिया।

राजीव मुस्करा पड़ा और उसकी मुस्कराती उंगलियाँ उसके नागिन जैसे केशों से प्यार करने लगी। "खूब अच्छी तरह से सोच लो कि आज तुम क्या करने पर तुले हो, "राजी ने धीरे से कहा।

"ऐसे वक्त में नसीहत की बातें मजा किरकिरा कर देती हैं ?"

"चल लूटेरे कहीं के—अपनी मौज मस्ती के लिए मुझे लूटना चाहता है।"

"मुझे लूटेरा कहा तुम ने।" कह कर राजीव चित्रलिखित-सा राजी की ओर देखने लगा।

"ऐसा भोला लूटेरा दुनिया में और कोई नहीं मिलेगा।" राजी ने कहा, "मेरा दिल लूट भी लिया और कहे जा रहा है कि मुझे लूटेरा न कहो।"

राजीव मुस्करा पड़ा—और जब उसकी हंसी रुकी तो बोला,

"इसे लूटना नहीं कहते—अदला बदली को लूट नहीं कहा जा सकता। क्योंकि तुम ने मेरा दिल लूटा है यदि विश्वास न हो तो अपने दिल से पूछूं—" बात पूरी करते ही राजीव ने राजी के संपदनशील वक्ष के ऊपरी आवरण पर हाथ रख दिया जैसे उसको बता रहा हो कि उसका भी दिल यहाँ कहीं है।

राजी अपने होठ राजीव के होठों के पास ले जा कर कुछ कहना चाहती थी लेकिन अनायास ही राजीव के होठ राजी के होठों के इतने पास आये कि राजी को साँस लेने में तकलीफ होने लगी तकलीफ बढ़ती गयी और जब वह अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गयी तो उसने धीरे से कहा। "इतने बेदर्द न बनो ?"

'अपने दर्द को कम करने के लिए बेदर्द बनना पड़ता है" अपने चेहरे पर से राजी के केशों को हटा कर जब उसने राजी के सुर्ख हो चले चेहरे और काँपते होठों को देखा, तब अपना रहा सहा होश भी खो बैठा।

न जाने कब पुरुषत्व जाग उठा था और राजी ने अनुभव किया कि उसके कोमल शरीर से कोई चीज इतनी जोर जोर से टकरा रही थी कि राजी के शरीर की रगें तड़प उठी।

लेकिन राजी ने उसका हाथ पकड़ लिया और दृढ़ता से कहा। "नहीं - यह नहीं हो सकता ?"

मुस्कुराती आंखों से राजीव ने कहा। "क्यों नहीं ?"

"नहीं - बिल्कुल नहीं—मुझे जान से मार डालो। लेकिन ऐसा कभी नहीं होने दूंगी।"

राजीव उसके पास बैठा राजी की लाज से भीगी पलकों को कई क्षणों तक देखता रहा और जब अधिक देर तक न देखा गया तो उसने राजी को भुजाओं में कस लिया।

"यह तुम मुझसे कौन सा रिश्ता जोड़ना चाहते हो ?" धीरे

से राजी ने कहा ।

"झूठे सच्चे रिश्ते तुम ही खोजती रहो राजी । मुझे सिर्फ तुम्हारा जिस्म चाहिए । आज ही चाहिए और अभी चाहिए । कह राजीव ने राजी को इस तरह कस कर पकड़ा जैसे अब राजी उसे अस्वीकार कर देना चाहती हो । राजीव की पसलियों में आग की एक लपट सी दौड़ गयी । उसने राजी को अपनी बाहों में कस कर उसके होठों से एक लम्बा घूंट इस प्रकार भरा, जैसे वह दोनों होठों से उसकी सारी जान पी जाना चाहता हो । आग की लपट की तरह राजीव के गरम जिस्म में कुछ सुलगा और जब राजीव ने राजी के अंग-प्रत्यंगों को अपने से लगा लिया तो लगा कि उसने राजी को अपने जिस्म से नहीं, बल्कि आग की लपट से लपेट लिया हो ।

राजी सुध बुध खो बैठी और राजीव खुल कर उसके कुवारो-पन से खेलता रहा और राजी निर्वीकारसी सिसकती रही । राजी ने कुछ कहा न था पर राजीव को लग रहा था कि उसे सांस लेना मुश्किल हो रहा है । बहुत धीमे से राजी ने कहा । "भगवान के के बन्दे कुछ तो रहम करो ।"

"रहम और कर्म दो भिन्न चीजें हैं राजी इस समय उपदेश देने का कष्ट न करो ।"

राजी पसीना पसीना हो गयी । उसकी रगें इतने जोर से ऐंठने लगी कि अब सांस निकले अब निकले लेकिन राजीव गांव का पका छोकरा राजी से इतने जोर से चिपका हुआ था कि बहते हुए पसीने से यह पता लगाना मुश्किल था कि यह पसीना किसका बह रहा था ।

"लेकिन यह जंगलीपन तुम पर कैसे सवार हो गया ?"

"न जाने मुझे स्वयं भी पता नहीं राजो यह यौवास्था अन्धी

होती है और आज मैं सचमुच अन्धा हो गया हूँ राजी आज मुझे तुम्हारे सिवाये कुछ नहीं दिखाई देता।"

"देखो न अब तो घरों में चिराग जल गए हैं। राजीव" राजी सिसक कर बोली "अब तो मुझे जाने दो।"

"अभी दिल नहीं भरा राजी। मेरा दिल न जाने क्यों भर भर कर खाली हो जा है।"

'मेरा दम निकल जायेगा राजीव। भगवान के लिए क्षमा चाहती हूँ। मेरी हड्डियों से धुआँ निकलने लगा है राजीव।" राजी सिसक पड़ी।

"प्रशंसा के लिए धन्यवाद।"

"अभी सारी जिन्दगी पड़ी है। आज ही मेरा हुलिया बिगाड़ने पर क्यों उतारू हुए हो ?"

"हम से जिन्दगी कौन छीन सकता है राजी।"

"तुम शायद यह सिद्ध करना चाहते हो कि तुम सा पहलवान इस धरती पर दूसरा कोई नहीं।" राजी ने सिसक कर मुस्कुरा कर कहा।

'यही समझ लो राजी। इतना कह कर राजीव पूरी शक्ति के साथ ...।

"आज तो तुमने मुझे लूट कर ही दम लिया।" राजी मुस्करा कर राजीव से अलग हो गयी।

"तुझे इक ने लटा तो घबरा गई हो,
कसम है हमें तो हजारों ने लूटा॥"

'अपनी तारीफ अपने मुंह से शोभा नहीं देती। लेकिन तुम लोग अक्सर ऐसा न कहो तो तुम लोगों का उल्लू सीधा नहीं होता।"

"आओ राजी चलो तुम्हें रमा दिखाऊं जो मेरे पीछे हाथ

धोकर पड़ी हुई है लेकिन मुहब्बत एक से की जाती है और वह हम तुम से करते हैं।"

"ठीक है मुहब्बत एक से की जाती है लेकिन लूटा तो कईयों को जा सकता है।"

"हम पॉकट मैं लूटने वालों में से नहीं, राजी फिर तुम्हारा मेरा मिलना तो निश्चत है।"

"मुहब्बत के रास्ते म भगवान बहुत जालिम है वह जानबूझ कर ऐसे रोड़े अटकाया करता है कि मुहब्बत करने वाले सदा सदा के लिए ठण्डे पड़ जाते हैं।

"मैं उन रोड़ों को अपनी ठोकरों से घूर कर दूंगा राजी। लेकिन पिछले दो दिनों से मेरी बेताबी सीमा को पार कर चुकी थी।"

'अब तो बेताब नहीं होगे ?"

"नहीं ?"

"तुमने किसी का घर जला कर राख कर दिया राजीव केवल अपनी दम भर की बेताबी को शाँत करने के लिए। आज किसी के जीवन से खेले हो राजीव इतना मत भूलना।"

"राजी।" राजीव ने राजी का सीने से चिपका लिया मैं तुम्हें प्राप्त करने के लिए भगवान से भी लड़ सकता हूँ लेकिन आज के मेरे जंगलीपन का बुरा न मानना राजी।" और राजी ने राजीव की गोद में पहली रात की सुहागिन की तरह लजाकर अपना मुख छिपा लिया था।

राजी को अपनी सुहागरात की याद आ गयी जब उसने अपना सिर राजेश की गोद में छिपाया था, यह खेल राजेश ने भी खेला था लेकिन कितना अन्तर था राजीव और राजेश में। जहां राजीव कई मिन्टों तक राजी के सांस को दबाये रखा वहां राजेश तो दम

भर बाद हांफने लगा और तब राजी ने अनुभव किया था कि कितना अन्तर है राजीव और राजेश में। राजेश उसको पुरुष नहीं दिखाई दिया वह पुरुष के बाने में स्त्री है।

कमरे में अन्धेरा अपना अधिकार जमा रहा था लेकिन राजी ने अभी तक कमरे में बती नहीं जलाई थी वह इन्हीं विचारों में खोई हुई कि राजेश ने प्रवेश किया।

"क्यों श्रीमती जी आज यह अंधेरा कैसे ?"

राजी कुछ बोली नहीं उसने खामोश निगाहों से राजेश को देखा जो उसका पति था, समाज के सामने राजो का विवाह उसके साथ हुआ था। आखिर वह भी अपने पिता का घर छोड़ कर आयी थी और उसने पिता की इज्जत के लिए अपने सच्ची मुहब्बत का कत्ल किया था। लेकिन राजेश पर उसका कुछ भी अधिकार नहीं था।

'यह खामोशी कैसी ?"

राजेश ने आगे बढ़ कर उसके कन्धे पर हाथ रख दिया।

राजी उसी प्रकार खड़ी रही अपनी जगह से हिली नहीं और कहने लगी।

"आज तो मैंने आप से बहुत जरूरी बात करनी है यदि मानो तो ?"

"क्यों ऐसी भी क्या बात है ?"

"आप इन्दर के घर जाना छोड़ दीजिए।"

"ओह—तो मालूम पड़ता है कि इन्दु ने तुम्हें सब कुछ बतला दिया है।"

"नहीं ऐसी बात नहीं है लेकिन क्या फायदा उस बेचारी ने आखिर तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। बचपने की बातें थीं सो खत्म हो गयीं।"

"इन्दु ने भी कुछ नहीं बिगाड़ा और तुम ने नहीं बिगाड़ा। पता है उसने मेरा सब कुछ बिगाड़ा है। उसी के कारण मैं मित्रों के सामने आँखें उठा कर नहीं चल सकता। वह पहली लड़की थी जिसने मेरा अपमान किया।"

"तो फिर मतलब साफ है कि इन्दु के अलावा भी तुम्हारा कई लड़कियों से वास्ता पड़ चुका है।"

"अगर मेरा वास्ता पड़ा है तो तुम कौनसी कुँवारी थीं जब इस घर में आई थीं।"

"देखिए जबान संभाल कर बात कीजिए ऐसा न हो कि आपको लेने के देने पड़ जाएँ।"

"लेने के देने। तेरी यह हिम्मत है। मेरे ही टुकड़ों पर पल कर मुझे धोंस दिखाती है।" राजेश क्रोध में आ गया और उसने एक भरपूर तमाचा राजी के गालों पर झाड़ दिया।

"खबरदार जो दूसरा हाथ चलाया। कुछ मेरा भी अस्तित्व है मैं किसी घसयारे या भाँड की लड़की नहीं हूँ जो यहाँ तेरी मार खाने के लिए आई हूँ।" राजी के गाल क्रोध से तमतमा गए।

"तुम्हें मेरी बातों में बोलने की जरूरत नहीं है।"

"मुझे जरूरत नहीं है तो और किस को है जब से इन्दर के घर से वापस आये हो बस दिन रात यह सोचते रहते हो कि कैसे इन्दु का पतन किया जाए और मित्रों के साथ धमाचौकड़ी लगा कर यही बातें करते हो। क्यों? आखिर क्यों? मैं पूछती हूँ क्यों?"

"अब बहुत हो चुका है इन्दु ने एक बार मेरे मित्रों के सामने मेरी नाक काटी है और अब उसने मेरे इस घर में भी आग लगा दी है तो क्या तू समझती है कि वह आराम से बैठी रहेगी।"

"लेकिन तुम कहाँ आराम से बैठे हो दिन रात तुम्हें यही गम खाए जा रहा है कि जिस तरह भी हो इन्दु को नीचा दिखाये जाए।

कनाट प्लेस में दो गुर्गों को पकड़ कर ले गए और उसका अपमान उसके पति के सामने करवा दिया।"

"इन्दर स्वयं ही उससे तंग आया बैठा है।"

"वह तंग नहीं आया तू ने ही उसको सब कुछ बताया है क्योंकि वह तेरा मित्र है और तुम जो कुछ उसे कहो वह तुम्हारी मान लेता है। लेकिन याद रखना कि न इन्दर और तुम इन्दु का कुछ बिगाड़ सकते हो। नारी को इतना हीन मत समझो।"

"वाह नारी को इतना हीन मत समझो। क्या बात कही श्रीमती जी ने।"

"मुझ में और बकवास सुनने की शक्ति नहीं है या तो आज से वहां जाना बन्द करो और यह ख्याल दिल से निकाल दो कि इन्दु तुम्हारी जिन्दगी में आई थी वरना मैं कल से जा रही हूँ और शायद मैं फिर इस घर में कदम न रखूं।"

"जाना हो तो बड़ी खुशी से चली जाना लेकिन मैं इन्दु से बदला लिए बगैर नहीं रह सकता", कह कर राजेश बाहर गया।

राजी उस मनहूस विवाह को कोसने लगी जिस पर राजेश और उसकी मुलाकात हुई थी। राजेश और उसकी मुलाकात क्या हुई थी बल्कि यूं कहना चाहिए कि जब राजेश ने राजी को देख लिया था तो वह उस पर मोहित हो गया था वह बार-बार राजी को देखा करता था और अन्त में एक मित्र ने उसको सलाह दी कि यदि राजी से विवाह करना है तो उसके पिता पर शराफत की धाक जमाओ उसके पास बैठ जाया करो और उन से बातचीत करो हो सकता है कि वह तुम्हारी शराफत से प्रभावित हो जायें और तुम्हारा काम बन जाए।

और फिर राजेश ने यही तरीका अपनाया वह बार-बार राजी के पिता के पास बैठ जाया करता था और चूंकि राजी का पिता,

लड़की का बाप होने के नाते राजेश से बातें किया करता था। राजेश को उसकी बातों से कोई खास दिलचस्पी नहीं थी क्योंकि राजी का पिता राधेश्याम न तो किसी ज्वलंत राजनैतिक समस्या पर बात करता था और न ही किसी हँसी मजाक की बात करता था और न ही किसी व्यापार आदि की—राधेश्याम के पास बैठे-बैठे राजेश बोर हो रहा था लेकिन फिर उसको मित्र की कही हुई बात याद आ गयी और थोड़ी ही देर के बाद जब राधेश्याम ने राजेश से उसकी नौकरी, उसके माता-पिता और शिक्षा के विषय में पूछा तब उसके दिल को तसल्ली हुई कि काम बनता दीख रहा है।

बारी-बारी से राजेश प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देता रहा और राधेश्याम घूर घूर के राजेश की ओर देखता रहा। राधेश्याम की जमाना देखी आँखों में राजेश जँच गया।

विवाह से वापसी पर जब राधेश्याम ने अपनी पत्नी से राजेश के विषय में पूछा तो उसने कहा—"लड़का तो अच्छा है सुन्दर है। स्वस्थ्य भी है—और सरकारी नौकरी पर भी लगा हुआ है—लेकिन फिर भी मेरे ख्याल में राजी से पूछ लें तो क्या हर्ज है।"

"अरी कमला—" राधेश्याम ने हँसी बिखेरते हुए कहा—तू तो कमला है भला इसमें राजी से पूछने की क्या बात है—पूछेगी तो वह कहेगी कि मैंने लड़के को फिर से देखना है—उससे बातें करनी हैं—तो बात लम्बी पड़ जाएगी और फिर इसमें से निकलेगा कुछ भी नहीं ?"

"हमें क्या जल्दी है—अभी पढ़ाई करके आयी है साल आधा तो घर पर ही रहने दो। अभी छोटी है।"

"बातें चलेंगी—मगनी होगी—और फिर विवाह होगा तो इतनी देर लग ही जाएगी।"

और जब रात को रसोई में बैठे माँ बेटी—कमला और

राजी खाना खा चुकी तो कमला ने कहा—"बेटी—अब पांच सात महीने में अच्छी तरह से चौका-चूल्हा संभाल ले और तरकारी आदि अच्छी तरह से पकाना सीख ले।"

"मां जी आप भी व्यर्थ में ही बिगड़ गयीं आज जरा दाल में नमक ज्यादा हो गया तो तुम उस पर उपदेश बघारने लगी कि अच्छी तरह चौका-चुल्हा सीख ले।"

"नहीं राजी ऐसी बात तो नहीं है लेकिन अब तुम्हारा विवाह भी करना है ?

"तो मैं अभी से आप लोगों पर भार बन गयी हूँ।"

"भार न कहो बेटी—लेकिन यह तो रीति चली आई है बेटी को मां बाप का घर छोड़ना पड़ता है और अब हम भी चाहते हैं कि तुम्हारे भी हाथ पीले कर दें। लड़का भी देख लिया है बस तुम्हारी हाँ करने की देर है।"

'लड़का'—शब्द सुन कर राजी के सीने पर जैसे किसी ने घूंसा मार दिया हो। वह सोचने लगी कि यह लड़का कौन हो सकता है। राजीव तो हो नहीं सकता, फिर यह कौन है ? राजी को विचारों में डूबता देख कर मां ने उसके सिर पर हाथ रख दिया—'अभी विवाह पर गए थे न और एक लड़का जिसको सब राजेश के नाम से पुकारा करते थे तुम ने भी तो उसको देखा ही है। दिल्ली में बड़े दफ्तर में नौकरी करता है।"

"लेकिन मैं किसी छोटे बड़े दफ्तर वाले से विवाह नहीं करना चाहती।" राजी ने दृढ़ता से कहा।

"लड़का सुन्दर स्वस्थ्य है पढ़ा लिखा है और पहल भी लड़के वालों ने की है इसलिए हमें घमण्ड नहीं करना चाहिए—आजकल के युग में जबकि लड़की के पिता को लड़का ढूंढने के लिए जूतियाँ घिसानी पड़ती हैं। और हमें तो उन्होंने ही कहा है।

"तो वह मेरी गोरी चमड़ी पर मुग्ध हो गया होगा ?"

"राजी—" उसकी मां ने उसको डांटने के लहजे में कहा। "मां के सामने यह क्या बोले जा रही है।"

"अभी तो मैंने कुछ भी नहीं कहा। जरूरत पड़ी तो मुँह खोलना पड़ेगा।"

राजी की यह बात सुनकर कमला समझ गयी थी कि जरूर दाल में कुछ काला है। राजी शायद किसी और लड़के को चाहती है। तभी तो कमला ने कहा--"तुम किसी और लड़के को···।"

"जी हाँ—मैं जिस को चाहती हूँ उसी से विवाह करूंगी वरना जिन्दगी भर कुंवारी रहूँगी।"

"तुम इतनी बिगड़ क्यों गयी हो ?" उसकी मां ने उसको अंक में भर लिया। "तुम जिसको चाहोगी तेरा विवाह उसी से होगा लेकिन लड़का है कौन ?"

"पहले वचन दो कि उसी से मेरा विवाह कराओगी ?"

"मां बेटी का क्या वचन -पगली जब लड़का तुम्हें पसन्द है बस हमने केवल इतना देखना होता है कि लड़का शराबी कबाबी न हो और अच्छे कुल का हो—जिसमें हमारी बेटी को कोई तकलीफ न हो। हम ही क्या—सभी माता पिता यही देखते हैं। हां तो बताओ कि वह कौन है ?"

"मैंने कहा न कि पहले वचन दो। आप इस बात से निश्चित रहिए उस लड़के में कोई भी अवगुण नहीं है।"

"बेटी मैं कह चुकी हूँ कि मां बेटी का वचन नहीं हुआ करता तुम विश्वास रखो और मुझ पर रखो कि तुम्हारा विवाह उसी लड़के से होगा जिसको तुम चाहती हो ?"

"तो कान खोल कर सुन लो—" राजी दृढ़ता से कहती गयी। "मुझ से विवाह करने के लिए केवल राजीव ही सेहरा बाँध कर

आ सकता है दूसरा कोई नहीं।"

"राजीव—" का नाम सुनकर कमला सन्न हो गयी वह समझ गयी थी कि राजीव चौधरी का बेटा है। "नहीं-नहीं—बेटी तुम्हारा यह रिश्ता तुम्हारे पिताजी कभी स्वीकार नहीं करेंगे। तुम्हें तो पता है कि······।"

"हाँ, हाँ वह मुझे अच्छी तरह से पता है लेकिन क्या तुम्हें यह मंजूर है कि नहीं ?"

"मेरी हाँ या न कहने से क्या होता है तुम्हारे पिता कभी इस रिश्ते को स्वीकार नहीं करेंगे ?"

"आप उनकी बात छोड़िए। अपनी बात करो ?"

राजी का पिता जो अब तक सब कुछ सुन रहा था बाहर खड़ा, एकदम अन्दर आ गया और राजी को नफरत से देखने के बाद कहने लगा —"यह रिश्ता मेरे जीते जी नहीं हो सकता।"

"तो आप के जीने के लिए अपने सच्चे प्रेम का गला घोंटना पड़ेगा—"राजी ने भी उतनी ही तीव्र दृष्टि से पिता की ओर देखा।

"ऐसा ही समझ लो "राधेश्याम की आवाज में कम्पन आता गया बेटी के मुंह से ये शब्द सुनकर—"तुम यह जानते हुए भी कि चौधरी और मैं एक दूसरे के खून के प्यासे हैं और तुम उसके राजीव से विवाह चाहती हो।"

"खून के प्यासे कैसे—केवल तुम्हारा और उनका दो बीघे जमीन पर ही तो झगड़ा हुआ था और अब तक वह जमीन भी सरकारी खाते में है। तो फिर अब तो खून की प्यास मिट जानी चाहिए। झगड़ा हुआ था सो खत्म हो गया।"

"नहीं यह कभी नहीं हो सकता।"

"यह होगा और जरूर होगा—"कह कर राजी कमरे से बाहर निकल गयी और दूसरे कमरे में जाकर पलंग पर लेट गयी

और सिसकियाँ भरने लगी।

राजी ने अपना चेहरा तकीया में छिपा लिया। उसके नरम-नरम बिस्तर पर गरम-गरम आँसुओं के चमकदार मोती ढुलकने लगे। वह दर्द था उसके दिल का जो आँसू बन कर उसकी लम्बी-लम्बी घनी और हसीन पलकों पर थिरक रहा था। उसके होंठ फड़-फड़ा रहे थे। उसके सारे शरीर का खून उसके चेहरे पर उतर गया जिससे उसके गाल तमतमा रहे थे। उसने बड़ी कठिनाई से अपनी हालत संभाली और अपने तड़पते और बल खाते हुए आँसुओं को पी गयी और अपने आंचल से अपनी आँखों को पोंछ लिया।

राजी की अभिलाषा ऊपर शून्य आकाश की ओर देखने की हुई और आकाश और दूर दिखाई देने लगा। जान पड़ता था कि राजी को वेदना के विस्तार के लिए उसे अपना स्थान छोड़ देना पड़ा। "स्त्री का जन्म कितना भयानक अभिशाप है।" एकाएक राजी के मुह से निकल गया।

लाला राधेश्याम बैठा रहा और सोचता रहा और जैसे कोई ज्वालामुखी भीतर चटख-चटख कर फट रहा हो उसी तरह उनको लगा कि उनके व्यक्तित्व की धज्जियाँ उड़ती जा रही हैं और क्षण क्षण उसके श्वास की गति तेज होती गयी।

वह घायल सांप की तरह फुंकारने लगा आज वह दिन भी आ गया था जब बोने भी उसके कन्धे-से-कन्धे मिलाकर चलने की तैयारी करने लगे थे। उसने अपने दांत पीस लिए।

उसके दांत आपस में टकरा गए। राजीव जो मेरे पैरों की धूल है आज वह सिर पर चढ़ना चाहती है। टक्के का दुकानदार होकर मुझ से कन्धे-से-कन्धे मिलाकर चलना चाहता है। दुख और क्रोध से उसका चेहरा लाल हो गया। साँस धीरे-धीरे तेज होता चला गया और मारे क्रोध से निढाल होकर वह विस्तर पर लेट गया।

थोड़ी देर के बाद वह उठ खड़ा हुआ और कटी पतंग की तरह टहलने लगा। क्योंकि उसने अपनी पत्नी कमला को राजी के पास भेज दिया कि जाओ और अभी-अभी पता लगाकर लाओ कि क्या सचमुच राजी अपनी जिद पर अड़ी हुई है या बचपन की बातें कर रही है। वह अपनी पत्नी की प्रतीक्षा कर रहा था बिल्कुल गुमसुम—जैसे तूफान के डराने से पहले वातावरण शान्त होता है। उसके अन्दर जो भी अशान्ति शेष थी स्थिर हो गयी जो भी बची कुची अग्नि उसमें थी जल कर राख हो गयी। थोड़ी देर बाद जब कमला कमरे में आ गयी तो वह बिल्कुल चुपचाप थी और वह वहीं बैठ गयी। और राधेश्याम अपनी पत्नी के चेहरे को देखने लगा और शायद कुछ पढ़ने लगा लेकिन सब व्यर्थ। तब उसने पूछ ही लिया—"क्या कहा लाडली ने,?

कमला ने सिर हिला कर जवाब दिया मतलब साफ था कि राजी राजीव से ही विवाह करेगी। अपनी ही पत्नी को सिर हिलाता देख कर वह कमला के चेहरे-मुहरे में खो गया। लम्बा गोरा चेहरा, उस पर उत्तेजना की सुर्खी, बड़ी-बड़ी नीली आँखें, उसका चेहरा कुमारियों जैसा नहीं मालूम होता था परन्तु अभी चेहरे पर बचपन की स्पष्ट कोमल रेखायें मौजूद थी। मालूम होता था कि वह चेहरा भोर के कोहरे के बीच में उदय हुआ हो जिसने उसकी रेखाओं को और भी कोमल बना दिया हो और उसे नव प्रभात की पवित्रता से रंग दिया हो और इसी पवित्रता से प्रभावित होकर राधेश्याम ने कहा—"तुम कितनी अच्छी हो राजी की मां, तुम्हारे संग जिन्दगी के दिन कैसे कट गए कुछ पता ही नहीं चला। तुम ने मुझ जैसे जिद्दी पति की हर कदम पर सहायता की। लेकिन यह राजी—मेरी अपनी ही औलाद मेरे लिए पहेली बनी हुई है।" राधेश्याम ने देखा कि कमला

के उदास चेहरे पर झुर्रियों के महीन जाल के बावजूद तरुणाई की चमक थी। तरुणाई की यह आभा उसकी नीली-नीली विश्वास भरी कोमल और सजीव आँखों से प्रकट हो रही थी और कमला ने दृढ़ता से सटे छोटे-छोटे होठों को खोला। "मुझे तो काठ मार गया है" और फिर उसके बाद राजी का चेहरा उसके सामने घूमने लगा जिस पर आशंका और उमंग, कातरता और प्रसन्नता का अद्भुत मिश्रण था। और फिर राजी के होठों पर विचित्र प्रकार की मुस्कान उसको याद आ गई, जो भयानक थी, डरावनी थी।

राधेश्याम अपने कमरे से निकल गया और राजी के पास गया उसके पीछे पीछे उसकी पत्नी भी आ गयी। राजी ने भारी-भारी आँखों से पिता की ओर देखा कुछ कहा नहीं। राधेश्याम ने आगे बढ़ कर राजी के सिर पर हाथ रख दिया और बहुत देर तक चुप रहने के बाद बोला, "तो यह तुम्हारा अन्तिम फैसला है?"

"जी हाँ—पिताजी ?"

"राजी—" राधेश्याम दृढ़ता से कहता गया, "यह मत भूलो राजी कि माली खून से प्रत्येक पौधे को सींचता है लेकिन जब उसे पता चल जाता है कि फलां पौधा और पौधों के लिए घातक सिद्ध हो रहा है तो वह फिर उस पौधे को जड़ से उखाड़ फेंकता है।"

"और फिर वह पौधा मुर्झा जाता है यही होता है उसका अन्त और अगर मेरा भी यही अन्त होगा तो मुझे स्वीकार है"—राजी ने भी उतनी ही दृढ़ता से कहा।

"राजी—" अब की बार राधेश्याम ने चीख कर कुछ कहना चाहा जो बहुत भयानक हो सकता था लेकिन कमला ने उसके मुंह पर हाथ रख दिया।

"पिता जी आप आवेश में आने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहे हैं। राजीव को पाने के लिए मैं हर संघर्ष के लिए उद्यत हूँ। मुझे बड़े

दफ्तर के सफेद पोश बाबू से विवाह नहीं करना-- ठीक है माता-पिता को लड़की से मोह होता है किन्तु लड़की को जीवन से मोह होता है ।"

"राजीव, जो एक मामूली सा दुकानदार जो टके-टके का गुड़ बेच कर तुम्हें कैसे खुश रख सकेगा । क्या उसकी आमदनी है, क्या उसकी जायदाद है, दसवीं फेल है । भला तुम उसका मुकाबला राजेश से कर रही है जो पढ़ा लिखा है और दिन प्रति दिन तरक्की भी तो कर सकता है ।

"मैंने कहा न कि मुझे जिन्दगी से मोह है। राजेश की सफेद पोशी से नहीं ।"

राजी की बात सुन कर कमला ने अपने पति को बाहर जाने के लिए कहा और जब वह नहीं गया तो कमला उसको हाथ से पकड़ कर बाहर ले आई ।

अकस्मात राजीव को हंसी आ गई । समुद्र की तरंगों के समान उसकी हंसी गंभीर थी जिस प्रकार समुद्र की तरंगे किनारों के चट्टानों को धक्का देती हैं ठीक उसी प्रकार राजीव की गंभीर एवं कठोर हंसी ने राजी के अन्तःकरण को धक्का दिया । और फिर वह बोला --

"मुझे ऐसा क्यों देख रही हो राजी !"

लेकिन वह चुप ही साधे रही ।

"राजीव ने उसके हाथ को पकड़ लिया आज तुम्हारा गरम शरीर इतना ठण्डा क्यों है ?"

"कुछ समझ में नहीं आता—" उसने ऊपर आकाश की ओर देखा जहाँ बादल तैर रहे थे—और राजीव ने देखा राजी की आँखों की पुतलियों पर जमी हुई पानी की परत जो धाराओं में परिवर्तित हो कर उसकी ठोडी से टपकने लगीं और उसकी धुधली नजरें बार-

बार राजीव की ओर देखने लगीं।

"मुझे ऐसा न देखो राजी···" कहते-कहते राजीव भावनाओं में डूब गया · "तुम ही मेरा धर्म हो तुम ही मेरी शक्ति हो और तुम वह दीप हो जो मेरी जिन्दगी के रास्तों पर जगमगाता रहेगा···"

राजीव ने उसको अंक में भर लिया···और खोलते हुए होठों से उसने राजी के होठों को इस तरह पिया जैसे वह ऐसा करते-करते राजी को भी पी जाएगा। "राजी···तुम्हारे बिना मेरा दम घुटने लगता है और पल भर के लिए तुम्हें देखे बिना मेरी आत्मा घायल पक्षी की तरह फड़फड़ाने लगती है।" बात समाप्त करते हो राजीव ने देखा कि राजी के गौरवपूर्ण मुख पर वसन्त की आभा फैल गई।

"तो फिर चलो हम इन संसार वालों से बहुत दूर न चलें जाएं · जहाँ यह संसार वाले नहीं होगा जहाँ यह संसार वाले नहीं होंगे! जो दो धड़कते दिलों की पुकार नहीं सुनते जा प्यार की कीमत नहीं जानते·· जो हृदय रखते हुए भी हृदयहीन हैं और जो आँखें रखते हुए भी अन्धे हैं··।"

इसके साथ ही साथ वह राजीव का हाथ पकड़े उसकी उंगलियों को धीरे-धीरे दाँतों से काटने लगी राजीव मौन और चकित उसकी भावनाओं को देखता रहा लेकिन थोड़ी देर बाद बोला "मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा राजी···" राजीव ने उसकी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

राजी ने राजीव के पंजे को कस कर पकड़ लिया "इन हाथों में बहुत ताकत है · रोजी तो कमा सकते हैं चलो कहीं भाग चले?"

यह सुनकर राजीव के चेहरे का रंग बनता बिगड़ता रहा और फिर दोनों की दृष्टि आपस में टकरा गयी। राजीव ने देखा कि राजी की आँखों में बिजली का सा प्रभाव था राजीव ने उसे

बहुपाश में कस लिया····"भागने से प्रेम की हार होती है राजी दुनिया थूकती है भागने वालो पर और मैं अपने सच्ची प्रीत पर किसी को थूकने नहीं दूंगा···और ऐसा करने के लिए जरूरी है कि मैं अपनी माँ से बात कर लूं और तब देखना कि क्या होता है ?"

"जिस आदमी का दिल घड़ी में तोला, घड़ी में माशा उस पर क्या विश्वास किया जा सकता है। तुम अपनी माँ से पूछोगे···" राजी ने तलखी से कहा ··"क्या मुहब्बत करते वक्त भी अपनी मां से पूछा था" कह कर राजी ने उसका हाथ छोड़ दिया····"और मेरी अस्मत जो मेरी जिन्दगी थी उसको लूटते समय भी माँ से पूछकर आए थे ··मेरी अस्मत लूट कर अब तुम्हें अपनी माँ याद आई है। बुजदिल कहीं के···"

"होश से बात करो राजी।" राजीव संभल कर बैठ गया। ····"मेरे जीते जी तुम्हारी डोली को यहाँ से कोई नहीं ले जाएगा चाहे वह कितना ही बलशाली क्यों न हो। तुम मेरे साथ हो तो मैं हर ठोकर का मुकाबला कर सकता हूँ। मुझे बुजदिल न कहो।" कहकर राजीव उठ खड़ा हुआ। "कल मुझे यहीं मिलना कुछ न कुछ फैसला करके ही रहेंगे ··जैसे तुम चाहोगी वैसा ही होगा।" स्थिर नेत्रों से राजीव राजी की ओर देख रहा था और राजी उसकी बातें सुन रही थी। राजीव की बात कब समाप्त हुई इसका राजी को कुछ पता नहीं चला लेकिन उसका सम्पूर्ण शरीर जो एक मृतक की भाँति शीतल हो उठा था लेकिन अब राजीव की बात सुनकर सजग हो उठा। जिस प्रकार दैवीय घटनाओं के प्रभाव से मृतात्मा सजग होकर सजीव होने के लक्षणों का प्रदर्शन करता है उसी प्रकार उसके शरीर के रक्त में सजगता और सजीवता के लक्षणों का प्रादुर्भाव हुआ।

नील-आकाश में अर्ध-चन्द्रमा का उदय हुआ वृक्षों के पत्ते

उत्साह और उल्लास का परिचय देते हुए आमोदित हो उठे और राजी सोचने लगी कि पता नहीं यह रक्तिम आभा किस प्रकार के भविष्य की सूचना देगी।

× × × ×

"मैं इसके लिए तैयार हूँ कि आप का घर छोड़ दूं।...परन्तु यह नहीं हो सकता कि में अपना निर्णय बदल लूं।"

"किसी भी प्रकार नहीं?" राजीव के पिता चौधरी ने तलखी से अपने पुत्र से पूछा।

"जी नहीं—बिल्कुल नहीं..." राजीव की वाणी में नम्रता आती गई..." पिता जी मैं मजबूर हूँ आप मेरी मजबूरी क्यों नहीं समझते।"

"कोई भी इन्सान मजबूर नहीं होता राजीव हर इन्सान अपनी मजबूरियों को स्वयं जन्म देता है और तुम ने भी ऐसा ही किया है। इसलिए तुम्हारा यह बहाना बनाना बिल्कुल निर्थक है। एक बार फिर सोच लो।"

"सोच चुका हूँ ..अच्छी तरह से" अब की बार राजीव ने भी दृढ़ता से कहा।

"अगर मैंने भी कोई फैसला किया तो तुम जानते ही हो कि वह पत्थर की लकीर होगा।"

"यह मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि आपकी कही हुई बात पत्थर की लकीर होती है लेकिन आज के वैज्ञानिक युग में ऐसे मसाइल बन गए हैं कि पत्थर...।"

चौधरी ने राजीव की बात काट कर कहा। "तुम एक ऐसी लड़की को पत्नी बनाना चाहते जिसके पिता के खून का मैं प्यासा हूँ.."

"तो ऐसा कर लेते हैं पिता जी—" राजी गंभीरता से कहता गया। "पहले आप अपनी प्यास बुझा लीजिएगा मैं बाद में विवाह

कर लूंगा।"

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए अपने पिता के सामने ऐसे बातें करते हुए ..."

"अपने मां बाप से किस बात की शर्म · और फिर अब तो तुम्हारा और मेरा नाता पिता पुत्र का न होकर मित्रों का नाता होना चाहिए।"

"लो और बदतमीजी सुनो—" चौधरी को क्रोध आ गया।

"पिता जी शांत मन से सोचिइएगा वैसे तो सामाजिक बन्धनों के नाते आप मेरे पूज्य पिता जी हैं लेकिन चूंकि मैं अब जवान हो चुका हूँ अपने भले बुरे को समझता हूँ तो इस नाते आप से मित्रों जैसे बातें कर रहा हूँ और मैं समझता हूँ कि इसमें बुरा कुछ भी नहीं है।"

"देखो राजीव, अब तुम हद से बाहर जा रहे हो। यह कभी नहीं हो सकता कि राजी तेरी पत्नी बने। मैं एक ऐसी लड़की को कभी कुल वधु बनाने के लिए तैयार नहीं जिसके पिता के रक्त का मैं प्यासा हूँ।'"

"लेकिन मैं पहले भी पूछ चुका हूँ कि आप की यह प्यास कब तक बुझ जाएगी ?"

"लेकिन इसमें.समय लगेगा ?"

"तो यह शुभ कार्य भी अपने सुपुत्र पर ही छोड़ दीजिए···

"चौबीस घण्टे के अन्दर ही अन्दर मैं राजी के पिता के सिर से खून बहादूंगा—बस इतना ही तो काम करना है। उसे जान से तो मारना नहीं ?"

"नहीं···मैं इस कांटे को सदा के लिए रास्ते से हटाना चाहता हूँ।

"यह तो फिर और भी आसान काम बतला दिया आप ने ?"

"तो क्या तुम अपने होने वाले सुसर का भी कत्ल कर दोगे ?"

"क्यों नहीं···पिता जी···अपने इश्क को जिन्दा रखने के लिए दुनिया में क्या कुछ नहीं होता आया है और होता रहेगा। इतिहास इसका साक्षी और मैं भी ऐसा करने से···"

"राजीव—" चौधरी तड़प उठा··"तुम इतना याद रखो कि तुम अपने पिता से बात कर रहे हो किसी अभिनेता का काम नहीं कर रहे हो।"

"लेकिन पिता जी—"

"मैं कहता हूँ चुप रहो तुम। मैं एक शब्द भी तुम्हारी जुबान से सुनना नहीं चाहता। मैं तुम से हाथ धो सकता हूँ लेकिन कभी ऐसी गलती नहीं कर सकता जिससे मेरी मूछें नीचे हों। और मेरे चौधरी पने पर आँच आए।"

"लेकिन मैं वायदा कर चुका हूँ राजीव से—जिसे मुझे निभाना है चाहे कुछ भी करना पड़े।"

"तुम भूल जाओ अपने वायदे को ?"

"मैं अपना वायदा भूल जाऊं लेकिन आप पिता होने के नाते मेरे लिए कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं। मैं सब तैयारी कर चुका हूँ राजी को अपनाने के लिए···क्योंकि मैं उस बिना जीवित नहीं रह सकता।"

"तुम्हें जीने के लिए कौन कहता है—जाओ कहीं मर जाओ।"

"लेकिन मेरी जिन्दगी इतनी सस्ती नहीं है अगर मरना भी पड़ा तो दो चार को साथ लेकर, अकेले नहीं—"

चौधरी ने झट से अपनी पिस्तौल निकाल कर राजीव के

सामने रखते हुए कहा "तुम अगर राजी के बिना जीवित नहीं रह सकते तो यह पिस्तौल पड़ी है उठा ले इसे आप भी चलता बना और दो चार जिन को अपने साथ लेना है उनको लेता बन ···"

राजीव ने एक दृष्टि पिस्तौल पर डाली लेकिन हाथ नहीं लगाया। वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ लेकिन उसके पिता ने उसको बाँह से पकड़ कर वहीं पर बिठा दिया। "तुम यों नहीं जा सकते मेरा फैसला भी सुन कर जाओ। बात को धपेल में मत छोड़ो।"

राजीव समझ गया था कि अब उसके पिता जी आखिरी फैसला सुनाने वाले हैं जो लगभग उसको पता ही था लेकिन फिर भी वह सुनने के लिए बैठ गया और उसने पिता को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा और फिर चौधरी बोल पड़ा। "अगर तुम ने राजी से विवाह किया तो इस घर के दरवाजे तेरे लिए सदा के लिए बन्द हो जायेंगे। हमेशा के लिए पुरखों की जायदाद से वंचित किए जाओगे। और फिर कभी मेरा मुँह न देख सकोगे · अगर तुम इस त्याग पर तैयार हो तो तुम जिसे चाहें विवाह कर लो वरना निश्चय कर लो कि अब राजी का नाम नहीं लोगे कभी ?

"पिता जी– इस घर के दरवाजे मेरे लिए बन्द हो जायेंगे तो यह कोई खास बात नहीं है···और आपका दूसरा प्रश्न कि पुरखों की जायदाद का—हमारे पास है क्या ? ले दे के यह टूटी फूटी हवेली है और दस बारह बीघे जमीन · ये सब न हमारे पूर्वज साथ लाए थे और न ही साथ लेकर गए और लेकर साथ गए तो केवल दो गज कफन का लिबास–तो इसलिए मैं इस जायदाद का कोई महत्व नहीं समझता···लेकिन आपका तीसरा प्रश्न जो है वह

विचारणीय है…" राजीव ने विचित्र ढंग लेकिन दृढ़ता से कहा… "तुम दोनों में से मुझे एक को चुनना होगा और मुझे इसके लिए कुछ समय चाहिए।" यह कह कर राजीव वहाँ से उसे उठ खड़ा हुआ।

राजीव ज्योंही कमरे से निकला माँ ने उसको अंक में भर लिया। राजीव ने देखा कि उसकी माँ बहुत उदास है और रो रही है तो उसने माँ को सानत्वना भरे शब्दों में कहा…"माँ जी आप इतनी उदास ? और यह रोना धोना। यह मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"क्या करूँ वेटा। सारी जिन्दगी गुजार दी। तुम्हारे पिता के साथ और सच पूछो तो केवल इसी आस पर जिस पर आज तुम पानी फेरने चले हो।"

"तो आप भी कोई आस लगाये बैठी हैं मुझ से।" राजीव ने माँ से पूछा।

"हाँ वेटा मैं भी आस लगाए वैठी हूं कि इस घर में वहू आयेगी और मैं अपने पोते का मूँह देखूँगी।

"लेकिन जब तक मेरा विवाह नहीं होता तुम्हारी यह आस कैसे पूरी हो सकती है माँ। पिता जी तो मान ही नहीं रहे हैं राजी से मेरे विवाह की बात। आपको एक छोटा सा काम वतलाया था कि राजी से मेरा विवाह कर दो तो आप ने भी वात का बंतगड़ बना दिया।"

"क्या कह रहे हैं तुम्हारे पिता जी ?"

"कहेंगे क्या। बस वही पत्थर वाली लकीर की बात जो हर समय करते रहते हैं यहाँ भी उन्होंने इसी को अपनाया ? लेकिन

माँ जी मेरी भी बता सुन लीजिएगा। बात क्या बल्कि अन्तिम और अटल फैसला कि अगर मेरा विवाह राजी से हुआ। तो पिता जी को कह देना और तुम भी सुन लो आज के बाद मेरे विवाह की बात कहीं और न चला लेना नहीं तो आप लोगों को लज्जित होना पड़ेगा।"

"बेटा।" राजीव की मां रो पड़ी।

"साफ सुथरी बात है माँ जी। इस में रोने धोने का कोई काम नही है मैं जिन्दगी भर कुंवारा रह सकता हूँ लेकिन यह नहीं हो सकता कि राजी को छोड़ कर मैं किसी और लड़की से विवाह करूँ।"

"लेकिन बेटा।" ममता रो पड़ी।

"यदि पिता होने के नाते उन्हें यह अधिकार है कि यदि मैं राजी से विवाह करूँ तो वह मुझे पुरखों की जायदाद से अलग कर देंगे। इस बात का तो मुझे गम ही नहीं लेकिन उनकी दूसरी शर्त कि अगर मैंने राजी को अपनाया तो, मैं जिन्दगी भर उनका मुँह नहीं देख सकूँगा बस यही गम मुझे जलाए जा रहा है कि मुहब्बत मुहब्बत है लेकिन पिता का भी कुछ हक है। और मेरा भी कुछ अस्तित्व है और वह यह है कि मैं किसी और लड़की से विवाह नहीं करूँगा।"

"लेकिन बेटा यह पिता है। उसकी बात मान लेने में हम सब की भलाई है।"

"उनकी बात मान लेने में ही तो हम सब की भलाई है तभी तो मैं अपनी जिन्दगी की सब से बड़ी अकांक्षा का वध कर रहा हूं केवल उनका मुँह देखने के लिए। ताकि मैं उनसे वंचित न रह

सकूँ।

"लेकिन मैंने तुम्हें जन्म देकर क्या पाया।" माँ सुबक पड़ी। "तुम्हारे पिता की जिद पूरी हो गयी।"

राजीव ने बात चीत में काटकर कहा। "अभी हुई नहीं शायद हो जाए।" हाँ माता जी कहती जाओ आपकी भी सुन लें।

"और तुम अपनी जिद पर अड़े हो लेकिन मुझे क्या मिला। रोना, सिसकना और जिन्दगी भर बहू का मुँह न देखना।"

"राजी का मुँह तो आपने देखा ही होगा इसलिए ऐसा न कहो कि बहू का मुँह तक नहीं देखा। बाकी रह गयी समस्या पोते की सो वह भी पूरी हो जाएगी।" राजीव ने दोनों हाथ अपनी मां के कन्धों पर रख दिए। "तुम्हारा आशीर्वाद चाहिए राजी को मुझ से कोई नहीं छीन सकता। न राजी के पिता राधेश्याम और न मेरे प्यारे पिता चौधरी साहिब।" राजीव की माँ ने अपने बेटे की आँखों में एक विचित्र प्रकार की दृढ़ता देखी जो आज तक उसने किसी की आँखों में भी नहीं देखी थी। एक ऐसी विचित्रता जिसमें दैवीय शक्ति थी जो बड़ी-बड़ी चट्टानों को चकनाचूर कर दे।

राजीव ने दृढ़ता से कहा। "मेरे और राजी के बीच में जो भी रोड़े हैं मैं उनको ठोकरों से उड़ा दूँगा।"

"तुम पागल हो गए हो क्या राजीव बेटा।"

"आप लोग मुझे पागल बना कर ही दम लेंगे। कह कर राजीव चारपाई पर लेट गया और राजी के विषय में सोचने लगा।

और ठीक उसी समय राजी राजीव के विषय में सोच रही थी कि उसकी माँ ने कमरे में प्रवेश किया और राजी की आँखों में दृढ़ निश्चय देख कर कमला को झुकना पड़ा। कमला ने राजी के पाँवों पर हाथ रख दिया "आज माँ अपनी बेटी से सुहाग की भीख माँगती है।"

"माँ जी यह तुम ने क्या कर दिया।" राजी ने झट से अपने पाँव खेंच लिए। "माँ जी यह आप क्या कह रही हैं?"

"मतलब साफ़ है बेटी यदि तुम ने कोई ऐसी गड़बड़ी की तो खून खराबा हो जाएगा। इसलिए मैं तुम से अपने सुहाग की भीख माँग रही हूं।" कमला ने ममता भरे स्वर में कहा।

"यह तुमने अन्तिम अस्त्र भी चला दिया।" राजी ने दृढ़ता से कहा। माँ अपनी बेटी के लिए बड़ी से बड़ी कुरबानी कर देती है चुपचाप। लेकिन तुम एक ऐसी माँ हो जो अपने स्वार्थ के लिए बेटी के पाँव पकड़ रही हो क्योंकि तुम्हें अपना सुहाग चाहिए। तो तुम्हें मेरे सुहाग की चिन्ता नहीं अपने सुहाग की लगी हुई है तुझे। लेकिन कोई बात नहीं जब माँ बलिदान से मुँह मोड़े तो बेटी का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह बलि की वेदी पर चढ़ जाए।"

राजी का फ़ैसला सुनकर कमला ने उसके सिर को अपनी गोद में भर लिया और बहुत देर तक उसके बालों में उंगलियाँ फेरती रही।

राजीव जो बहुत देर से राजी की प्रतीक्षा कर रहा था थक हार गया लेकिन राजी कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। "आ भी जाओ आज तो तेरा दीवाना सिर कफन बाँध कर आया है। राजी। आज तेरा आशिक हर चीज को लुटा कर तुम्हें अपनाना

चाहता है। दुनिया की कोई भी ताकत अब तुम को मुझ से जुदा नहीं कर सकती।" प्रतीक्षा करते करते जब बहुत देर तक राजी न आई तो राजीव चला गया अपने घर इसी आस पर कि कल अवश्य राजी से मिलूँगा लेकिन राजी उसको न मिल सकी और जब चन्द दिनों के बाद उसने राजी को देखा भी, तो वह विवाहित थी क्योंकि राजी का विवाह हो गया था, राजेश के साथ, जो गाँव में भी किसी को पता न लग सका। और अब विवाह के कई दिनों के बाद राजी गाँव में आई थी तो वह इसी ताड़ में थी कि राजीव को किसी प्रकार अकेले में मिला जाए लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी वह सफल न हो सकी इसलिए नहीं कि राजीव उसको नहीं मिलना चाहता था बल्कि उसको ही मौका न मिल सका और जाने से पहले एक दिन उसने हिम्मत कर ही ली और राजीव की दुकान पर चली गयी। आज भी राजीव अकेला बैठा था। उसने आँखें उठा कर राजी की ओर देखा लेकिन राजी की निगाहें जमीन पर गढ़ी थीं। राजीव ने तुरन्त कह दिया। "विवाह की बधाई है राजी।"

"यह तुम सब कुछ दिल से कह रहे हो ?"

"तैय दिल से राजी।" राजीव ने दृढ़ता से कहा। "लेकिन हमें एक बात का अफसोस जरूर है कि उस दिन संध्या को हम से मिलने अवश्य आना था उस दिन मैं बहुत कुछ सोच कर आया था। लेकिन खैर छोड़ो वह सब पुरानी बातें हो गयीं कहो प्रसन्न तो हो न ?"

"मुझे सच्ची प्रसन्नता तब होगी जब तुम विवाह कर लो ?"

"यह तो वही बात हुई राजी। किसी का पुत्र मर गया था

और लोग उसके पास शोक प्रकट करने के लिए आते गए और यही कहते गए कि यदि आपका पुत्र जीवित होता तो यह बन जाता वह बन जाता। लेकिन किसी ने यह न सोचा कि वह तो मर गया और ठीक इसी प्रकार हम भी मर चुके हैं। मेरी पहली उमंग किस बुरी तरह से कुचली जा चुकी है।" राजीव ने धीरे से कहा।" अब तुम जाओ राजी तुम्हारा यहाँ ज्यादा देर ठहरना ठीक नहीं। तुम्हारे लिए मुझ से बात करने के दरवाजे सदा खुले रहेंगे। मेरा कहना मान लो और अब तुम चली जाओ।"

राजी की आँखें दरवाजे पर थीं लेकिन अभी उसका पति राजेश वापिस नहीं आया था। वह सोचने लगी कि जिन्दगी बिताना भी कितना दूभर हो गया है और फिर उसको अपने पति के शब्द याद आ गए कि तुम कौन सी कुमारी थी जब इस घर में आई थीं। और फिर उसको राजीव की याद आ गयी कि यदि उसके जीवन में राजीव न आया होता तो आज उसको अपने पति के मुख से ये शब्द तो न सुनने पड़ते। राजीव जो अब उसके मन मस्तिष्क पर समा गया था। छा गया बादलों की तरह—वह पलंग पर लेटी रही और मन-ही-मन कभी सुमन, कभी अपने पति राजेश और कभी राजीव से बातें करती लेकिन राजीव ही सबसे ज्यादा उसके मन मस्तिष्क पर छाया हुआ था। धीरे-धीरे उसकी आंखों पर धुंधलासा छाता गया और राजीव के पास पहुँच गयी जहाँ राजीव एक कमरे में बैठा कोई तरल पदार्थ पी रहा था और राजी ने दरवाजे पर खड़े होकर कहा—"हमारी जान पर बन आई है और तुम यहाँ मजे लूट रहे हो?"

"आईएगा देवी जी तुम भी शरीक हो जाओ मेरी मौज मस्ती में!" राजीव जरा सा मुस्कुराया।

"लेकिन ऐसे नहीं ?"

"तो फिर ?" राजीव ने प्रश्नवाचक दृष्टि से राजी की ओर देखा और कुर्सी पर बैठने के लिए संकेत किया है।

'मुझे पत्नी बना लो ?"

"देवी जी अब तुम मेरी पत्नी नहीं बन सकती ?"

राजीव का यह उत्तर सुन कर राजी सन्न हो गयी जैसे किसी ने उसे गहरी खाई में धक्का दे दिया हो।

"ओह तो यह बात है—" राजी ने अपने दिल को कड़ा किया—"तुम शायद जानते नहीं कि नारी जिसे प्यार करती है उसके लिए अपना सब कुछ लुटा सकती है, लुटा देती है और मैंने भी लुटाया है सब कुछ तुम्हारे लिए।"

तुमने क्या खाक लुटाया है हमारे लिए—कुछ भी नहीं लुटाया बल्कि विवाह करते समय हम से पूछा तक नहीं। हमें अब भी वह शाम याद है जब हमने तुम्हारी बेताबी से प्रतीक्षा की थी।"

"गढ़े मुर्दे क्यों उखाड़ने लगे हो राजीव। अब की बात करो—" राजी तन कर खड़ी हो गयी। और कहती गयी। "राजीव अब मैं तुमको अन्तिम अवसर देती हूँ अब तुम्हारे सामने केवल दो ही रास्ते हैं मुझसे विवाह करके जिन्दगी चुन लो या मुझे ठुकराकर अपनी मौत को निमंत्रण दे दो।" पाँव पटख कर राजी कहती गयी। "मुझे अपना कर तुम जिन्दगी पा सकते हो और और मुझे ठुकरा कर मौत, एक ऐसी मौत कि सुन सुन कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएँगे काँप-काँप जाएँगे और फिर कोई किसी नारी को ठुकराने का साहस नहीं करेगा।"

"तुम भी अपने आपको नारियों में गिनती हो।" राजीव ने तड़प कर कहा—"जो नारी विवाह से पहले चाहे वह उसका होने वाला पति ही क्यों न हो सहवास करती है तो वह नारी कहलाने की अधिकारी नहीं, बल्कि वह नारी समाज के लिए कलंक है, वह कुलटा है, वह कलंकनी है—और उसकी ऐसी सजा होनी चाहिए जैसे तुम्हें मिल रही है। जो न घर का रहे और न घाट का।"

"यह मत भूलो राजीव—कि औरत के पवित्र आंचल पर नापाक दाग लगाने वाले की क्या सजा होती है ?"

"मेरे ख्याल में केवल चन्द दिनों की जेल।" राजीव ठहाका मार कर मुस्कुराया।

"लेकिन मैं तुम्हें जान से मार डालूंगी। राजी ने तड़प कर कहा—या मुझे अपना लो या मरने के लिए तैयार हो जाओ ?"

राजीव ने ऊँची आवाज में कहा—"अब तक मैंने काफी सहन किया है लेकिन तुम्हारी बातें सहन की सीमा लांघ गयी हैं। तुम अपना भला चाहती हो तो फौरन यहां से चली जाओ और फिर कभी मुझे अपनी मनहूस शक्ल न दिखाना।"

राजी ने राजीव की ओर देखा पर सहमी नहीं। वह बोली। "मुझे डराकर तुम मेरे इरादे को बदल नहीं सकते।" 'मनहूस शक्ल न दिखाना—" राजीव के शब्दों को राजी ने चबाया और दूसरे ही क्षण उसके हाथ में में तेज धार का चाकू चमका। चाकू देख कर राजीव बिजली की सी तेजी से खिड़की से लपक गया लेकिन राजी ने उसकी पीठ पर वार कर दिया, लेकिन राजीव भागे जा रहा था सरपट—और राजी चीख पड़ी—"मत भागो वापिस आ जाओ मैं तुम्हें नहीं मारती।"

उठ कर राजी पलंग पर बैठ गयी और उसने डरावनी आंखों से देखा कि उसका पति राजेश उसके साथ वाले पलंग पर लेटा हुआ है । राजेश ने राजी की ओर देखा और उसकी डरावनी सूरत देख कर पूछा— 'किसका कत्ल कर रही थी नींद में ?"

"अपनी अस्मत के लुटेरे का—मैं उसका कत्ल कर दूंगी ।"

"यह मुंह और मसूर की दाल ।" लेटे-ही-लेटे राजेश ने कहा—"अस्मत लुटाने वाली लड़कियाँ कभी किसी का कत्ल नहीं कर सकतीं ।"

राजेश की बात सुनकर राजी पागलों की तरह हँसी ।

'तुम हँस रही हो राजी ?"

"हाँ मेरे देवता ! क्योंकि अब मेरा अन्त निकट आ गया है ?" और फिर राजी ने जरा संभलकर कहा—"इन्सान जिन्दगी की ओर से कितना ही उदासीन क्यों न हो परन्तु जैसे ही उसे मालूम होता है कि अमुक क्षण के बाद जिन्दगी उसे छोड़ जाएगी तो सहसा सारी उदासीनता का वक्ष-स्थल चीर कर मोह का समुद्र उमड़ पड़ता है और इस समय हम भी मोह के समुद्र में गोते लगा रहे हैं ।

' लेकिन वह है कौन ?"

अब तुम केवल उसकी लाश ही देख सकोगे ? दो चार दिन में यहाँ से चली जाऊँगी । लेकिन जाने से पहले आप से फिर प्रार्थना करती हूँ कि इन्दु से बदला लेने की भावना दिल से निकाल फेंको वरना इसका परिणाम बहुत भयंकर हो सकता है ।"

"मेरा दिमाग चाटने की कोशिश मत करो । अब सो जाओ ।"

उस समय राजी की मानसिक स्थिति उस ज्वालामुखी के सदृश्य थी जिसका प्रज्जवलित उद्गार बाहर नहीं दिखाई पड़ता, किन्तु भीतर से ही भीतर वह पृथ्वी के गर्भ में बड़ी-बड़ी प्रस्तर की मेघ मालाओं को चकनाचूर करना चाहता हो।

× × × ×

राजी राजीव की गोद में तड़प रही थी सिसकियाँ भर रही थी क्योंकि विवाह से पहले राजीव ने ही उसके कुवारे बदन पर खरोंच लगाई थी। वह कहती गई "राजीव अब मे राजेश के पास वापस नहीं जाऊंगी ?"

"क्यों क्या बात है राजी ?"

"वह पुरुष नहीं है ?"

"क्या मतलब।" राजीव ने राजी को चेहरे को दोनों हाथ में थाम लिया।

"उसका फूल मुरझाया-मुरझाया सा रहता है राजीव। दो महीने शादी को हो गए हैं लेकिन एक दिन भी वैसे संतोष नहीं मिला जैसे तुम से मिला।"

"तो तुम वासना की पूजारिन हो ?"

"नहीं। नारी सदा अपने पिता का घर छोड़ कर जाती है पति के लिए, लेकिन जब पति ही पुरुष न होकर स्त्री हो तो फिर उससे तो मौत भली है।" राजी रोने लगी।

"राजी यह तुम ने क्या कह दिया क्या तुम्हारे पति में इतनी भी शक्ति नहीं है कि वह तुम्हें संतुष्ट कर सके। लेकिन शक्ल-सूरत से वह ऐसा नहीं लगता।"

"मुझे मालूम नहीं था राजीव कि उसने अपनी जिन्दगी लड़कियों के चक्कर में बरवाद कर दी है। आजकल भी वह एक

लड़की के पीछे पड़ा हुआ है और वह उससे बदला लेना चाहता है।"

"तो तुम पति से लड़ कर आई हो ?"

"जी हाँ अब मैं वहाँ वापस नहीं जाऊंगी।"

राजीव भावातुर हो गया, राजी ! तुम्हारे और मेरे पिता के झगड़े के कारण हम न मिल सके हम एक दूसरे के न बन सके राजी मुझे इस बात का अफसोस है।

राजी मेरा पिता मान गया था लेकिन तुम्हारा पिता अपनी जिद पर अड़ा हुआ था उसको बस राजेश ही पसन्द आ गया था। भला उसको आता भी क्यों नहीं राजी दिल्ली के बाबुओं का जीवन मुझ से छिपा नहीं है अपने आप को सुसभ्य और सुसंस्कृत दिखाने के लिए वह सफेद कपड़े तो पहन लेते हैं लेकिन इन कपड़ों की सफेदी में वह गालों की लाली खो बैठते हैं, राजी।"

थोड़ी देर रुक कर राजीव ने कहा "फिर तुम्हारा राजेश भी भला कैसे बच सकता था वह भी न जाने कितनी लड़कियों की जुलफों से खेला होगा। वहाँ तो उधार सिगरेट पीने वाले बहुत मिल जाते हैं। बस शाम को कपड़े पहने और इसी शिकार में निकल गए। और राजेश ने भी वैसा ही किया होगा वह अपनी शक्ति खो बैठा है और अब वह किसी लड़की के पीछे लगा हुआ है कि वह उससे बदला लेगा। यह तो बहुत मुश्किल काम है राजी।"

"बस तुम्हारा पिता इस बात पर ही मर गया था कि राजेश सफेद पोश बाबू है और मैं एक दुकानदार। लेकिन उसको पता नहीं कि उसने तुम्हारे और मेरे साथ बहुत बड़ा अत्याचार किया है। लेकिन मैं इस अत्याचार की चोट को सहता हुआ भी तुम्हारे

पति से एक बार जरूर मिलूंगा और तुम्हें उसके साथ रहना पड़ेगा।"

"मैं नहीं रह सकती अब राजेश के साथ। यह मैंने पक्का निश्चय कर लिया है चाहे तुम मुझे सहारा दो या न दो।"

राजीव ने राजी का हाथ पकड़ लिया।

सोचता हूँ तुम्हें छूने का अधिकार नही।
वरना भुजपाश में सहमी सी जवानी कैसी ॥
अपने महबूब 'राजीव' के सामने,
तेरी आंखों से अश्कों की रवानी कैसी ?

"राजी इस समय तुम मेरे सामने हो लेकिन तुम अब वह पहले वाली राजी नहीं हो अब तुम किसी की पत्नी बन चुकी हो और मैं तुम्हें हाथ लगाना भी पाप समझता हूँ राजी।"

"तुम शायद मुझे इसलिए स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हो कि मैं दो महीने किसी और के घर यानी पति के साथ रह कर आयी हूँ इसलिए मैं अपवित्र हो गई हूँ।"

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं राजी। स्त्री तो रत्न है और फिर तुम तो अपने पति के साथ रह कर आई हो राजी। इससे पहले कि मैं कोई कदम उठाऊं तुम्हारे पति से एक बार जरूर मिलूंगा। मुझ से जो कुछ हो सकेगा राजी मैं अपने जेब से पैसे खर्च करके उसका इलाज करा दूंगा। मैं तुम्हारे लिए बड़ी से बड़ी कुरबानी कर सकता हूँ। यह मत समझो कि तुम मेरी न हो सकी तो मैं तुम्हारे लिए कुछ भी न करूं। मैं तेरे किसी काम आ सकूं यही मेरी जिन्दगी का महत्व है उद्देश्य है राजी। मुझे अधिक लज्जित न करो

दस पन्द्रह दिन के बाद मैं दिल्ली जाऊंगा तो तुम्हारे पति से अवश्य मिलूंगा।"

× × +

राजीव ने राजी की ठोढी को ऊपर उठाया "राजी···मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि इन बाबू लोगों का क्या जीवन होता है। यह तो मेरी खुशकिस्मती थी कि मैं मैट्रिक में फेल हो गया और मैंने दुकान संभाल ली वरना मेरी भी यह हालत होती कहीं मैं भी दफ्तर में कलम घसीटता फिरता लेकिन यहाँ इस छोटे से गाँव में बहुत आनन्द आता है यहाँ गाँव की लस्सी भी वहां (शहर) के दूध के बराबर है।"

राजीव कहता गया देखो "राजी तुम दो महीने में इतनी दुबली हो गई हो तुम्हारे होठों पर वह तिरछी मुस्कान कौन चुरा कर ले तुम्हारी वह निर्विकार हंसी कहाँ लुप्त हो गई राजी बोलो, बोलती क्यों नहीं ?"

"खैर ! तुम बोल भी क्या सकती हो, तुम एक ऐसे सफेद पोश की पत्नी हो जिसका जीवन हास-परिहास से कोसों दूर, उल्लास रहित शुष्क जीवन और इसका जिम्मेदार है तुम्हारा पिता जिस ने तुम्हारी शादी राजेश से कर दी। जो बाबू होकर भी जीवन में इसी प्रकार घसीटता चला जा रहा है जैसे गन्दे पानी में रेंगता हुआ कीड़ा।"

"मुझे इन बाबूओं के जीवन पर बड़ा तरस आता है राजी। जो दफ्तर में पहुँचते ही रजिस्टर पर हस्ताक्षर करने के बाद ही उन्हें पिछड़ा हुआ काम याद आ जाता है और तब वे बिना किसी से कुछ बोले, मद्दे रजिस्टरों में उलझ जाते हैं। और इन्हीं रजिस्टरों

फाइलों में सारा दिन पीसने के बाद, बीच में कहीं-कहीं चाय का कप या सिगरेट उड़ाते फिरते हैं और सन्ध्या को छुट्टी का समय होते ही अपने अगल-बगल के साथियों पर उड़ती दृष्टि डाल कर दफ्तर से बाहर निकल पड़ते हैं।"

राजीव कहता गया और राजी सुनती रही। "दफ्तर से निकलने के बाद ये बाबू लोग कनाट प्लेस या कहीं भीड़-भाड़ वाली जगह पर खड़े हो जाते हैं और अपनी न ऊबने वाली दृष्टि सुकुमार युवतियों पर फेंकते फिरते हैं। कभी ठण्डी साँस भरते हैं कभी गालों पर हाथ रखते, कभी कोट के बटन खोलते बन्द करते तो कभी टाई ठीक करते रहते हैं। और कोई जरा झुक कर तिरछी नजरों से देख कर ऐसे चलते हैं और भिन्न प्रकार के पोज बनाते हैं कि वह जिस युवती विशेष को देख रहे हैं ताकि कोई समझ न सके। यह तो रही उन अविवाहित बाबूओं की बात। और जो विचारे विवाहित होते हैं। उनकी दिनचर्या भी सुन ले आज राजी—

"क्योंकि तुम्हारा राजेश भी तो विवाहित है। ये विचारे पांच सात मील की साईकिलिंग करके घर पहुँचते ही चारपाई पर औंधे लेट जाते हैं। फिर किसी भी चीज की सुध नहीं रहती। उन्हें यह भी पता नहीं चलता कि बच्चों को सुला कर कब उसकी पत्नी उसकी बगल में आकर सो गई है। नींद में करवट लेने में जब कुछ असुविधा होती है तब हाथ से टटोल कर उन्हें अपनी पत्नी की उपस्थिति का पता लगाना पड़ता है।"

कहते कहते राजीव के होठों पर एक नीरस मुस्कान तैर गई। "राजी तुम भी एक ऐसे ही बाबू की पत्नी हो फिर तुम्हारा यह शिकवा कैसे कि राजेश पुरुष नहीं है। वह पुरुष है राजी लेकिन शायद तुम उसके पास बहुत देर से पहुँची जब वह सब कुछ अपना

खो बैठा।"

राजीव चुप हो गया तो राजी ने कहा "बस या कुछ और भी कहना बाकी है ?"

"जी नहीं। मैंने जो कुछ कहना था कह चुका।"

"लेकिन मैं तुम्हारे पास बाबुओं के जीवन पर व्याख्यान सुनने के लिए नहीं आई हूँ।"

"तो फिर ? क्या चाहती हो ?"

"मैं राजेश के पास नहीं जाऊंगी।"

"लेकिन मुझे एक बार राजेश से जरूर मिलना है उसके बाद जो होगा तो देखा जाएगा।"

× × ×

"जो कुछ होगा देखा जाएगा"···इन्दर ने राजेश के कन्धे पर हाथ रख दिए। "जो बात मैंने तुम से की है वही एक तरीका हो सकता है। और तुम ऐसा ही करो, तुम भी बदला ले लोगे और मेरा भी इस डायन से पीछा छूट जायेगा।"

"लेकिन बात यह है कि सुमन मेरे घर मुझ से मिलने के लिए कई बार आई है लेकिन मैं उससे मिलना नहीं चाहता था।"

"अच्छा किया तुम ने कि तुम उससे नहीं मिले लेकिन तुम्हारी बीवी राजी कब गई है गाँव ?"

"परसों सवेरे ही चली गयी।"

"तो तुम ने उसको रोका नहीं ?"

"सुमन ने आग ही ऐसी लगायी थी कि बुझने में ही नहीं आ

रही थी और फिर इन्दु ने ही सुमन को मेरे घर में आग लगाने के लिए भेजा था।"

"तुम औरतों से इतना मत घबराओ और कल जो टाइम मैंने तुम को बतलाया है ठीक उसी समय पर आ जाना। तुम ऊपर बैठते ही कमरा अन्दर से बन्द कर देना और मैं सुमन को टेलीफोन कर दूंगा। ताकि उसको सालिड सबूत मिल जाये।"

कल होते ही राजेश निश्चित समय पर इन्दर के घर आया —और कोठी में कदम रखते ही उसका सामना इन्दु से हुआ जो पौधों के पास खड़ी थी।

"इन्दर घर है ?"

"जी नहीं।" इन्दु ने नजरें ऊपर उठा कर झुका लीं।

"कितनी देर तक आयेंगे ?"

"बस अभी आने वाले ही होंगे। अभी अभी किसी के साथ बाहर गए हैं।"

राजेश जाने के लिए मुड़ ही रहा था कि इन्दु को इन्दर के शब्द याद आ गए—"तो फिर तुम ने राजेश को बिठा दिया होता" ··· इन्दु से रहा न गया और उसने राजेश को बुलाया "आप बैठिए अभी आने वाले ही होंगे क्योंकि चाय के लिए कह गए थे। अभी आने वाले ही होंगे।"

"खैर वह तो आ ही जायेंगे, इन्दु लेकिन आज तो मैं पहले आप से और फिर सुमन से माफी माँगने के लिए आया हूँ।"

"नहीं···तो।"

"जी हाँ। आप उन बातों को भूल जाइए।

"और फिर क्योंकि यह मेरी गलती थी कि इन्दर, आप के पति को मैंने यह सब कुछ बताया—लेकिन अब मैंने उसको कह दिया है कि वह इन झमेलों को छोड़ें, यह बचपने की बातें थीं।"

"नहीं तो ऐसी कोई बात नहीं है। लेकिन आप को ऐसी बातें इन्दर से नहीं करनी चाहिए थीं।"

"यही तो मैं भी पछता रहा हूँ। अभी कुछ ही दिन हुए कि सुमन ने मेरी पत्नी को भी कहा और मुझ से मिलने आयी थीं लेकिन मैं उनको घर पर नहीं मिला।"

"आप बैठ जाइए ऊपर वाले कमरे में नीचे वाले कमरों में तो आज डी० डी० टी० का छड़काव किया है।"

"बैठ जाता हूँ लेकिन इन्दर कितनी देर में आयेगा ?"

"बस अभी आने वाले ही होंगे।"

"राजेश ऊपर छत पर बने कमरे की ओर बढ़ा और इन्दु ने सोचा क्यों न राजेश को चाय ही पिला दी जाये जब तक इन्दर आयेगा और आते हुए यह देखेगा तो वह प्रसन्न भी हो जायेंगे।"

"राजेश अभी ऊपर जाकर पूरी तरह कमरे में पाँव रख भी नहीं पाया था कि इन्दु के हाथ में चाय की ट्रे थी वह भी अन्दर आ गई।"

सुमन के हाथ मे अभी तक टेलीफोन का रिसीवर भूल रहा था तो क्या आज सचमुच इन्दर मुझे इन्दु के पतित होने का पक्का सबूत दे रहा है सुमन के सामने इन्दु का बेगुनाह चेहरा घूम गया जो उसको बार-बार यही कह रहा था "दीदी जल्दी आओ मैं लुट रही हूँ।" और साथ में शोभा के शब्द उसके कानों में रेंगने लगे, "बेटी सुमन—मेरी बेटी इन्दु जो बन्द कली है कहीं

फूल बनने से पहले झुलस न जाये।" सुमन...। यह उसकी अपने दिल की आवाज थी तूफानों से उलझना ही तो जीवन है। दुनिया की हर राह इतनी समतल नहीं जितनी इन्सान समझता है। सुमन के मन उठते हुए ज्वार भाटे में संतलुन आ गया—और उसकी आँखों से अंगारे बरसने लगे।

"सुमन ने टेलीफोन का रीसीवर रख दिया, बाज आये तेरी मुहब्बत से उठा ले पानदान अपना—इतना कहकर अपनी व्यक्तिगत अलमारी की ओर बढ़ी और दूसरे ही क्षण उसकी नाजुक उंगलियों में पिस्तौल अंगड़ाईयाँ ले रहा था। उसने अपने मन से पूछा क्या, "इन्दर आज मुझे इन्दु के पतन का पक्का सबूत देना चाहता है ? क्या वह वही इन्दर है जिस के गीत मेरे बिना आज तक अधूरे थे और अब वह कुछ ही दिनों में इतना बदल गया है ?"

सुमन ने अपनी पिस्तौल भर ली। जरूरत पड़ी तो आज किसी के खून से मुंह नहीं मोड़ूंगी। उसकी नाजुक—उंगलियों से एक गोली नीचे गिर गई। वह इसी गोली को सबसे पहले इस्तेमाल करेगी। आज किसी न किसी की शामत जरूर आई है यह पता नहीं। किस की ? उसके हाथ भी रक्त की तरह लाल और फूल की तरह कोमल थे क्या वह इन्हीं हाथों को आज किसी और के खून से रंग देंगी।

भरे हुए पिस्तौल को साड़ी में दबा कर, खुले बालों को हल्का सा झटका देकर वह गाड़ी की ओर बढ़ी—और दूसरे ही क्षण धूल उड़ाती हुई गाड़ी तीर की सी तेजी से कोठी से बाहर निकल गई फसला चार मील का था इसलिए उस ने एक्सीलेटर खूब दबाया और गाड़ी उड़न-दस्ते की भाँति उड़ी जा रही थी।

सुमन के हाथ कांपने लगे और इसी उधेड़ बुन में गाड़ी अन-

जाने में ही तेज हो गयी।

और ठीक उसी समय राजेश ने दरवाजा बन्द कर दिया ?

"यह क्या कर दिया आपने ?" इन्दु ने शंका से राजेश की ओर देखा।

"अभी पता लग जाता है इन्दु।" ताला बन्द करके राजेश इन्दु की ओर मूड़ा।

"तुम्हें याद होगा कि एक बार रात के दस बजे सुनसान सड़क पर मुलाकात हुई थी और आज फिर इस बन्द अन्धेरे कमरे में। उस दिन तो बच कर निकल गई थी लेकिन आज तुम्हें भगवान भी नहीं बचा सकता है।" राजेश कहता गया और इन्दु क्रोधित मुद्रा में यह सब सुनती रही। क्योंकि ताला बन्द हो चुका था और ताली भी राजेश के हाथों में नहीं थी।

राजेश ने एक ही झटके से इन्दु का बलाउज फाड़ डाला। इन्दु भी अपनी रक्षा के लिए हाथ हिलाती रही लेकिन उस रोगी की तरह जो चारपाई पर पड़ा रहता है और यमराज के दूत उसको उठाने के लिए बेतावी से खड़े रहते हैं।

मुठभेड़ में राजेश की भी कमीज फट गई थी।

राजेश ने एक ठहाका लगाया, "तुम्हारा पति ही तुम्हें अब इस घर में रहने नहीं देगा वह वाहर खड़ा है इन्दु। और अभी पांच सात मिनट में यह दृश्य देखने के लिए आयेगा।" राजेश ने एक भरपूर धक्का इन्दु को दिया ताकि वह सोफे पर गिर पड़े लेकिन इसके बदले में इन्दु ने उसको धरती पर पटक मारा और उसके गले पर पांव रख दिया, "तेरी नापाक हरकत तब पूरी होगी

अगर तू बच सका ?" और इन्दु राजेश के छाती पर चढ़ कर बैठ गई ।

लेकिन नारी फिर भी नारी है वह पुरुष के मुकाबले में शायद कम लड़ना जानती है और फिर इन्दु जैसे नाजनीन भला राजेश से कैसे लड़ सकती थी । लेकिन आज तो उसके इज्जत का सवाल था ।

राजेश ने एक भरभूर हाथ मारा और इन्दु धरती पर चित पड़ गई । राजेश का हाथ उसकी साड़ी में उलझ गया और नारी के शरीर के साथ साड़ी ने भी इस नाजुक मौके पर बेवफाई की । इन्दु वस्त्रहीन खड़ी हाँफ रही थी और उसके सामने राजेश खड़ा कुटिल मुस्करा रहा था ।

इन्दु की दशा उस पंखहीन पक्षी की तरह थी । जो सर्प को अपने ओर आते देख कर उड़ना चाहता है पर उड़ नहीं सकता, उछलता है, और उछल कर कूद पड़ता है और कूद कर गिर पड़ता है और अन्त में पंख फड़फड़ा कर रह जाता है । इन्दु का हृदय ही अन्दर तड़प रहा था उसने तौलिया को कमर में बाँधने की कोशिश की लेकिन सब व्यर्थ ।

राजेश ने इन्दु के हाथ तौलिया खींच लिया "गुलदस्ते को छिपाने की आवश्यकता नहीं है मेरी जान आज हम भी अपना फूल इसी गुलदस्ते में फिट करना चाहते हैं ।"

राजेश भूखी नजरों से पहले इन्दु के अंग प्रत्यंग को देखा रहा और फिर उससे लिपट गया और इन्दु को सोफे पर गिरा दिया ।

सुमन से कार की ब्रेक नहीं लगी और फाटक को कार

का झटका लगते ही वह संभल गयी। इन्दर जो पास ही वृक्ष के नीचे बैठा था उसने सुमन से कहा—"जाओ देख आओ अन्दर क्या हो रहा है ?"

"अभी देखती हूँ" इतना कह कर सुमन सीढ़ियाँ चढ़ने लगी और इन्दर भी उसके पीछे-पीछे आने लगा।

"आप को आने की जरूरत नहीं।" सीढ़ियों में रुक कर सुमन ने कहा। "आप शायद यह दृश्य अपनी आँखों से न देख सकेंगे।" इन्दब वहीं रुक गया और सीढ़ियाँ उतरने लगा।

"हाँ इतना बता दो कि इन्दु राजेश के साथ ही है न ?"

"जी हाँ राजेश के साथ "

इतना कह कर इन्दर सारी सीढ़ियाँ उतर चुका था और सुमन ने सीढ़ियों का दरवाजा भी बन्द कर दिया।

ऊपर चढ़कर बन्द दरवाजा पाकर एक हाथ सुमन ने शीशे की खिड़की पर मारा और शीशे से उसका पंजा कट गया। उसने अन्दर खिड़की का पर्दा हटा कर देखा। उसके मुंह से एक दबी चीख निकल गयी राजेश लगातार अपने काम पूर्ति की कोशिश कर रहा था और इन्दु बिल्कुल वस्त्रहीन।

"पीछे हट जाओ राजेश"—सुमन ने कड़कती आवाज में कहा।

सुमन की आवाज सुनकर इन्दु की जान में जान आ गयी और राजेश का बन्धन ढीला पड़ गया।

"तेरी यह हिम्मत" सुमन ने झट से पिस्टल पर तरजनी हिलाई और गोली राजेश की खोपड़ी में जा लगी वह धड़ाम से

धरती पर चित पड़ गया गोली की आवाज सुन कर वृक्ष के नीचे खड़ा इन्दर तिलमिला गया।

"इन्दु दरवाजा खोलो।"

"चाबी मेरे पास नहीं है। दीदी यह तुमने क्या कर दिया दीदी।" फटी-फटी आँखों से इन्दु ने सुमन की ओर देखा।

सुमन वहीं चौबारे पर खड़ी थी कि उसने इन्दर से कहा— "सरकार चाबी चाहिए ?

इन्दर पागलों की तरह सीढ़ियों के दरवाजे को पीठ रहा था "सुमन यह तुमने क्या कर दिया ?"

"होश में आओ इन्दर ! बहुत हो चुका।" कमरे की चाबी तुम्हारे पास होगी और है भी तुम्हारे पास।

इन्दर ने अपना सिर सीढ़ियों के दरवाजे पर पटक दिया।

"होश में आओ इन्दर। चाबी तल्दी फेंक दो ऊपर।"

"मेरे पास चाबो नहीं सुमन यह तुमने क्या कर दिया ?" फटी उजड़ी आँखों से इन्दर ने सुमन की ओर देखा।

"मैं कहती हूँ होश में आओ अब खामोशी से काम नहीं चलेगा।"

इन्दर के मस्तक से रक्त बहने लगा लेकिन सुमन ने इसकी परवाह नहीं की। यह वही मस्तक था जिस पर सुमन कभी बहुत मुहब्बत से हाथ फेरा करती थी और बिना सुमन के हाथ लगे इस मस्तक को शांति नहीं मिलती थी। लेकिन आज उसी मस्तक को रक्त रंजित देख कर सुमन पिगली नहीं। वह तीव्र गति से खिड़की की ओर मुड़ी।

"इन्दु—जरा राजेश के जेब में चाबी देखना ?"

निष्प्राण वस्त्रहीन इन्दु कमरे के एक कोने में बैठी थी। उसमें इतनी भी शक्ति नहीं थी कि सुमन की बात का जवाब दे सके।

सुमन चिल्लाती रही "इन्दु जल्दी करो समय बहुत कम है और मैंने बहुत सा काम करना है।"

यह सुनकर इन्दु अपनी जगह से उठी और राजेश के जेब में से चाबी निकाल कर, तौलिया लपेट कर, वह सुमन की ओर मुड़ी।

"चाबी के बदले तुम्हें पिस्तौल देना पड़ेगा दीदी।"

"दीदी की बच्ची, मैं कहती हूँ जल्दी करो।" और दूसरे ही क्षण चाबी सुमन के हाथ में थी।

'ओह'—सुमन ने आश्चर्यचकित होकर कहा "मैंने चाबी क्या करनी है। दरवाजा तो अन्दर से बन्द है। इन्दु जल्दी करो दरवाजा खोलो।"

कांपती उंगलियों से इन्दु ने दरवाजा खोला और सुमन अन्दर आ गयी।

वह इन्दु की ओर देखे बिना ही राजेश की सिसकती लाश पर खड़ी हो गयी जो अभी तक मरा नहीं था सिसक रहा था।

"राजेश – मैंने तुमसे मिलने की कोशिश की लेकिन तुम न मिल सके। पिछले एक सप्ताह से मैंने मिलने की बहुत कोशिश की लेकिन शायद तुम मुझसे मिलना नहीं चाहते थे।"

सिसकती लाश पर खड़े होकर सुमन ने कहा।

"बचपन की दोस्त को जवानी के दिनों में तुम ने तबाह कर

दिया। मैं इतना कहना चाहती हूँ कि तुमने दोस्ती के पीछे छिप कर वहुत बड़ा पाप किया है लेकिन मैंने उस पाप को पनपने से पहले ही जला डाला।"

सुमन ने उड़ती दृष्टि से इन्दु की ओर देखा जो शायद वेहोश सी कालीन पर लुढ़क गयी थी। सुमन ने घृणा से राजेश के सिर पर ठोकर मारी। और उसने एक गोली राजेश के छाती में दाग दी। गोली की आवाज सुनकर इन्दु चौंक पड़ी।

"दीदी—।" इससे आगे वह कुछ न कह सकी।

'इन्दु—तुमने एक दिन राजेश को **'मरण मोया रण्डी चढ़डिया'** कहा था और आज मुझे प्रसन्नता है। मेरा दिल शांत है कि मैंने तेरे कहे वचनों को पूरा किया।"

"दीदी—" इन्दु वेहोशी की हालत में बोली।

लेकिन सुमन ने अनसुनी करके कमरे से बाहर निकल आयी और इन्दर को कहने लगी।

"कहिए प्राण नाथ इन्दर देव जी।" इन्दु को अब अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना है कि नहीं यदि नहीं तो उसको भी राजेश के साथ अभी सदा-सदा के सुला देती हूँ मेरे घर से क्या जाता है केवल बस हल्की सी तर्जनी ही तो हिलानी है क्योंकि यह मुझसे वरदाश्त नहीं हो सकेगा कि मुझे सजा होने के बाद इन्दु विचारी तुम्हारा खून पेट में लेकर माँ के घर बैठी रहे और जीवन भर आँसू वहाती रहे और उसको जीवन पर्यन्त दर-दर की ठोकरें खानी पड़ें।"

इन्दर जो अब तक रक्त रंजित आँखों से सुमन की ओर देख रहा बोला—"बस एक एहसान और कर दो सुमन मुझे भी गोली से

उड़ा दो ।"

"अरे वाह" सुमन पागलों की तरह बोली । "मुझे मेरी बात का जवाब चाहिए ?" सुमन ने दृढ़ता से फिर कहा. "मुझे जवाब दो समय बहुत कम है ?"

"जी—"इन्दर थूक निगल कर रह गया ।

"मैं कहती हूँ जवाब दो मुझे ?"

"लेकिन मुझे ऊपर तो आने दो ?"

"नहीं । तुम ऊपर नहीं आ सकते । जवाब दो जल्दी । लेकिन इतना जरूर ख्याल रखना कि जवाब दिल से होना चाहिए जबान से नहीं ।"

"सुमन ! मैं पहले भी बहुत गलती कर बैठा अब मुझे और लज्जित न करो । जैसे तुम कहोगी वैसा ही होगा ।"

"भला इसमें मेरी मरजी की क्या बात है ? मैं पूछती हूँ इन्दु को पत्नी के रूप में स्वीकार करोगे कि नहीं ?"

लेकिन इन्दर ने कोई उत्तर न दिया ।"

"तो मैं इस खामोशी को हाँ समझूं या न ?"

"सुमी मुझे क्षमा कर दो सुमी ।" इन्दर ने दोनों हाथ आगे फैला दिए । "मैं सब कुछ स्वीकार करने को तैयार हूँ सूमी ।"

सुमन चुप हो गयी थी । उसमें इतना भी साहस शेष नहीं रह गया था आखिर वह थी तो नारी ही ? पत्थर की मूर्ति बनी मौन खड़ी रही और उमड़ती हुई भीड़ को देखने लगी

"सुमन।" थरथराती हुई आवाज में इन्दर ने पुकारा जिसके मस्तक का बहता खून उसके आँसुओं से मिल गया था और उत्तर में सुमन ने पथराई आँखों से इन्दर की ओर देखा।

"मैंने तुम्हें समझने में बहुत गलती की।"

रुक कर सुमन ने फिर कहा। "औरत एक खुली हुई पुस्तक है जो इसको समझ लेता है वह खिड़की है और जो इसे समझने की असफल चेष्ठा करके मुख मोड़ लेता है वह अनाड़ी है।"

"आपको भगवान ने पुरुष बनाया है और आप भी उन पुरुषों में से निकले। मुझे सच्ची बात कहलवाने पर विवश न करो क्या तुम ने राजेश को यहाँ बुलाया था?"

सुमन के हाथ के लगे वृक्ष सुमन की हालत को देखकर सिर पटक पटक कर कह रहे थे कहाँ चली हो सुमन···जेल।

"सुमन।" इतना कह कर इन्दर को उड़न दस्ते की चीख सुनाई दी।

"तुम आज इस कोठी से हाथों में हथकड़ियाँ पहन कर जा रही हो।" यह फूल यह पौधे। इन्दर ने उमड़ी आँखों से सुमन को हथकड़ियों में बन्द देखा।

"सुहाग की चूड़ियाँ इस कोठी में पहन कर आयी थी। लेकिन आज उसके बदले में यह हथकड़ियाँ।"

इसके पश्चात पुलिस ने कार्यवाही शुरू कर दी।

सेठ बिहारी लाल की कोठी पर वकीलों का जमगठा लगा हुआ था और उसने रुपया पानी की तरह बहा कर दूर दूर से बड़े

वकीलों को बुलवाया ।

इन्दर भी उसी कोठी में बिस्तर पर लेटा पड़ा था और बम्बई से उसका बड़ा भाई और सब रिश्तेदार आ गये थे । सेठ बिहारी लाल ने इन्दु के सिर पर हाथ रख कर कहा । "बेटी—जो कुछ होना था वह हो गया लेकिन अब यह हर समय आंसू क्यों ?" और फिर वह इन्दर से सम्बोधित हुआ "बेटा इसमें न तुम्हारी गलती है और न सुमन की बुरा समय आना था और वह आ भी गया अब हमने हौसला से काम लेना है, रोने धोने से काम नहीं चलेगा ।"

सेठ बिहारी लाल ने जमाना देखा हुआ था और वह इस नाजुक मौके पर सब को सांत्वना दे रहा था हांलाकि सुमन की याद में उसके अपने जिगर पर आरे चल रहे थे । वह शोभा को भी अपने घर ले आया था ।

डाक्टर सुमन के हाथ पर पट्टी बाँध रहा था और उसने कहा । "आप ने एक गलती की कि आपको पिस्तौल इन्दु को दे देना चाहिए था ।"

"डाक्टर साहिब मुझे इस बात का डर था कि कहीं इन्दु अपने ऊपर ही गोली न चला दे ।"

"लेकिन पिस्तौल से गोलियाँ निकाल कर भी तो दे सकती थी ।"

"औरत की इतनी बुद्धि कहां डाक्टर साहब । मैंने आज तक किसी चिंटी को नहीं मारा था लेकिन यह प्रथम अवसर था कि मेरे हाथों से खून हो गया ।"

"खून हो गया या तुम ने जान बूझ कर दिया ?" डाक्टर ने मुस्कुरा कर पूछा ।

"आपको ऐसी बातें मुझ से नहीं पूछनी चाहिए ?"

"ओह ! सारी क्षमा चाहता हूं ।"

"नहीं डाक्टर साहिब आप तो नाराज हो गए ।"

"नहीं तो ? लेकिन फिर भी मुझे आप से ऐसे प्रश्न नहीं करने चाहिए ।"

"डाक्टर साहिब आप के प्रश्नों का उत्तर देने में मुझे आनन्द आ रहा है सचमुच आप काम के प्रश्न पूछ रहे हैं ।"

"अच्छा तो बताइए कि आपने दरवाजा क्यों खुलवाया ।"

"उस समय मुझे होश नहीं रहा डाक्टर साहिब । अगर मैं दरवाजा न खुलवा कर और खाली पिस्तौल भी इन्दु के हाथ में दे देती तो भी उस बेचारी को सजा तो होती ही और वह सजा केवल इन्दु अकेली की न होती बल्कि उसके गर्भ में पलने वाले बच्चे को भी होती ।" सुमन कहती गयी "यह बहुत ही अच्छा हुआ कि इन्दु तो सजा से बच गयी है ।" डाक्टर ने सुमन के हाथ पर पट्टी बांध दी और वह जाने लगा ।

सुमन ने एक बार हाथ पर बंधी पट्टी की ओर और फिर जाते हुए डाक्टर की ओर—और फिर उसके आंखों के सामने इन्दर के माथे से बहते हुए लहू का दृश्य घूमने लगा और वह वहीं पर बैठ गयी ।

सुमन ने अदालत के कठहरे पर गिरे हुए आँसू को देखा और फिर ज़ज के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी। जज के दिमाग में सुमन के यह शब्द बड़ी तेजी से चक्कर लगा रहे थे मैं आपके हर फैसले का स्वागत कहती हूं।"

सरकारी वकील ने सुमन से पूछा।

"तुम ने जान बूझ कर खून किया है तुम खूनी हो।"

"अदालत को मुझ से बार बार यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मैंने खून नहीं किया है। मैंने खून किया है और जानबूझ कर किया है।" सुमन की मधुर आवाज एक बार फिर अदालत में लहराई।

"एक पवित्र अतित के दामन को बचाने के लिए मैंने खून किया है। मैं ही नहीं बल्कि प्रत्येक स्त्री ऐसा ही करेगी। समय आने दो। स्त्री अगर सृष्टि को जन्म दे सकती है तो वह प्राण लेना भी जानती है और प्राण ले भी सकती है।"

"तुम ने कानून को अपने हाथों में लिया है जब कि राजेश अपनी नापाक हरकत में कामयाब भी नहीं हुआ। और इन्दु के शरीर पर कोई खरोंच नहीं लगी।" सरकारी वकील ने सुमन से प्रश्न किया।

वकील साहब। औरत की इज्जत वह नहीं जो आप पुरुष होकर समझ रहे हैं। गैरत मन्द आदमी के लिए इतना ही काफी होता है कि यदि कोई उस के माँ बहन की ओर देखे और उसके

सिर के आंचल को अपने हाथों से सरका दे तो औरत की इज्जत उस वक्त लुटी हुई समझी जाती है यह बात और है और अपनी अपनी गैरत की पहुँच है कि वह इसका बदला ले या न ले।

एकाएक सुमन ने कड़क कर कहा। "मैं अदालत से पूछती और अदालत में बैठे हुए आदमियों से पूछती हूं कि वह कौन सा पुरुष हो सकता है जिस की औरत किसी गैर पुरुष के साथ जब कि वह पुरुष जबरदस्ती करने के लिए आया हो। अगर वह दस पन्द्रह मिनट तक एक कमरे में बन्द रहती है तो उस औरत को कौन अपनी बीवी के रूप में स्वीकर करने के लिए तैयार है है कोई ऐसा पुरुष। जवाब दो मुझे वकील साहब।"

"आर्डर आर्डर।" जब कि आवाज में न्यायालय में गूंजी। "यह अदालत है और यहाँ ओछी और अशिष्ट बातें आपका साथ नहीं दे सकतीं।"

"मैं कब अपनी रक्षा या सफाई के लिए ओछी और अशिष्ट बातों का सहारा ले रही हूं। मुकदमा साफ है इसको ज्यादा लम्बा करने की बजाये इसका फैसला किया जाए।"

इसके बाद अदालत की कार्यवाई शुरू हुई और जज की कलम लिखने लगी। सुमन को राजेश के खून के अपराध में चौदह साल की सजा दी जाती है।"

कठहरे में खड़ी सुमन पर पहली नजर इन्दर की पड़ी और भीगी पलकों से सुमन ने कहा। "मिस्टर इन्दर देव। मुझे सजा

का दु:ख तो नहीं है लेकिन मैंने आपके एक परम श्रेष्ट मित्र की जान ली है आशा है आप मेरे इस अपराध को क्षमा करेंगे।" और उत्तर में इन्दर ने भीगी पलकों से सुमन की ओर देखा। "सुमी।"

× × ×

आज कल और कल परसों में परिवितत होते गए और चौदह साल की सजा के जब पाँच साल, जो रह गये थे वे सुमन के अच्छे काम की वजह से माफ कर दिए गए थे आज सुमन ने जेल से वापस आना था। जेलर ने सुमन को कहा। "हमें बहुत अफसोस है कि हम एक अच्छे कारिन्दे को खो रहे हैं?"

"जरूरत पड़ी तो मैं फिर वापस आ जाऊँगी।" मुस्कुरा कर सुमन ने कहा।

बाहर सेठ बिहारी लाल और उसके नातेदार रिश्तेदारों का जमगठा लगा हुआ था।

एक नयी गाड़ी फूलों से लदी हुई सुमन की प्रतीक्षा में खड़ी थी ज्योंही वह बाहर निकली उसकी दृष्टि इन्दु पर पड़ी जो एक कोने में दुबकी हुई खड़ी थी। सबसे निवृत होकर वह इन्दु से

लिपट गयी ।

इन्दु के नीर वह चले "दीदी ।"

"हाँ मैं वही सुमन हूं तेरी दीदी । लेकिन मैं जेल में रहकर भी कमजोर नहीं हुई और तू इतनी दुबली पतली हो गयी है ।"

"दीदी ।" इन्दु सुबक पड़ी आज तक मैं·· जब से तेरे से बिछुड़ी हूं । इन्दु सुबक पड़ी···।

इन्दर ने आगे बढ़ कर कहा । यह हमारी शिकायत काहे को लगा रही हो इन्दु । सुमन यह इन्दु बिलकुल झूठ कह रही है। यह देखो अपने बच्चे तो सम्भालो ।"

"इनका नाम ।"

"यह है रवि । और दूसरी शशि । और अब जो···।" कहते कहते इन्दर रुक गया।

सुमन ने इन्दु के पेट की ओर देखा । "बड़ा उत्पादन किया है आप लोगों ने ।"

डैडी यह कौन है ?"

"यह तुम्हारी मम्मी हैं ?" इन्दर ने मुस्कुरा रवि शशि की ओर देखा और सुमन मुस्कुरा पड़ी ।

"डैडी हमारी मम्मी तो यह है।" रवि शशि दोनों इन्दु से लिपटने लगे।

"नहीं बेटा यह तुम्हारी नौकरानी है। यह सुन कर मृदु मुसकान न केवल इन्दु और सुमन के गालों पर फैल गयी बल्कि शोभा की झुरियाँ भी मुस्कुरा पड़ीं।

—:०:—